सीतावनवास।

पण्डित देवदत्त तेवारीने
बनाया।

कलिकाता॥

श्रीयुतभुवनचन्द्रवसाकसंस्थापित
संवादज्ञानरत्नाकरयन्त्रे
तद्द्वारैव
१८३४संवत्सरे मुद्रितञ्च प्रकाशितञ्च
निमतला घाट. ष्ट्रीट ८ संख्यक भवन

विज्ञापनम् ।

...श्रीयुतबाबूभुवनचन्द्रवसाक सं...
...कराख्ययन्त्रे तद्द्वारैवदेवनागर...
...मुद्रितपुस्तक विवरणम् ।
...तलाघाटष्ट्रीट ८ संख्यक भवन...

संस्कृतम् ।

वैद्यशास्त्र ।

मुक्तावलि	।।)
परिभाषा प्रदीप	।।)
सटीक द्रव्यगुण	१)
चक्रदत्त	२)
शार्ङ्गधर	१)
चरक संहिता १म खण्ड	
हइते ८म खण्ड पर्य्यन्त	५)
वाग्भट्ट सूत्रस्थान	१)
निदान सटीक	२)
भैषज्यरत्नावलि	
सम्पूर्ण	५)
सुश्रुत सम्पूर्ण	२।।)
प्रयोगचिन्तामणि १ खण्ड	।।)
लोलिम्बराज	१)

सांख्य ।

...कौमुदी	।।)

ज्योतिष ।

सूर्य्यसिद्धान्त

न्याय ।

खण्डनखण्डखाद्य
शब्दशक्तिप्रकाशिका
तत्त्वचिन्तामणि
भाषापरिच्छेद
कुसुमाञ्जलि
तत्त्वोपस्कार

छन्दशास्त्र ।

छन्दमञ्जरी
पिङ्गल

अलङ्कार

साहित्यदर्पण
चन्द्रालोक

सीतावनवास ।

बरैली की पाठशाला के पण्डित
देवदत्त तिवारीने बनाया ।

कलकत्ता ।

श्रीयुत भुवनचन्द्रबसाक की संस्थापित संवाद
ज्ञानरत्नाकर नाम छापेखाने में उमने
छापा और प्रकाशित किया ।

सन १८७८ ई० ।

निमतला घाट स्ट्रीट ८ संख्यक भवन ।

निवेदनम् ।

यह सीता वनवास नाम ग्रन्थ प्रथम द्वितीय परिच्छेदतक भवभूतिके बनाये उत्तररामचरित नाटकके प्रथम अङ्क और अवशिष्ट कालिदासके बनाये रघुवंश और बाल्मीकीय रामायणके उत्तरकाण्डके अभिप्रायोंसे संग्रह कर बनाया गया है, और यह करुणारस प्रधान है, इसमें राजा रामचन्द्र और राणी जानकीजी के परम सुन्दर स्नेह, राज्यगुण प्रजावर्गपर अति प्रीति, और राजनीतिके गुणोंसे परिपूर्ण तथा मनोहर है, और इसमें स्त्री पुरुषका विशेष धर्म्म, पतिव्रताका धर्म्म, प्रजापालन कीर्त्ति आदि बड़े विवेकसे वर्णन किया गया है, और मैंने इनको अति रमणीय और ललित जानकर अपने पश्चिमोत्तर देशके लड़के और लड़कियोंके सुखसे पढ़नेके अर्थ अति हितकारी और शिक्षा आदिसे लाभदायक समझकर बालप्रयोजक सुगम हिन्दीभाषामें अनुवादकर रचा है, क्योंकि इससे वे जानेंगी कि हमारे देशके प्राचीनोंका क्या धर्म्म था, स्त्री पुरुषमें कैसी २ प्रीति थी, और कैसे २ न्यायसे रहते थे, और सीतारामके चरितका पढ़ना तथा पढ़ाना हम लोग बड़ा पुण्य समझते हैं, इस कारणसे इसका नाम सुनते ही लड़के और लड़कियां बड़े आदर से और मन लगा कर पढ़ेंगी, और पहिले यह ग्रन्थ

बङ्गालावोमें बड़े प्रसिद्ध विद्वान ईश्वरचन्द्र विद्यासागरने संग्रहकर उसी भाषामें १२ वार छपवाया हैं, इससे मुझे भी बड़ी सहायता मिली है, और इसके प्रचार होनेसे इस देशवासी लड़के और लड़कियोंको बडा लाभ होगा, और इसके पढ़नेसे सुनजनोंके अन्तः-करणमें प्रीत होगी तो मैं अपने परिश्रमको सफल जानूङ्गा ॥

२८ दिशम्बर — पण्डित देवदत्त तिवारी
ई॰ १८७७ — हेडपण्डित बरैली कालेज ॥

१ परिच्छेद पहिला विमल, सीताके वनवास।
देवदत्त वर्णन कियो, विश्वसुखद मुदवास ॥
२ परिच्छेद दूजा सुयश, जगत जननीके मान्य।
नित उठि जो जन भजते हैं, देत रम्य धन धान्य ॥
३ परिच्छेद तीजा रतन अखिल मातुमे जान।
प्रतिदिन जो नर पढ़त. हैं चारि फल चान ॥

श्रीगणेशायनमः।

सीतावनवास।

प्रथम परिच्छेद।

राजा रामचन्द्र राजसिंहासनपर बैठकर बड़े ऐश्वर्यसे पुत्रके समान प्रजाका पालन करने लगे, और उनके प्रजा पालनके गुणों से थोड़े ही कालमें सम्पूर्ण-कोशलदेशका राज सर्वत सर्वप्रकार सुख और समृद्धि-से परिपूर्ण हुआ, और उनके अधिकारके समय प्रजा सब कामों में ऐसी अधिकवृद्धि हुई कि वैसी वृद्धि पृथिवीमण्डल में किसी राजाके प्रजापालनके समय-में सुख और समृद्धिकी नहीं हुई, वे प्रतिदिन यथाव-काश मन्त्रिवर्गसहित राजके कार्य्य में एकचित्त प्रवृत्त हुआ करते और शेष काल में भरत आदि तीनों भाईयों और रानी जानकी जी सहित सुखपूर्व्वक रहते।

किसी काल में रानी जानकीजीके गर्भके लक्षण जान पड़ने लगे, जिनके देखने से राजा रामचन्द्र और उनकी माता कौशल्या आदिको परम आनन्द हुआ और सब राजभवन में उत्सव होने लगे तथा पुरवासी

सम्पूर्ण लोग शीघ्र राजकुमारका दर्शन करेंगे इस अधिक आनन्दसे अपने अपने घरों में उत्सव करने लगे।

कितने एक दिनों में महाऋषि ऋष्यशृङ्गने किसी यज्ञका आरम्भ करके रामचन्द्रको सब परिवार सहित अपने आश्रमसे आनेके निमित्त निमन्त्रण भेजा था, उस समय जानकीजीके गर्भका पूर्ण दिन प्राप्त हुआ था इस कारण राजा रामचन्द्र और लक्ष्मणजी उस निमन्त्रणमें नहीं गये, केवल वृद्ध महारानियां वशिष्ठ और अरुन्धतीजी आदि सब मिलकर जामाताके घर गईं, और महारानियोंने पूर्णगर्भ जानकीको घर में रहने दिया यह तो अच्छा नहीं किया केवल जंवाईके नेवताके शिष्टाचारसे यज्ञके दर्शनकरने को इच्छा-पूर्वक सब गईं।

कितने एक दिनोंके पीछे राजा जनक अपनी कन्या और जामाताके देखनेके हेतु अयोध्यापुरीमें आये और कौशल्या आदि जो ऋष्यशृङ्गके निमन्त्रणमें गईंथीं उनके आनेके पहिले जनकपुर अर्थात् अपनी राजधानी-को लौटगये।

एकतो पहिले सासु जनोंका विरहदूसरा पिताका वियोग इन दोनों विरहोंसे रानी जानकी बड़े शोकसे व्याकुल हुई, और पर्णगर्भकी अवस्थामें शोकमोहसे

दुखींथी, इसकारण अनिष्ट होनेके डरसे राजा रामचन्द्र सब कामोंको छोड़कर रानीजीके निकट ही रहा करतेथे।

एकदिन रामचन्द्र जानकीजीके समीप बैठेथे कि उसी समय द्वारपाल आया और विनतीसे निवेदन किया कि महाराज! शृङ्गी ऋषिके यहां से अष्टावक्रजी समाचार लेकर आये हैं, इसको सुनते हीं रामचन्द्र और जानकीजी व्यग्र होकर बोल उठे कि उन्हैं शीघ्र लाओ, उसी समय द्वारपाल बाहर जाकर बड़े आदरसे अष्टावक्रको लेकर फिर आया और सन्मुख उपस्थित किया।

अष्टावक्रजी दोनों हाथ उठाकर बोलेकि राजा और रानी चिरञ्जीव रहैं, ऐसा आशीर्वाद दिया, रामचन्द्र और जानकीजीने प्रणाम कर बैठनेके लिये आसन दिया, अष्टावक्र सुखपूर्व्वक बैठे तब रामचन्द्रने पूछा कि भगवान् शृङ्गी ऋषिका कुशल क्षेम है? और उनका यज्ञ निर्विघ्न है? सीताने पूछा कि हमारे बड़े लोग और आर्य्या शान्ता आदि सब प्रसन्न हैं,? और हम सबका स्मरण करते हैं? कि एकही बार भूल गये?।

अष्टावक्रने सबकी कुशलवार्त्ता विज्ञापनकी और जानकीजीको बड़ाईपूर्व्वक कहाकि हे देवीजी! भगवान् वशिष्ठजीने आपसे यह कहा है कि भगवती विश्वम्भरा

पृथिवी देवीने आपको उत्पन्न किया साक्षात् प्रजापतिके समान राजा जनक आपके पिता हैं, और तुम सर्व्व-प्रधान राजकुलकी बधू हो इस कारण हे सौभाग्यमती! और आशिष आपको क्या देवें अहोरात्र प्रार्थना करते हैं कि केवल वीरपुत्रोंको उत्पन्न करो।

सीताजीने इसको सुनकर लज्जासे कुछ सङ्कोच पाया, राजा रामचन्द्र प्रसन्नतासे बोले कि भगवान् वशिष्ठदेव जब इस प्रकार कहते हैं तो हमारा मनोरथ अवश्य परिपूर्ण होगा, परन्तु अष्टावक्रने रामचन्द्रसे सम्बोधनपूर्व्वक कहा कि महाराज! भगवती अरुन्धती देवी वृद्धमहारानीलोग और कल्याणी शान्ताजीने बारम्बार यह कहा है कि सीतादेवी जब जब किसी वस्तुका अभिलाष करें तब तब वहवस्तु अवश्य ला देना चाहिये, यह सुनकर रामचन्द्र बोले कि उन पूज्यलोगों-को मेरा प्रणाम कहना और सीतादेवी जब कभी किसी वस्तुका अभिलाष करती हैं वहवस्तु उसी समय लायी जाती है हमको इस विषयमें कुछभी आलस नहीं है।

इस के उपरान्त अष्टावक्रजी बोले कि हे देवी जानकीजी! भगवान् शृङ्गी ऋषिजीने आदरसे और सत्कारपूर्व्वक आपको कहा है कि हे वत्से! तुम पूर्णगर्भ-से हो इस कारण तुमको यहां नहीं लाये और इसी

कारण तुम हम सबपर प्रसन्न रहो, रामचन्द्र और लक्ष्मण कोभी तुम्हारे चित्तके विनोदके अर्थ वहांही रख दिया है, और आरम्भ किया हुआ यह यज्ञ सम्पूर्ण होने पर अयोध्यामें आकर तुम्हारी गोदा नव-कुमार सुशोभित देखेंगे।

रामचन्द्रने इसको सुनकर सीताजीकी और प्रसन्नमुख होकर अष्टावक्रसे पूछा कि भगवान वशिष्ठ देवने मुझको क्या आज्ञाकी है, अष्टावक्र बोले कि वशिष्ठदेवजीने आपको यह कहा है कि हे वत्स! जामाताके यज्ञ में हम सब रुके हैं, और हम सबको कुछदिन यहां रहना होगा तुमती बालक हो थोड़े दिनोंसे राज कार्य्यमें प्रतिष्ठित भये हो प्रजाके प्रसन्न-तारूप कार्य्यमें सर्व्वदा निरन्तर एकचित्त रहना चाहिये, क्योंकि प्रजाका पालन करना यही रघुवंशियों-का परमनिर्म्मल धन है। रामचन्द्रने कहा कि भगवान वशिष्ठजीकी आज्ञासे मैं अनुगृहीत हुआ हूं और उनकी आज्ञा वा उपदेश मुझको शिरसे मान्य है मेरा प्रणाम उनके चरणकमलमें आप कह कर कहियेगाकि प्रजालोगोंकी सब प्रसन्नताके अर्थ सुख दया स्नेह और प्राणप्रिया जानकी आदिको छोड़ते मुझको कुछभी दुख नहीं है, इससे आप सब प्रसन्न रहैं और मैं प्रजा-पालनके कार्य्यमे कुछभी आलस्य नहीं रखता हूं

सीता इसको सुनकर अतिहर्षसे बोलींकि हे आर्य्य-पुत्र! इसी लिये राघवकुलधुरन्धर आप कहलाते हैं।

इसके अनन्तर राजा रामचन्द्रने द्वारपालको आज्ञा-दीकि अष्टावक्रजीको विश्रामस्थानको ले जाओ? तब अष्टावक्र महाराजको आशीर्वाद देकर चले।

राम और जानकी फिर परस्पर कथावार्त्ता करने लगींकि, इसी समय लक्ष्मणजी आकर बोले कि, हे आर्य्य! मैने एकचित्रकारसे आपके चरित्र लिखनेको कहाथा वह मेरी आज्ञाके अनुसार यह चित्र लिखकर लाया है इसे आर्य्य देखें, तब राम बोले वत्स! जब देवीका चित्त खिन्न होताहै तब तू उनका प्रसन्नता करनेका बल अच्छा जानता है इस कारण रानीजीकी प्रसन्नता करनेको तू लाया, परन्तु मैं पूछता हूं कि यह चित्र कहांतक लिखा गया है, लक्ष्मण बोले रानीजीकी जहां तक अग्नि से शुद्धि हुई है।

राजा रामचन्द्र इसके सुननेसे अत्यन्त दुखी होकर बोले कि वत्स! तुम हमारे सन्मुख फिर वह बात न कहो क्योंकि वह बात सुनकर अथवा स्मरणकर हम अधिक कुण्ठित और लज्जित होते हैं, क्या पश्चात्तापकी बात है कि जिसके जन्म लेनेसे जगत् पवित्र हुआथा और अब अपवित्रताके कारण उसीको अग्निआदि-से पवित्र करना ही पड़ा, हा लोककी प्रसन्नताकरनी-

क्या बड़ा दुष्कृत्रत है, सीताने कहा प्राणनाथ! वह सवकथा स्मरणकर अकारण आप दुखी क्यों होते हैं, आपने तो उस समय अच्छे विवेचनका कर्म ही किया था और जो आप तैसा कर्म न करते तो बहुत कालसे निर्मलरघुकुलमें कलङ्कका स्पर्श हो जाता, इसी प्रकार हमाराभी अपवाद मोचन न होता, सीताकी बात सुनकर रामचन्द्रने बड़ी ठण्डी सांस लेकर कहा कि हे प्रिये! अब उस कथा का कुछ काम नहीं है, आओ इस चित्रको अब देखें।

सबलोग चित्र देखने में प्रवृत्त हुये, सीताने कितनी देर तक इधर उधर देखकर पूछा नाथ! इस चित्र के ऊपर वे सब जो लिखे हैं सो क्या है? राम बोले कि प्रिये! वे॰व मन्त्रकेसहित जृम्भकास्त्र हैं ब्रह्मा आदि-प्राचीन गुरुओंने वेदकी रक्षाके निमित्त दीर्घकाल तक बड़ा तप कर इन तपोमय और तेजःपुञ्ज परम अस्त्रों को पाया, गुरुओंकी परम्परासे पीछे भगवान कृशाश्व-ऋषिके निकट आये, भगवान कृशाश्वमुनिने राज ऋषि बड़े तपस्वी विश्वामित्र को दिये, बड़े दयालु राजऋषि विश्वामित्रने विशेषकृपाकर ताड़काके बधकरनेके समय वेसब शस्त्र हमको दिये थे, तब से लेकर अबतक हमारे ही अधिकारमें वेसब शस्त्र हैं और अब ये दिव्य अस्त्र तुम्हारे पुत्रोंको आश्रय करेंगे।

तब लक्ष्मण बोले कि महारानीजी अब यह जनकपुरका समाचार है इस को देखैं, सीताजीने उसे देखकर और अत्यन्त हर्षित होकर कहा कि ठीक है जैसा आर्य्यपुत्र हरधनुषको उठाकर तोड़नेको उद्यत हुये हैं, और हमारे पिता आश्चर्य्ययुत होकर एकटक आर्य्यपुत्रको देखरहे हैं, अहा हा क्या चमत्कृत चित्र किया है और इधर विवाहकालकी सभा इसमें आप चारो भाइयोंने तत्कालोचित वस्त्र और आभूषणों से अलङ्कृत होकर कैसी शोभा पाई है और चित्र देखकर यह बोध होता है कि जैसा उसी देश में और उसी कालमें भी विद्यमान थे, यह सब सुनकर पूर्व्ववृत्तान्तके स्मरण होनेसे रामचन्द्रने कहा हे प्यारी! आपने यथार्थ कहा जब महर्षि सतानन्दने तुम्हारा कमनीय और कोमल करकमल हमको समर्पण कियाथा यह जैसा वही समय वर्त्तमान हैं।

चित्रपटके स्थलान्तरमें उङ्गुलीसे दिखलाकर लक्ष्मणने कहा कि यह आर्य्या, यह आर्य्या माण्डवी, और यह वधू श्रुतकीर्त्ति है, और फिर लज्जावश होकर उर्म्मिलाको नहीं दिखलाया, तब सीतादेवीने यह समझकर और विनोदके निमित्त हंसकर उर्म्मिलाकी ओर उङ्गुली से दिखलाकर लक्ष्मणजी से पूछा कि वत्स! इधर यह कौन लिखी गई है? लक्ष्मणने कुछ उत्तर नहीं

दिया और थोड़ा हंसकर कहा कि महारानीजी देखें२ ? शिवधनुषके तोड़नेकी बातके सुनने से क्रोधमें अधीर होकर चत्रियकुलके अन्तकारी भगवान भृगुनन्दन हमारे अयोध्या जानेके मार्गको रोककर खड़े भये, हैं अब इधर देखें कि त्रिभुवनविजयी आर्य्यने उनके गर्व्वको दूरकरनेके लिये अपने धनुषको चढ़ायाथा, राम अपनी अति प्रशंसाकी बातको सुनकर अधिकतरलज्जित हुआ करतेथे, इस कारण बोले कि वत्स लक्ष्मण ! इस चित्रमें भिन्न२ दर्शनीयपदार्थोंके रहने परभी बारम्बार वही क्यो दिखलाते हो, सीताने रामका वाक्यको सुनकर और आह्लादित होकर कहा कि नाथ! जो आप ऐसे प्रशंसनीय गुण न होते तो संसारके लोग सब एकमत होकर आपकी प्रशंसा क्यों करते।

इसके पीछे अयोध्यामें प्रवेशहोनेके समय चित्र को देखकर रामके अश्रुपूर्णनेत्र होते गदगद बचनोंसे कहने लगे कि हमारे विवाहहोनेके अनन्तर उत्सवसे दिन बीतेथे और हमारे पिताको कैसा अधिक आह्लाद हुआथा तथा माता ओंकोभी अभिनववधूओंके मिलनेसे कैसा हर्षहुआया कि सर्व्वदा वधूओंके निमित्त कैसी ममता और यत्न दिखलाती थीं और राजभवनमें निरन्तर आह्लादमय और उत्सवसे पूर्ण हो रहे थे, वेसब आह्लाद और

उसवके दिनवी गये, लक्ष्मण कहने लगे कि हे आर्य्य! यह मन्थरा है रामने मन्थराका नाम सुनतेही अन्तः-करणमें विरक्त होकर कुछ उत्तर न दिया और और देखकर कहा कि प्रिये! देखो देखो? यह शृंगवेर-नगरमे जो तापसतरुके नीचे परमबन्धु निषादपति-से हमसबका समागम हुआथा वह कैसा सुन्दर चित्र लिखा गया हैं।

सीताने देखकर और हर्षसे कहा कि हे नाथ! इसके अनन्तर जटाबन्धन और वल्कलधारणके वृत्तान्त को देखिये तब लक्ष्मण अप्रसन्न होकर कहने लगे कि इच्वाकुके वंशके राजालोग वृद्ध अवस्थामें पुत्रोंके हाथ राजलक्ष्मीको सौंपकर जिस पुण्य वनवास को करतेथे, परन्तु आर्य्यने उस अति कठिनपुण्यवनवास-को बाल्यावस्थामें आश्रय कियाथा, इसके अनन्तर राजा को रामसे सम्बोधन पूर्व्वक कहा कि, महर्षि भरद्वाजने हमलोगोंको चित्रकूट जानेका मार्ग वतलाकर और इसकी वात कहकर आपसे कहा कि यही कालिन्दी-के तटपर श्याम नाम वटवृक्ष हैं।

तब सीताने कहा, हे प्राणनाथ! आपको इस प्रदेश की कथाका स्मरण होता है? कि नही? इस पर रामने कहा अये प्यारी! क्या मैं इसको भूलताभी हूं? देखो इसी स्थानमें तुमने पथके श्रमसे क्लान्त और अधीर

होकर हमारी छाती में अपना शिर रखकर निद्रा पाईथी ।

सीताने दूसरी ओर उङ्गलिसे दिखलाकर कहा कि देखो २ ? यह हमारा दक्षिणदिशाका प्रवेशकरना क्या अच्छा लिखा गया है, और इसी स्थानमें प्रचण्डसूर्य्य के तेजसे खिन्न होनेके कारण आपके हाथसे धारण हुआ, तालके छाता लगानेसे मैंने अपना आतप निवारण कियाथा, रामने कहा प्रिये! देखव पर्व्वत और नदियों के निकटवर्त्ती तपोवन हैं, इसमें गृहस्थगण वाणप्रस्थधर्म्मके अवलम्बनपूर्व्वक उनर तपोवनके तरु-तलसे कैसे विश्राम और सुखसे समय बिताते थे, लक्ष्मणने कहा आर्य्य! यह जनस्थान के मध्यवर्त्ती प्रस्रवणनाम गिरि है, यह गिरि अपने ऊंचे शिखरोंमें आकाश मार्गसे वारम्बार चलते, जलधरके समूहोंके संयोग-से निरन्तरनिविड़ और नीलमयसे अलङ्कृत है, और पर्व्वतके अधित्यकाका प्रदेश विविधवन और पादपों-के समूहोंसे ढ़का है, और इसीलिये सतत मधुरशीतल और रमणीयहै, फिर इसी पर्व्वतके नीचे प्रसन्न-सलिला गोदावरी नदी लहरीयोंका विस्तार करती हुई, बहुत वेगसे वहती है, राम कहने लगे कि प्रिये! तुम्हार स्मरण है, इस स्थानमें कैसा सुख मन में था, और हमलोग इस पर्णकुटीमें रहा करते थे, तब

लक्ष्मण इधर उधर फिर कर आहारके योग्य फल और मूल लाकर रखते थे, और गोदावरीके तीरपर मृदु और मन्दगमनसे भ्रमण करते पूर्वाह्ण और पराह्णका कृत्य करके निर्मलसलिलकणवाही शीतल पवन-सेवन करते थे, हा उसस्थान मे रह कर कैसे सुख से दिन बिताये थे।

लक्ष्मणने चित्र के अन्यप्रदेशमे देखकर कहा आर्य्ये! यह पञ्चवटी है? यही शूर्पणखा है? और यही मुग्धस्वभावा सीताने जैसा कि सच मुच पूर्व्व अवस्था उपस्थित हुई है, यह बोधकर शालवदनसे कहा हा नाथ! इतना हीं देखना सुनना समाप्त हुआ, तब रामने हंसकर सान्त्वना करके कहा अई वियोग कातरे! यह चित्रपट है वास्तविक पञ्चवटी अथवा पापिनी शूर्पणखा नहीं है, फिर लक्ष्मणने इधर उधर देखकर कहा क्या आश्चर्य है, कि इस चित्रको देखकर जनस्थानका वृत्तान्त वर्त्तमान कालका बोधक होता है, और निशाचरोंके दुराचारसे हिरण्मयमृगके छलसे जिन्होंने अत्यन्तविषम अनर्थ कियाथा, और जिन्होंके समुचितवैरके दूरकरनेसे उनका सम्पूर्ण हुआथा, तथापि स्मृतिपथमें आरूढ़ होनेसे मर्म्म-को दुःख देता है, उसी पीछे आर्य्यमानवसमागम-शून्यजनस्थानके भूभागमे विकलचित्त होकर कैसे

दुःखी हुये थे, उसके देखने से पाषाणभी द्रवता है और वज्रकाभी हृदय फटता है। सीता लक्ष्मणके मुखसे सब कथाको सुनकर और अश्रुपूर्णनयन होकर आपही आप कहने लगीं कि हाय! मुझ अभागिनके लिये आर्य्यपुत्रने कितना क्लेश किया है, उस समय रामके नयनयुगल से वाष्पवारि गिरने लगे, तब लक्ष्मणने देखकर कहा, आर्य्य! चित्रके देखने से आप ऐसे क्यों अभिभूत हो गये, रामने कहा वत्स! उस काल जो हमारी विषम अवस्था प्राप्त हुईथी यदी वैरके दूर करने की इच्छा अनुक्षण अन्तःकरण में जागरूक न होती तो हम कभी भी देह का धारण न कर सकते, चित्रके देखने में उस अवस्थाके स्मरण होने से यह जानपड़ता है कि जैसा हमारे हृदयके मर्म्मकी ग्रन्थी सब शिथिल हो गई हैं, और तुम अपने आखों से सब देख चुके होतो अब अजानसे ऐसी बात क्यों करते हो।

लक्ष्मणने इसको सुनकर कुछ कुण्ठित और लज्जित होकर इस प्रकार विषयान्तर को दिखलाकर रामचन्द्र की चित्तवृत्तिको अन्यविषय में लगाते हुये कहा, आर्य्य! इधर दण्डकारण्य के भूभाग को देखैं कि इसी स्थान में दुर्दर्श कबन्ध राक्षसके रहनेका स्थान है, और दूसरी ओर ऋष्यमूकपर्व्वतमें मतङ्गमुनिका आश्रम है, यही सिद्धशवरी श्रवणा है, और यही पम्पा नाम

सरोवर है, रामने पम्पासरोवर को नाम सुनते हीं सम्बोधनपूर्व्वक सीतासे कहा, कि प्रिये! यह परम-रमणीयपम्पा नाम सरोवर है, हम सब तुमको खोजन करते करते पम्पाके तीरपर उपस्थित भये थे, और देखा कि प्रफुल्लित सब कमल मन्दपवन से थोड़े २ होलते हुये सरोवर की अकथनीयशोभासम्पादन करते हैं, और इनका अधिक सुगन्ध चारो ओर सुगन्धित कर रहा है भवरे मधुपान से मतवाले होकर मन्द२ गाते२ उड रहे हैं, और इधर उधर फिर रहे हैं, तथा हंस-सारस आदि पक्षिगण मनके आनन्दसे निर्म्मलसलिल में क्रीड़ा कर रहे हैं, उस समय हमारे नयनयुगलसे बराबर अश्रुकी धारा बह रहीथी की अच्छी सरोवर की शोभा देखने को हम समर्थ न होते थे, कि एक धाराके गिरने और दुसरीके उठनेके मध्यमूहुर्त्तमात्र नयनों को अवकाश मिलनेके समय वहां हमने कुछ एकवार स्पष्ट देखा था।

सीताने एकवार चित्रपट की ओर लक्ष्मणसे देखकर पूछा वत्स! इस पर्व्वतके ऊपर जो फुले कदम्बकी शाखा में मधुपान से मत्तमयूर और मयूरीगण नाच रहे हैं, और दुर्ब्बलशरीर आर्य्यपुत्र तरुके नीचे मूर्च्छित होकर गिरे हैं, और तुम रोतेर आर्य्यपुत्रको पकड़ रहे हो उस गिरिका क्या नाम है? तब लक्ष्मणने कहा आर्य्ये!

इस पर्वत का माल्यवान नाम है, माल्यवान वर्षाकाल में अतिरम्य स्थान है, देखिये ? कि नवजलधरके संयोगसे इसके शिखरमें कैसी अनिर्वचनीयशोभा हो रही है, और इसी स्थानमें आर्य्य अत्यन्त विकल हुये हैं। राम इसको सुनकर और पूर्व्वावस्थाको स्मृतिपथमें आरूढ़ होनेसे अधिकव्याकुलहृदय होकर कहने लगे कि वत्स ! ठहरोर अब और इस वनका नाम न कहो क्योंकि इसके सुनने से हमारा शोकसागर अनिवार्य्यवेगसे बढ़ निकलता है, हम जानकी के विरहका फिर नवीन-भाव अवलम्बन कर रहे हैं, और इस समय सीताके आलस्यका लक्षण प्रकाशित हुआ है, इसको देखकर लक्ष्मणने कहा कि आर्य्य ! और अब चित्रपटके देखने से क्या प्रयोजन है क्योंकि महारानी जानकीजीके परिश्रम का बोध होता है, इस कारण मै निवेदन करता हूं कि महारानी जीको विश्राम करना चाहिये इस लिये मै जाता हूं आप सब विश्राम भवन मे प्रवेश करें।

यह कहकर लक्ष्मणके प्रस्थान करने के समय सीताने रामसे कहा कि नाथ ! चित्रपटके देखतेर मुझे एक अभिलाषा उत्पन्न भई है, उसे आप पूर्ण करें, तब राम कहने लगे कि प्रिये ! कहो आपको क्या अभि-लाषा है बहुत शीघ्र सम्पादित होगी, तब सीताने कहा कि हमारी अत्यन्त अभिलाषा यह है कि फिरभी मुनि

पत्नियों का समागम और तपोवनमें भागीरथीके निर्म्मल और ठण्ड सलिल से स्नानकरें, सीताके अभिलाष को सुनकर रामने लक्ष्मणसे कहा वत्स ! यहीमात्र गुरुजनों की आज्ञा है कि जब जिस वस्तुका अभिलाष जानकी करै वह वस्तु उसी समय लादेना चाहिये, इस लिये काल प्रभात अभिलाषित प्रदेश में भेजै सीता सातिशय हर्षित होकर कहने लगीं कि नाथ ! आपभी मेरे साथ चलैं, इस परश्रीरामने कहा अयिमुग्धे ! क्या तुम को यहभी कहना पड़ेगा, मैं तो तुम्हारे, नयनों से अलग होकर एक मुहूर्त्त भी स्वस्थहृदय क्या रह सकता हूं, इसके पीछे सीताने स्मितमुख से होकर लक्ष्मणसे कहा कि वत्स ! तुमको भी हमारे साथ चलना पड़ेगा तब लक्ष्मणजी बहुत अच्छा कह कर यात्राका सामान ठिक करनेके निमित्त निकल कर गये ।

प्रथम परिच्छेद

सम्पूर्ण हुआ ।

द्वितीय परिच्छेद ।

कक्षाके बाहर जानेपर रामचन्द्र और जानकीजी विश्रामभवनमें जाकर परस्पर अनेक प्रकारकी कथा वार्त्ता करने लगे, कितने काल के पीछे सीताने निद्रासे युक्त होकर सोनेके लिये इच्छा की, तब राम बोले कि प्रिये! यदि आपको आलस्य अधिकज्ञात हुआ हो तो हमारे कण्ठमें अपनी भुजलताको डालकर थोड़ीदेर तक निद्राकरो, तब सीताने अपनी कोमल बाहुवल्लीके से रामके गलेको पकड़ा राम उनके अनिर्वचनीयस्पर्श-सुखका अनुभव कर कहने लगे कि प्रिये! तुम्हारी बाहुलताके स्पर्शसे हमारे शरीर में जैसी अमृतकी धारासी रसने लगो, और इन्द्रि यगण अभूतपूर्व्व-रसाविष्ट होकर अवश होगये है, चेतन विलुप्तप्राय हो गया है, और अकस्मात् हमारे निद्राका क्या आवेश हो गया है अथवा महा आवेश क्या उपस्थित हुआ है, से कुछ इसका निश्चय नहीं कर सक्ता हूं, तब सीताने रामके मुखसे निकले अमृतायमान वचनों की परम्परा

को सुनकर और कुछ हंसकर कहा नाथ! आपतो चिरानुकूल और स्थिरप्रसाद है, क्योंकि इसके सुननेसे क्या अधिक सौभाग्य स्त्रियों के लिये उचित हो सक्ता है, और प्रार्थना यही है कि बहुत काल तक ऐसा ही अनुग्रह और स्नेह बना रहै।

सीताके मृदुमधुर और सरलवाक्यों को कर्णगोचर कर राम कहने लगे कि प्रिये! तुम्हारे वचनो के सुननेसे मेरा शरीर शीतल होजाता है, इन्द्रिय सब विमोहित हो जाती हैं, कर्ण विवर अमृत रससे अभिषिक्त होजाता है, और अन्तःकरणकी सजीवता सम्पादित होती है, इसपर सीताने लज्जित होकर कहा कि नाथ! इसी कारणसे सब प्रियम्वद कहते हैं, सो जो हो सो हो अन्तमें इस अभागिनके लिये इतने सौभाग्यका मिलना सपने में भी अलभ्यथा, यह कहकर सीता को शयनके निमित्त उत्कण्ठित देखकर राम कहने लगे कि प्रिये! यहां और किसी शय्याकी सम्भावना नहीं है, इसी निमित्त जो और स्त्रियों से नहीं स्पर्श किई गई है, यह रामकी भुजा विवाह समयसे लेकर क्या शैशव में क्या युवावस्थामें क्या घरमें क्या वनमें आपके लिये यहीतकिया हो आई है, और आजभी तुम्हारे तकिया काकाम करैगी, यह कहकर रामने अपनी भुजाको फैला दिया, तब सीता उसपर अपना सिररखकर उसीसमय सोने लगीं।

राम स्नेह से भरे कितने समय तक सीताके मुख कमलको देख प्रफुल्लितनयन होकर कहने लगे कि क्या चमत्कार होता हैं, जब प्रिया के वदनसुधाकर को देखता हूं, तभी मेरा चित्तचकोर चरितार्थ है, और अन्तरात्मा अनिर्वचनीय आनन्द राशि में मग्न होता है !

सचमुच यह गृह में लक्ष्मी स्वरूपा है, नयनों को रसाञ्जन स्वरूपिणी है, इसका स्पर्श चन्दनरसके अभिषेक के तुल्य है, क्या आश्चर्य है, और बाहुलता कण्ठ में रखने से शीतल और चिकने मोतीके हारके समान कार्य्य करते हैं, क्या आश्चर्य है कि प्रियाके सकल अङ्ग बड़ी प्रीतिके देनेवाले हैं, इस प्रकार रामचन्द्र मनहीं मन विचार करतेथे कि इसी समय सीता अपने सपने में भासित पदार्थों को देखकर सपने ही में कहने लगीं कि हा नाथ ! आप कहां हैं ।

सीताके सपने में कहने को सुनकर राम अपने अन्तःकरण में कहने लगे कि क्या चमत्कार है कि चित्रके देखने हीं से प्यारीके बीतीहुई, विरह की भावना का आविर्भाव हुआ है, और उसी चित्रका सपने में स्मरण कर अभीतें वनवास आदिमान हैं, ऐसी सोचकर लोप पाती है, यह कहकर सीताके अङ्ग में हस्त स्पर्श करते २ कहने लगे कि हा अकृत्रिम प्रेमका परम पदार्थ

क्या सुख क्या दुख क्या बचपन क्या युवावस्था का वार्द्धक्य इन सब अवस्थाओं में अविकृत एकरूप और सरस रहता है, ऐसे प्रेम और सुखका अधिकारी होना अल्पसौभाग्य का फल नहीं है, किन्तु दुःख की बात यही है कि ऐसे प्रेमका होना जगत में अत्यन्त विरल और एकान्त दुर्लभ है, यदि नितान्त विरल और अधिक दुर्लभ न होता तो संसार में इससे बढ़कर अधिकसुख कौनसी मान होती।

रामके वाक्यके पूर्ण न होने पर द्वारपालने सन्मुख आकर और हाथ जोड़ कर विनय पूर्वक निवेदन किया कि महाराज! दुर्मुख द्वार प्रदेश मे आकर खड़ा है, क्या आज्ञा है, दुर्मुख अन्त पुरचारी अतिविश्वस्त भृत्य है, महाराजने उसको राज काजनके विषय तथा पौरगण और जानपदवर्गके अभिप्राय जानने के हेतु नियोजित किया था, वह प्रतिदिन गुप्तभाव होकर सकलविषय का अनुसन्धान किया करता था, इस प्रकार जिसदिन जहां जो कुछ उसको विदित होता था, वह शीघ्र राम को बोधन करता था, अब उसके आनेको सुनकर रामने प्रतीहारी को कहा कि, अच्छा उसे शीघ्र हमारे पास आनेदो, तब दुर्मुखने भीतर आकर प्रणाम किया और हाथ जोड़कर सन्मुख खड़ा हुआ, तब उसकी ओर देख कर रामने पूछा कि हे दुर्मुख! आज तूने क्या जाना है

दुर्मुख बोला कि महाराज! क्या पौरमण क्या जानपदवर्ग सब कहते हैं कि हम सबको रामके राज्य में परम सुख है।

इस कथाको सुनकर रामने कहा कि तू प्रतिदिन प्रशंसा का समाचार दिया करता है, यदि कोई दोष होय तो कह कि उसके दूरकरने का यत्न करैं, हमने स्तुतिवादके निमित्त तुझे नहीं भेजा था, दुर्मुख अन्य२ दिवसस्तुतिवाद मात्र सुनकर रामके निकट आता था, सुतरां जब सुनताथा तभी रामके निकट आकर और बिनाकपट रामसे कह देता था, उसदिन सीता सम्बन्धी दोष सुनकर इस अप्रिय सम्वादका कहना अनुचित जान-कर गुप्तरक्खा था, अब रामसे दुष्कीर्त्ति की कथा के कहने को वह चकित और हतबुद्धि होकर कितने समय तक चुपचाप रहा, परन्तु कथञ्चित् बुद्धि स्थिरकर और शुष्क मुख होकर विकृतवाणी से कहने लगा कि महाराज! आज कोई दुष्कीर्त्ति मैंने नहीं सुनी है, किन्तु उसका विकृत दीन और आकार देख कर रामके अन्त:करण में विषम सन्देह उपस्थित हुआ, तब रामने अत्यन्त चञ्चल-चित्त और व्याकुल होकर अधीर वचनो से कहा कि तूने अवश्य दोष कीर्त्तन सुना है, अपलाप क्यों करता है, बोल क्या सुना है, अब विलम्ब न कर न कहेगा तो अत्यन्त कोप करेंगे और जन्मभर तेरा मुख न देखेंगे।

रामको अत्यन्त निर्व्विन्धातिशय देखकर और अधिक शङ्कित हो कर दुर्मुखमनहीं मन विचार करने लगा कि मैं क्या विषम सङ्कट में पड़ा हूं; कि राज महिषी सम्बन्धी जनापवाद महाराज से कैसे कहूं, क्यों कि मैं अतिहत-भाग्य हूं, नहीं तो ऐसे अनिष्ट कर्म्मके भारका ग्रहण क्यों करता क्यों कि मैंने आगा और पीछा कोन शोचकर ऐसे कर्म्मके भारका ग्रहण किया हैं; तो अव प्रभुके निकट सत्यवोलना चाहिये, यह निश्चयकर और कम्पित-शरीर होता वोला कि महाराज! यदि मुझे सब कथा यथार्थ कहनी होगी तो आप उठकर गृहान्तर में चलें, मैं वह सब कथा प्राणान्त में भीं यहा नहीं कह सकूङ्गा, तव राजने सुननेके निमित्त अत्यन्त उत्सुक होते हुये सीताके जागने तक की अपेक्षा नकी, और धीरे २ अपने हाथ से उनका शिरहटाकर दुर्मुखके साथ शीघ्र ही गृहान्तर में प्रवेश किया। इस प्रकार अन्य गृह में जाकर राम अत्यन्त व्याकुल होकर दुर्मुखसे कहने लगे कि विलम्ब न कर जो तूने सुना है, वह शीघ्र ही कह क्यों कि तेरे आकार और प्रकार के देखने से हमारे अन्तःकरण में नानाप्रकार का संशय उपस्थित होता है; उसने कहा कि महाराज! मैं ने जो सर्व्वनाश की कथा का आज श्रवण किया हैं, उसे महाराजके निकट कहना होगा, इसकारण से मेरा सर्व्व शरीर सूखा

जाता है, किन्तु जब भला अथवा अनिष्ट के विना विचार किये मैंने अपने शिरपर ऐसे कार्य्य का भार लिया है तो अवश्य कह नाहीं पड़ैगा, मैंने जैसा सुना है वैसा ही निवेदन करता हूं, परन्तु महाराज मेरे अपराधको क्षमा रक्खें, महाराज सर्व्व प्रजावर्ग प्राय एकमत होकर अशेषविधसुख्यातिपूर्व्वक कहते हैं कि हम सब राम-राज्य में परम सुखसे वासकरते हैं, कोई राजाको देश के राज्य करने में ऐसी सुखकी प्रणाली का स्थापन न करसका, किन्तु कोई२ राजमहिषी की कथा को कहकर कुत्सा करते है, और कहते हैं, कि हमारे राजाका मन अतिनिर्व्विकार है, क्यों कि सीता कितने दिन तक रावण के गृहमें रहीं राजा कोई दुविधा अथवा दोषका बोध न कर अनायास आपने राजभवन से लाये, जो इससे अधिक हमलोग के गृहमें स्त्रियोंका ऐसा दुश्चरित होगा तो उसका शासन करना हमको अति कठिन होगा, क्यों कि शासन करने के समय वे सब सीतां की कथा का उदाहरण देवैङ्गी, अथवा राजधर्म्मी अधर्म्मका करता है, वह जिस धर्म्मके अनुसार चलेगा हमलोगों को भी उसी धर्म्मका अवलम्बन करना पड़ेगा, इस लिये महाराज मैंने जो कुछ सुनाया वह निवेदन किया और मेरा अपराध आप क्षमा करैं, हा विधाता ! इतने दिनोंके पीछे

आपने मेरा दुर्मुख ऐसा नाम यथार्थ किया, यह बोल कर और विदा होकर रोता हुआ चला गया।

दुर्मुखके मुखसे सीता सम्बन्धी जनापवादके वृत्तान्त को सुनकर राम हाहतोऽस्मि यहकर और छिन्नवृक्ष समान धरणी पर गिर पड़े, और इसी प्रकार आखों आंशूवहाते हुये, और गद्गद् वचनों से कहने लगे कि हाय यह सर्वनाश की कथा आज मैं ने सुनी है, इससे हमारी छाती में वज्राघात होता तो अच्छाथा, हम किसी कारण अवजीते हैं, और हम अत्यन्त हतभाग्य हैं, अथवा राज्याधिकारका परित्याग कर हमको वनवास करना क्यों पड़ता, और किस लिये पञ्चवटीके प्रवेश करने से प्राणप्रिया जानकीका हरण होता, और निर्मल रघुकुल अभूतपूर्व्व अपवादसे दूषित क्यों होता, और किस कारण अपवाद बहुत उपायों से निःसन्देह रूप किया गया है, और फिर दैवके दुर्विपाक के हेतु वही अपवाद फिर नूतन होकर सर्व्वत्र फैल रहा हैं, सर्व्वथा राम के जन्मकाले ना और शरीर का धारण करना केवल दुःख ही के लिये बनाया गया है अब मैं क्यों करूंयह, लोकापवाद दुर्निवार हुआ है, अब अमूलक बोल कर उसकी उपेक्षा करें, अथवा निरपराध जानकी का परित्यागपूर्व्वक कुलकलङ्क का विमोचन करें, क्या

कभी कुछ निश्चय नहीं होता, और कभी कोई मुझसा ऐसेउभय सङ्कट में न पड़ा होगा।

इस प्रकार आक्षेप कर और किछुकाल अधोदृष्टि होकर राम चुपचाप रहैं, पीछे बड़ी ठण्डी सांसभर कर कहने लगे कि और इस विषय में कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य की विवेचना का प्रयोजन नहीं हैं, जब हमने राज्यका भार ग्रहण किया है तब सर्व्व उपायों से लोक की प्रसन्नताही कर्नी हमारा प्रधान धर्म्म और कर्त्तव्य कर्म्म है, इस लिये जानकीका परित्याग कर्ना पड़ा, हा हतविधे! तुम्हारे मन में ऐसाही था ऐसा कह कर और मूर्छित होकर पृथिवी में गिर पड़े।

कितने समय के पीछे चेतना होने से राम अत्यन्त करुण-स्वरसे कहने लगे कि जो हमको चैतन्य न होता तो हमारे लिये सर्व्व प्रकार कल्याणकारी होता और निरपराध जानकीका परित्याग कर अनिवार्य्य पापपङ्क में लिप्त न होते और यही मात्र अष्टावक्र के सन्मुख प्रतिज्ञा किया था कि यदि लोक के रञ्जनके अनुरोध से जानकी का परित्याग करना है, वहभी मुझको स्वीकृत है, क्या इसी भवितव्यताके लिये हमारे मुखसे यह प्रतिज्ञा वाक्य निकली थी। हा प्रिये जानकि! हा प्रियवादिनि! हा राममयजीविते! अरण्यवाससहचारि! परिणाम में

तुम्हारी जो इसरूप अवस्था का होना स्वप्न में भी ज्ञात नहीं होता था, तुमतो ऐसे दुराचार नराधम और हतभाग्यके हाथ में पड़ी कि कुछकाल के लिये भी तुम्हारे भाग्यमें सुखभोग न हुआ, तुमने तो चन्दन वृक्षके भ्रमसे दुर्विपाक विषके वृक्षका आश्रय किया था हमने तो परमपवित्र राजवंशमें जन्मका ग्रहण किया है, परन्तु आचरण में चण्डाल की अपेक्षा सहस्र-गुणा अधम, नहीं तो विना अपराध तुम्हारे परित्याग करने को उद्यत क्यों होता, हा! जो इस समय मेरा प्राण वियोग होता तो हमारी रक्षा होती और जीने से क्या लाभ है हमारे जीवनका प्रयोजन आज परिसमाप्त हुआ जगत शून्य और जीर्ण रण्यके समान जान पड़ता है, ऐसे कहतेर नितान्त व्याकुल हृदय और कम्पमान शरीर होकर राम कितने समय तक चुपचाप ठहरे रहे पीछे बड़ी ठण्डी सांसभर बोले कि हाय! यह क्या हुआ ऐसा कहकर और कौशल्या प्रभृति का नाम लेकर और अधीर वाक्यों से कहने लगे कि हा माता! हा तात! महाराजजनक! हा देवि वसुन्धरे! हा भगवति अरुन्धति! हा कुलगुरु भगवानवशिष्ठ जी! हा भगवान विश्वामित्र जी! हा प्रियबन्धु, विभीषण! हा परमोपकारिन् सखे सुग्रीव! हा वत्स अञ्जनाहृदयनन्दन! आप सब कहां है और तुम लोग कुछ नहीं जानते हो, इस समय

दुरात्मा राम तुम्हारा सर्वनाश करने को उद्यत हुआ है, अथवा और मैं ऐसे महात्माओंके नाम ग्रहणका अधिकारी नहीं क्यों कि मुझसे पापीके उनलोगोंके नाम लेने से उन सबको पाप स्पर्श करैगा, और मैं जब शुद्ध हृदय पतिप्राणाकामिनी का नितान्त निरपराध जानकर अनायास परित्याग करनेको उद्यत हुआ हूं, तब मुझ से अधिक महापातकी और कौन है, हा राममय जीविते! पाषाणमय निठुर राम से परिणाम में ऐसा दुःख होगा इसबात का बोध तुमको सपने में भी न था, निःसन्देह राम का हृदय वज्र लेपमय है, नहीं तो इस समय तक विदर्ण क्यों नहीं हुआ अथवा विधाताने जार और सुनकर मेरा ऐसा कठिन हृदय बनाया है नहीं तो एकाएक ऐसे नृशंस कर्म्मकरने को अनायास प्रवृत्त क्यों होता।

ऐसे गद्गदवचनों से कहकर और विश्राम भवन में लौट जाकर आंसू बहाते राम निद्राभिभूत सीताके सन्मुख खड़े होकर और हाथ जोड़कर कहने लगे कि प्रिये! हतभाग्य राम इस जन्मके लिये तुमसे विदाहोते हैं, अनन्तर पृथिवी को सम्बोधन पूर्व्वक कहा कि देवी विश्वम्भरे! दुरात्मा रामने सीताका परित्याग किया इसके पीछे आप अपनी तनया का रक्षण और यतन करें, ऐसे कहकर दुस्सहशोकाग्निसे दग्ध हृदय राम घरसे बाहर

निकले इस प्रकार शत्रुजनगणसे कर्त्तव्यताका परामर्श करने को मन्त्र भवन में प्रवेश किया।

यह दूसरा परिच्छेद सम्पूर्ण हुआ:।

तृतीय परिच्छेद।

राजा रामचन्द्रने मन्त्रभवन में प्रवेश कर और राज सिंहासन पर बैठकर निकटवर्त्ती द्वारपालको आज्ञादी की तीनों भरत लक्ष्मण और शत्रुघ्नको बुला लाओ- महाराजकी आज्ञाको सुनकर भरत आदि तीनों भाइयोंने कहाकि अब इस सायंकालके समय सुखके साथ काल बिताना उचित था, ऐसे समय, हम सबको सम्प्रति के अर्थ क्यों बुलाया है, ऐसे भरत प्रभृतियोंने मनहीं मन नाना प्रकारके वितर्कको करते२ शीघ्र मन्त्रभवन में प्रवेश किया, और देखा कि वारम्बार रामचन्द्र बड़ी गहरी सांसभरते और आंखोंसे आंसूबहाते एकाकी

उपविष्ट हैं, ऐसीदशा अग्रजकी देखकर विषादके सागर में मग्नहोते और किसी प्रयोजनके निमित्त ऐसे ऊए हैं, इनवातों को सोचकर सम्मुखदण्डायमान खड़े रहे, और अतिविषम अनिष्ट होनेकी शङ्काकर तीनों मे से किसीको ऐसा साहस न ऊआ कि इसका कारण पूंछसकें, अन्त में वे तीनों घोरतर विपत्ति ऊई यह निश्चय कर और रामकी अतिकातर अवस्थाको देखकर रोने लगे।

कियत्काल तक रामने अपने शोकावेगको अल्प करते और नयनकी अश्रुधाराको मार्जन करते स्नेहसे अनुजगणों को सम्मुख वैठने को आज्ञादी, तव आसनका स्वीकारकर अनुजगण कातर और निष्प्रभरामचन्द्रके मुखचन्द्रको देखने लगे, रामके नयन युगल से प्रबलवेग बाष्पवारि विगलित होते देखकर उस समय वे लोग भी अत्यन्त अधिक वाष्पवारि मोचन करने लगे, कितने समयके पीछे लक्ष्मण अधिक न ठहर सके और विनय पूर्व्वक पूछने लगे कि आर्य्य! आपकी अवस्था यह देख कर हमलोग मरे जाते हैं, और आपकी चेष्टाके देखने से स्पष्ट वोध होता है कि अवश्य अनिवार्य्य अनिष्ट ऊआ है, क्यों कि गम्भीर जलधि कभीभी थोड़े कारण से आकुल नहीं होता और सामान्य वायुवेग के प्रवाह से हिमाचल नहीं विचल होता इसी लिये किसकारण आप ऐसे

दुःखी हुये हैं उसका विशेष कथनकर हमसबके प्राणकी रक्षा करैं, आपका मुखारविन्द सायंकालके कमलके समान म्लान और प्रभात समयके शशिधरके तुल्य प्रभा हीन लक्षित होता है, इस लिये आप शीघ्र कहिये नहीं तो हम सबका हृदय विदीर्ण होता है। लक्ष्मणने इस प्रकार से उसके कारणकी जिज्ञासा किया तब रामचन्द्र अतिदीर्घ निश्वास पूर्व्वक बोले कि वत्स! भरत! वत्स लक्ष्मण! और वत्स शत्रुहन! तुम लोग हमारे जीवन तुमलोग हमारे सर्व्वस्व तुमलोगके लिये बड़े दुर्व्वह राज भारको हमने अपने शिरपर लिया है, और तुमलोग ही हमारे हित साधन वा अहित के निराकरण में सहायक हो हम तो अब बड़े विषम विपत्ति में पड़े हैं, इस लिये इस समय में तुमलोगों को बुलाया है, और आपतित अनिष्टके निवारण का एक उपाय बहुतकाल के चिन्तन करने से हमने ठहराया है, उसी उपाय के अवलम्बन करके सर्व्वभाव से कर्त्तव्यता का बोध किया है, तुम सब सावधान होकर सुनो और सब विषय का सविशेष वृत्तान्त तुम सबको जनाकर समुचित कार्य्यके करने से प्राप्त विपत्ति के गिरने को दूर करने का आरम्भ करैंगे।

ऐसा कहकर राम चुपचाप ठहरकर और फिर बड़े प्रबल वेगसे आंशु बहाने लगे, तब अनुज लोग

रामचन्द्र जी की ऐसी दशा देखकर पहिले से अधिक अधीर होकर चिन्ताकरने लगे, और बोले कि आर्य्यका लक्षण देखकर बोध होता है कि अवश्य कोई बड़ा अनर्थ हुआ है, नहीं जानपड़ता, किन्तु अनुभवशक्तिके द्वारा कुछ निश्चय न कर सके, और उसका कारण जानने को अधिक उत्सुक होकर और अत्यन्त व्याकुल होकर रामचन्द्र का मुख देखने लगे।

तब रामचन्द्र कुछकाल तक मौनावलम्बन कर रहे पीछे दीर्घ निश्वास से बोले कि हे भ्रातगणों! सुनो हमारे पूर्व्व इक्ष्वाकुके वंशके महाराजा लोग महानुभाव नरपति थे जिन्होंने जन्म ग्रहण किया था, उनके अप्रतिहत प्रभाव से और प्रजापालन के अशेषविध कर्म्म समुदाय के अनुष्ठान के द्वारा यही परम पवित्र त्रिलोक-विख्यात राजवंश ठहराया गया है, हमारे समान और कोई हतभाग्य नहीं हुआ है, कि जो इस चिरपवित्र त्रिलोक विख्यात राजवंशको दुष्परिहर कलङ्कमें गिरावें, लक्ष्मण तुमको कुछ विहित नहीं है, जब हम तीनों पञ्चवटी में बसे थे उस समय यह सबके न होने पर दुर्वृत्त दशानन ने सीताको हरण किया था, सीताने एकाकी उस दुर्वृत्तके आलय में दीर्घकालतक अवस्थिति किया था, अवशेष हमने सुग्रीव की सहायता से उस दुराचारके शान्तिका विधान करके सीताके शान्तिका विधान किया

था, और हमने उस एकाकिनी और परमसत्ववादिनी सीताको ग्रहण कर और गृहमें रक्खा, हमारे घरसे रखने से पुरवासि और देश के लोग असन्तोष प्रदर्शन कर अयश कहते हैं, इससे हमने प्रतिज्ञा किया है कि जानकी का परित्याग करैं क्यों कि सर्व्व प्रयत्न से उचित है कि राजा प्रजारञ्जन करैं जो उनका कृतकार्य्य न होवै तो राजाका जन्मलेना व्यर्थ हैं, और जीवनके रखनेका क्या फल है इस लिये प्रसन्नमन तुम लोग अनुमोदन करो तो हम इस उपस्थित विपत्ति से परित्राण पावैं।

अग्रजकी ऐसी कथाको सुनकर और अत्यन्त विषस होकर भय और विस्मय से अनुजलोग अधिक मौनावलम्बन कर क्या कहना चाहिये ऐसा सोच नीचे देखने लगे, इसके पीछे बड़े अधीर करुणस्वर से और विनीतभाव से निवेदन किया कि आर्य्य! आप जो आज्ञा किया उसकी क्या कभी अस्वीकार अथवा अवज्ञा की इससे अबभी आपकी आज्ञाके प्रतिरोध से करने में प्रवृत्त न होंगे किन्तु आपकी प्रतिज्ञाको सुनकर हमारे प्राणके प्रयाणका समय हुआ है, हमलोग आपके निकट आकर ऐसी कथाका श्रवण करैंगे हमलोगों के अन्तःकरण में ऐसी आशङ्का कभी नहीं हुई थी सो अबजो हुआ सो हुआ, जो आज्ञा करैं तो हम सब कुछ पार्थना करैंङ्ग, लक्ष्मणकी ऐसी कातर भाव की बातों को सुनकर रामने

कहा कि वत्स ! जो बोलना चाहो सो स्वच्छन्द कहो, तब लक्ष्मणने कहा, आर्य्य ! जानकी एकाकिनीने रावणके गृह में वास किया है, यह यथार्थ है और रावण अति दुर्वृत्त था इसमें कुछ संशय नहीं है, परन्तु आर्य्यने यथाशास्त्र दुराचार की शान्तिका विधानकर अपने सन्मुख आर्य्या का आनयन किया है, फिर पहिले पहिल लोकापवाद का भय जानकर आर्य्याके ग्रहण करने का स्वीकार किया, तब फिर अलौकिक परीक्षाके द्वारा शुद्धा-चारिणी बोलकर सर्व्वजनसम्मतिपूर्व्वक आपने उनका ग्रहण किया है, वही परीक्षा सर्व्वजनके समक्ष और सम्मतिपूर्व्वक हुई थी, हमलोग और उभय सेनागण देव देवर्षि और महर्षिगण भी सन्मुख में उपस्थित थे, सबोंने साधुवादपूर्व्वक शुद्धचारिणी आर्य्याको बोलकर अङ्गीकार किया है, फिर उनको अपवाद लगाना उचित नहीं है, इसी लिये क्या कारण है कि आप इस विषय में विषम प्रतिज्ञा अमूलकलोकापवाद सुनकर भवादृश महानुभाव को विचल चित्त होना उचित नहीं है, क्योंकि सामान्य लोगके तुल्य तादृश बुद्धि और विवेचना न करनी चाहिये सामान्य लोग तो जो चित्त में आता है वही बोला करते है और जो सुनते हैं उसी को विना विवेचना करने के प्रकृत में घटनाकर विश्वास करते हैं, उनलोगों की कथा में आस्थाकरने से संसार यात्राका

निर्व्वाह नहीं हो सकता है, और आर्य्या तो सम्पूर्ण भाव से शुद्धचारिणी हैं, इनके विषयमें आपको कुछ संशय नहीं हैं, इस प्रकार अलौकिक परीक्षाके पार होने से आपने शुद्धचारिताका असंशयित परिचयप्रदान किया है, तब उसमें किसीके अन्तःकरण में अणुमात्र संशय नहीं हो सकता है, ऐसे समय आर्य्या के परित्याग करने में हमलोगों को लोग अपदार्थ समझैंगे, इसी प्रकार धर्म्मसे विचार करने में हमलोगों को दुर्निवार्य्य पापपङ्क में लिप्त होना पड़ेगा, अतएव आप सब विषयका सविशेष पर्य्यावलोकन कर कार्य्यका विधान करैं, हमलोगतो आपके नित्य आज्ञावर्त्ती हैं जो आज्ञा करैंङ्ग वही असन्देह चित्त और शिरोधार्य्य करैंगे।

ऐसे बोलकर लक्ष्मण विरत भये तब रामने कुछकाल मौनावलम्बन कर पीछे कहा कि वत्स! सीता जी अत्यन्त शुद्धचारिणी है इस विषय में हमको कुछ संशय नहीं है, परन्तु सामान्य लोग और विशेष किसी विषयका विचार न करके जो सुनते है, और जो चित्तमें आता हैं उसीका विश्वास करते और उसी को प्रकाश करते हैं यह सब हम जानते हैं, किन्तु इस विषयमें प्रजा आदिका कुछ दोष नहीं है हमारी अपरिणाम को देखना और अविमृश्यकारिताके दोषसे यह सर्व्वनाश उपस्थित हुआ है, जो हमलोग अयोध्या में आकर समस्त पौरगण और जानपदगणके

सन्मुख जानकी की परीक्षा करते तो उन सबके चित्तसे सर्व्व सन्देह जानकीके विषय का दूर होता सीताने जो अलौकिक परीक्षा से पार होकर आप शुद्धचारित्ताके असंशयितपरिचयप्रदान किया है, सो सच है, परन्तु उस परीक्षाके यथार्थ विषय में प्रजालोगको सम्पूर्ण विश्वास नहीं है, और बोध होता है कि अनेकलोगों को परीक्षा के विषय में विन्दुविसर्ग अवगत नहीं है, सुतरां सीताके चरितके विषयमें उनलोगों का संशय कुछ भी दूर नहीं हुआ है, विशेष कर रावणके चरित्र और बहुत काल तक एकाकिनी सीताका उसके गृहमें वास यह दो विचार करने से सीताके चरित्र विषय में सन्देह करना कुछ आश्चर्य नहीं, इसी लिये हम प्रजा-दिक को किसी यत्न से दोषी नहीं कर सकते हैं, हमारे अदृष्टवशसे अभूतपूर्व्व यह उपद्रव उपस्थित हुआ है, हम जो राज का भार ग्रहण न करते और धर्म्मसाक्षी कर प्रजारञ्जन की प्रतिज्ञा में बद्ध न होते तो अमूलक लोकापवाद की अवज्ञा दिखलाकर निरुद्वेग से संसार यात्राका निर्व्वाह करते, यदि राजा होकर प्रजारञ्जन न किया तो उसके जीवनधारण करनेका क्या फल है, जो प्रजालोग सीताके असती जानकर सिद्धान्त कर रखा है तो उनके अन्तःकरण से इस सिद्धान्तका दूर करना किसी प्रकार सम्भावित नहीं हो सकता है, सुतराम्

सीताको गृहमें रखने सबलोग हमको असती संसर्गी जानकर घृणाकरेंगे तो यावज्जीव घृणास्पद होने से प्राणत्याग करना उत्तम है, और प्रजाके रञ्जनके अनुरोध से प्राणत्याग करने में विमुख नहीं हैं, तुम सब हमारे प्राणाधिक हो जो उसके अनुरोध से तुम सबको भी परित्याग कर्ना तैसा दुरूह व्यापार नहीं है इसी लिये तुमलोग जितना चाहो कहो परन्तु हमने तो न्याय अथवा अन्याय कर सीताका परित्याग कर कुलके कलङ्क को दूर करने की प्रतिज्ञा किया है, यदि तुमलोग को हमारे ऊपर दया और स्नेह है तो इस विषय में और उपद्रव न उठाओ, सीता अथवा प्राणका परित्याग करेंगे इनदोनों में से एकपक्षका सिद्धान्त जानो।

यह कहकर और बड़ीगहिरी सांसभर कर रामचन्द्र कितने समय तक आंसूबहाते अधोमुख मौनभाव होकर ठहरे रहे, पीछे लक्ष्मण से भाषण पूर्व्वक कहा कि वत्स! सकल मनके क्षोभ को छोड़कर हमारी आज्ञा का पालन करो, इसके पूर्व्व सीताने तपोवन के दर्शनकी अभिलाष किया है उसीके छलसे तुम लेजाकर वाल्मीकीके आश्रममें छोड़ आओ, इससे हमारी प्रीतका सम्पादन होता है, इसविषयमें कोई आपत्ति न करो क्यों कि आपत्ति उठाने में हमको बड़ा असन्तोष होगा, और तुमने कभी भी हमारी आज्ञाका उल्लङ्घन नहीं किया

है, इसी लिये वत्स ! कल प्रभात हमारी आज्ञानुसार कार्य्यकरो, और किसी प्रकार अन्यथा न होवै और हमारी विशेष आज्ञा यह है, कि भागीरथी के इस पार जानकी को न ज्ञात होवै कि मुझे रामचन्द्रने परित्याग किया है, क्यों कि तुमारा हृदय करुणारस से परिपूर्ण है, इस निमित्त तुमको सावधान कर दिया है, यह कहकर रामचन्द्र अवनत वदन होकर आंसु-वहाने लगे, और वे भरत आदि तीनों रामचन्द्रकी दृढ़ प्रतिज्ञा जानकर और आपत्ति उठाने से विरत होकर और मौनावलम्बन करके वाष्पवारि मोचन करने लगे, कितने समयके पीछे फिर रामचन्द्र लक्ष्मणको सीताके निकालनेके अनुयायी कार्य्य करने को कहकर और सबको विदाकर आप विश्राम भवन में प्रवेश किया, इससे अति अधिक असुख पूर्व्वक चारो भाईयोंने रात बिताई।

यह तिसरा परिच्छेद सम्पूर्ण हुआ।

चतुर्थ परिच्छेद ।

दूसरे दिन प्रभात समय लक्ष्मणने सुमन्त सारथी को बुलाकर कहा, कि आर्य रथ शीघ्रकर लाओ? आर्य्या जानकी तपोवनके दर्शन करनेको जायंगी, इसको सुनते ही सुमन्तसारथी रथप्रस्तुत करने को गया, तब लक्ष्मणने जानकीके वासभवन में जाकर देखा कि जानकी तपोवन जानेके उपयोगी पदार्थोंको उपस्थित कर रथ की प्रतीक्षा करती हैं, लक्ष्मणने निकट जाकर बोले कि आर्य्या, मैं अभिवादन करता हूं, यह कहकर प्रणाम किया, सीताने कहा वत्स! चिरञ्जीव और चिरसुखी रहो यह कहकर अकृत्रिम स्नेह से आशीर्वाद दिया, तब लक्ष्मणने कहा आर्य्या रथ प्रस्तुत प्राय है, अब प्रस्थान करने में अधिक विलम्ब न होवे सीताने परम प्रसन्न और प्रफुल्लित वदन होकर कहा वत्स! अद्य प्रभात तपोवनमें जायङ्गे इस आनन्दसे मुझे रातकी निद्रा न आई सब पदार्थ प्रस्तुत करके बैठी हूं, रथ आवे तब आरोहण करूं और हमने अपने मन

में यह माना था कि ऐसे समय आर्य्यपुत्र हमारे तपोवन जाने में कुछ आपत्ति उठावेंगे, सो उसके न करने से और प्रसन्नमन होकर आज्ञा देने से हमने कैसी प्रीति का लाभ किया है, कि वह कहने को समर्थ नहीं है, हमने जन्मान्तर में बड़ी तपस्या की है, उस तपस्याके फल से ऐसे पतिका लाभ किया है, आर्य्यपुत्रके समान अनुकूलपति कभी किसीके भाग्यमें न मिलेगा क्यों कि आर्य्यपुत्रके स्नेहदया और ममता की बात जब हमारे चित्तमें आता है, उस समय हमारे सौभाग्य का गर्व चित्तमें उठआता है, मैंतो देवगणोंके निकट यही नित्य प्रार्थना करती हूं कि, जो मुझे नारीका जन्मलेना पड़े तो जन्मजन्म यही पति हुआ करैं, यह कहकर कहा वनवास के काल में मुनिपत्नियों से जो हमारा बहुत स्नेह हुआ है, इससे हमने उनलोगों के देनेके निमित्त बहु मूल्य वस्त्र और आभूषण लिया है।

यह बोल सीता लक्ष्मणको सब पदार्थ दिखलाय रहीं थी कि द्वारपालने भीतर आकर निवेदन किया कि सुमन्त्र-सारथी रथको प्रस्तुत करके द्वारदेशमें स्थित है, तब सीता तपोवन जानेके निमित्त अत्यन्त उत्सुक होकर लक्ष्मणके साथ सब वस्तुयों को लेकर और श्रवण करते हीं रथमें आरोहण किया, अधिक शीघ्र अयोध्यासे रथ चलकर जनपद देशमें जा पहुंचा, सीता नयनों

के और मनके आनन्दप्रद पदार्थों के देखने से प्रीति-युत होकर कहने लगीं कि वत्स! लक्ष्मण हमको जो इनमनोहर प्रदेशों का देखना है सो केवल आर्य्यपुत्रके प्रसाद का फल है, और जो वे प्रसन्न मन होकर अनुमोदन न करते तो हमको इस प्रीतिका लाभ क्यों होता, हमने जो आह्लाद कर प्रार्थना किया था उसे उन्होंने तैसी हीं अनुकूलता प्रदर्शन की है, लक्ष्मण मुग्ध स्वभाव सीताका ऐसा हर्षातिशय देखकर और रामचन्द्रने कैसी अनुकूलता दिखलाई है, इसको शोचकर मनहींमन मरनापन्न हुये, और अतिकष्टसे अपने बड़े शोक को छिपाते हुये और अनेक यत्नोंसे अपने भावको गुप्त करते सीताका सा हर्ष प्रदर्शन करने लगे।

इस प्रकार कितनी दूर जानेपर सीताम्लानवदन होकर लक्ष्मणसे कहने लगीं कि वत्स! अबतक तो हम मनके आनन्दसे आती थीं किन्तु एकाएक हमारे अन्तःकरण में भावान्तर उपस्थित हुआ है, देखो दक्षिण नयन वारम्बार फरकता है, और सर्व्व शरीर कम्पित होता है, अन्तःकरण अत्यन्तव्याकुल होता है, पृथिवी शून्यमय देख पड़ती है अकस्मात् ऐसा चित्त चञ्चल और असुखका आविर्भाव क्यों हुआ है, यह कुछ बुझ नहीं पड़ता, न जाने आर्य्यपुत्रका कैसा हृत्त है,

अथवा उनको कोई अशुभकी प्राप्ति भई अथवा प्राणा-धिक भरत और शत्रुहनको कोई शङ्कट प्राप्त है, वा भगवान शृङ्गीऋषिके आश्रम से कुछ अमङ्गल समा-चार आया है, तैसे ही गुरुजन लोग कैसे हैं, कुछ दुःख नहीं सकी जो हो, परन्तु सर्व्वनाश प्राप्त है इस में सन्देह नहीं, नहीं तो ऐसे आनन्दके समय ऐसी चित्तकी चञ्चलता क्यों होती, वत्स देखो किस निमित्त ऐसा होता है, और हमको अब तपोवन के दर्शन की अभिलाषा नहीं होती हमारी यह इच्छा है, कि अभी अयोध्याको लौट चलैं, अच्छा तुमको पूछती हूं कि आर्य्यपुत्रने हमारे साथ आनेको कहा था सो क्यों नहीं आये और रथमें चढ़ने के समय आह्लाद में होकर तुमसे पूछने को भूलगई, और उनके न आनेसे हमारे चित्तमें बड़ा सन्देह उठता है, वत्स ! क्या करैं हमारा चित्त क्रम क्रम से अधिक चञ्चल होने लगा, जब रावणने मुझे हरण किया था उसके पहिले भी इसी प्रकार मेरा चित्त चञ्चल हुआ था, अबभी फिर उसी रीति कोई उत्पात होगा अथवा न जानैं क्या कोई सर्व्वनाश उपस्थित होगा एकबार मन में होता है, कि तपोवन के देखने को न आती तो अच्छा था, क्यों कि आर्य्यपुत्रके निकट रहने से कभी ऐसे क्लेशकी सम्भावना न होती एकैकबार मेरे मनमें ऐसा जान

पड़ता है, कि अब इस जन्ममें मुझे आर्य्यपुत्रका दर्शन न होगा।

सीता की ऐसी चित्तकी चञ्चलता को देख और अधिक अधीरता को जान लक्ष्मण अत्यन्त दुःखी होकर और अपने विकृत भावको गोपन करते शुष्कवदन होकर और विकृत स्वरसे कहा कि अर्य्या, आप अधीर न होवैं हमारा मङ्गल रघुकुलके देवता करैंगे, बोध होता है, कि आप सब परिवार को घर में छोड़ आयी हैं इससे आपका चित्त ऐसा चञ्चल होता है, आप-धीरज धरैं थोड़े काल के पीछे आपका चित्तस्वस्थ हो जायगा, क्यों कि मन का चञ्चल स्वभाव ही है, इससे आप अत्यन्त उत्कण्ठा न करैं।

सीताने लक्ष्मणके मुख चिह्न को देख और गद्गद वचनों को सुनकर अधिकतर कातर होकर पूछा कि वत्स! तुह्मारी चेष्टाके देखने से हमारे मन में विषम सन्देह उपस्थित होता है, मैंने कभी तुह्मारा ऐसा म्लानमुख नहीं देखा है, जो कोई अनिष्ट हुआ होतो स्पष्ट कहो आर्य्यपुत्रतो भले हैं, क्यों कि कल तीसरे प्रहर से उनका दर्शन हमको नही हुआ है, बोध होता है, कि उनका दर्शन होता तो ऐसा असुख कभी उपस्थित न होता, तब लक्ष्मणने कहा, आर्य्या आप व्याकुल न होवै आपकी उत्कण्ठा और क्लेश देखकर

मैंभी उत्कण्ठित और लज्जित हुआ था इस लिये आपने मेरे स्वर विलक्षण और मुख सोचका अनुमान किया था, और कुछ वास्तविक न था क्योंकि जिस प्रकार चिन्ता अधिक करोगी उसी प्रकार अधिकतर उत्कण्ठा बढ़ती जायगी।

यह कहतेर गोमतीके तीरपर पहुंचे उसी समय सकल भुवनके प्रकाश करनेवाले भगवान कमलिनीके नायकने अस्तगिरके शिखर में अधिरोहण किया। और सायंकाल गोमती का तीर परम रमणीय दिखलाइ देता था उस-काल में अस्वस्थचित्त के वृत्तिवाले भी स्थिरचित्त होकर अनिर्वचनीय प्रीतिका लाभकरते हैं, सौभाग्यके क्रम से सीताका भी उपस्थित भीतर का क्लेश जाता रहा, तब लक्ष्मण देख कर सातिशय प्रीति और प्रसन्न हुआ, उस रात वहांहीं स्थिति जानकीने पथके श्रमसे और मनके उत्कण्ठासे विशेषक्लान्त होकर निद्रा और जबतक जागतीथीं तबतक लक्ष्मण सावधान होकर नाना प्रकार की मनोहर कथा कहाकरता था कि जानकी उसीके ध्यान में मग्नथीं कि और किसीके ओर ध्यान देनेको अवकाश न पाया, सचमुच दिनमें जैसा क्लेश जानकी को उपस्थित हुआ था रात्रिके समय उसका कुछ लक्षण नहीं जान पड़ता था।

फिर प्रभात समय होते हीं गोमतीके तीरसे प्रस्थान किया, सीताने बायें और दहिने के प्रदेशों को देखतीर अत्यन्त अधिक प्रीतिका लाभ किया, पूर्व्वदिन में जो सीताके असुखकाल लक्षण जान पड़ा था उसका कोई भी लक्षण अब नहीं जान पड़ता है

अन्त में चलतेर रथ भागीरथीके तीरपर पहुंचा और भागीरथीके दूसरे पार सीताका परित्याग कर्ना होगा यह विचार कर लक्ष्मण का बड़े वेगसे शोक सागर बढ़ आया और वह अपनी अश्रुधारा और भावके छिपाने को समर्थ न हुआ, तब सीताने कहा वत्स ! क्या कारण है कि तुम्हारी ऐसी चेष्टा उपस्थित हुई है, तब लक्ष्मणने नयनों की आंशुको पोछकर कहा कि आर्य्यी आप व्याकुल न होवें बहुत काल के पीछे भागीरथीका दर्शन हुआ है इससे मेरे अन्तःकरण में एक भाव उदय हुआ है और मेरे नयनों मे आंशू आने लगी हैं, और कोई कारण नहीं है, क्यों कि मेरे पूर्व्व पुरुष कपिल मुनिके शापसे भस्मीभूत हो गये थे, तब महाराज भगीरथने कितने बड़े कष्टसे भूमण्डल में गङ्गादेवी को लाये थे, तब उनका उद्धार हुआ था, बोध होता है, कि उसी भागीरथीके देखनेसे और मेरे हृदय में स्मरण होनेसे इस प्रकार का चित्त विकल हुआ है, अत्यन्त मधुर स्वभाव और सरल

हृदय सीतालक्ष्मणके कहे हुये वाक्यों को सुनकर अत्यन्त सन्तुष्ट हुई, इस प्रकार गङ्गाजीके उसपार जाने के निमित्त अत्यन्त उत्सुक होकर लक्ष्मण से वार-म्वार कहा किन्तु गङ्गाके पार जाने पर इसजन्मके लिये दुस्तर अधिक शोक सागर में डुबना पड़ेगा इस को कुछ न जान सकी।

कितने कालके पीछे नावके आनेपर लक्ष्मणने सुमन्तसारथी से कहा कि रथ इसी स्थानसे रक्खो और जानकी को नावमें चढ़ाया इस प्रकार कितने समय के अनन्तर भागीरथीके उसपार उतारा, सीता तपोवन देखने के निमित्त अत्यन्त उत्सुक होकर उसकी ओर जानेके लिये प्रस्थान किया, तव लक्ष्मणने कहा कि आर्य्या कुछ ठहरो मैं कुछ विज्ञापन करूंगा, यह कह-कर और अधोमुख होकर आंसुवहाने लगा, तव सीता आश्चर्य होकर वोलीं कि वत्स ! कुछ कहने को कहकर इतना व्याकुल क्यों हुये हो? क्या कहोगे उसे शीघ्र कहो, तुम्हारी चेष्टा देखकर हमारा चित्त नितान्त व्याकुल हुआ है, जो कहना है सो तुरन्त कहो हामारा प्राण व्याकुल होता है, क्या तुम चलने के समय आर्य्य-पुत्र का कोई अशुभसमाचार सुनकर आये हो अथवा और कोई अशुभसमाचार हुआ है, उसे सुन आये हो, क्या हुआ है, शीघ्र वोलो, तव लक्ष्मण कहने लगा कि

देती कहूं, क्या मेरे मुखसे वाक्य नहीं निकलती ? क्यों कि आर्य्यका आज्ञावर्त्ती होकर मेरे भाग्य में ऐसा होगा यह मैं सपने में भी नहीं जानता था, जो दुर्घट प्राप्त हुआ है, वह चित्त में सोचने पर मेरा हृदय फुटता है, इसके पहिले मेरी मृत्युहोती तो मैं अपने सौभाग्य की स्तुति करता, यदि मृत्युसेभी कोई अधिक दुख होता तो वहभी मुझको कल्याणकारी था, उसके होने आज आर्य्यका धर्म्म वहिर्भूत आदेश मुझे न करना पड़ता, हा विधाता मेरे भाग्य में यही लिखा था, यह कहकर और वृक्षके समान भूतल में गिर कर लक्ष्मण हाहाकार करने लगा।

सीताने लक्ष्मणकी ऐसी दुर्दशा देखकर कितने काल तक चुपचाप और हत बुद्धि होकर दण्डायमान खड़ी रहीं, पीछे अपने हाथों से लक्ष्मणको पृथिवी से उठाया और अपने अञ्चलसे उनकी आखों का आंसू पोछ कर और लक्ष्मणके कुछ सावधान होने पर पूछा कि वत्स! तुमने किसकारण से अपनी मृत्युकी कामना और किसकारण से ऐसे व्याकुल भये, क्यों कि थोड़े कारण से तुम ऐसे व्याकुल कभी नहीं होते हो, इससे बोलो कि आर्य्य पुत्रका तो कोई अमङ्गल नहीं हुआ है, क्यों कि तुम दोनों एक प्राण हो, तुम्हारी चेष्टाके देखने से बोध होता है, कि उनको ही कोई अमङ्गल

प्राप्त हुआ हैं, हम अब बुझने लगी है, कि कल हमाराभी चित्त इसी प्रकार विकल हुआ था, इससे जो हो सो तुरन्त कहकर हमारा जीवदान करो, क्यों कि हमको अधिकर दुख होता है, इस निमित्त बहुत शीघ्र कहो देर न करो हमने स्पष्ट जाना है कि हमारा सर्वनाश प्राप्त भया है, कदाचित यह न होता तो तुम ऐसे व्याकुल कभी भी न होते।

सीताकी ऐसी व्याकुलता और कातरता देख कर लक्ष्मण की शोकाग्नि शतगुण अधिक प्रबल हुई, और नयनयुगल से अत्यन्त अश्रुधारा वहने लगी और कण्ठा- वरोध न होने से उसके मुख से कोई वाक्य नहीं निकल सकी जितनी निठुरता होवै परन्तु वह तो कहनाही पड़ैगा यह विचार कर लक्ष्मण कहने के लिये वारम्बार चेष्टा करने लगा किन्तु किसी प्रकार से उसके मुखसे वैसी निठुर वाक्य न निकल सकी और उसकी ऐसी दुर्दशा देख कर सीता उसका हाथ पकड़कर और व्याकुलचित्त होकर अधीर वचनों से वारम्बार यह कहने लगी कि वत्स! अब और देर न करो क्यों कि आर्य्यपुत्रने जो आदेश दिया है, वह जितना निठुर हो परन्तु तुम तो शीघ्र कहो और तुम कुछ संकोच न करो, मैं अनुमति देती हूं कि तुम निशंकचित्त होकर कहो तुमारी कथा सुनकर और भाव देखकर स्पष्ट बोध होता

है, कि हमारी ही अभाग्यता प्राप्त भई है इससे क्या हुआ है शीघ्र कहो और विलम्ब न करो, मैं और एक मुहूर्त्त ऐसे समयमें नहीं रह सकती हूं, जो हो उसे कहकर मेरे प्राणकी रक्षा करो, बोलो आर्य्यपुत्रका तो कोई अमङ्गल नही हुआ है, क्योंकि उनके मङ्गल होनेसे हमारा सर्व्वनाश होय तो हम को कुछ इतना दुख नहीं, हमारी चिरका अभय और आर्य्यपुत्र की दोहाई है, जो कहना है, उसे शीघ्र कहो और अब विलम्ब करने से हमको जीते नपाओगे जो शपथ देकर हमारे प्राणका बध करना न होय तो शीघ्र कहो और अब विलम्ब न करो।

सीताकी ऐसी दुखी अवस्था देखकर लक्ष्मण मनमें विचार करने लगा कि और विलम्ब करना योग्य नहीं-यह विचार अपने चित्तको स्थिरकर अधिक कष्टसे कहने लगा कि आर्य्या कह क्या कहने मे मेरा हृदय विदीर्ण हो जाता है, आप एकाकिनी रावणके गृहमें रहीथीं इस कारण पौरगण और जानपदगण आपके चरित्रके विषयमें सन्देह कर अयशकी बोली बोला करते हैं, आर्य्यने इसको सुनतेहीं एकाएक स्नेहदया और ममता को छोड़कर अपवादके दूरकरनेके लिये आपका परित्याग किया है, और मुझे यह आज्ञा दिया है, तुमलेजाकर तपोवन के दर्शनके छलसे वाल्मीकिके आश्रममें छोड़ आओ।

यह कहकर लक्ष्मण भूतल में मूर्छित होकर गिर पड़ा, सीताभी इसके श्रवण मात्रसे पवनसे तोड़ी हुई कदलीके समान भूतलशायिनी हुई, कितने कालके पीछे लक्ष्मणने चैतन्य होकर अनेक यत्नों से जानकीको चैतन्य कराया, तब जानकी सावधान होकर फिर उन्मत्तसी लक्ष्मणका मुख देखने लगीं पीछे लक्ष्मण हतबुद्धिके तुल्य और चित्रार्पित चित्रके समान अधोमुख आंसु-बहाता दण्डायमान खड़ा रहा, कितने समयके पीछे सीताके नयन युगलसे प्रबलवेग वाष्पवारि बहने लगी, और अधिकतर ठण्ढी सांस आने लगी और सब शरीर कांपने लगी, उनको देखकर अत्यन्तव्याकुल होता लक्ष्मण सीताको प्रबोध देनेके लिये चेष्टा करने लगा, परन्तु क्या कहकर प्रबोध देऊं इसका कोई उपाय न देखा तब हतबुद्धि होकर केवल अश्रुविसर्जन करने लगा।

इसीप्रकार कितने समयके पीछे सीताने अपने चित्तको स्थिर करके लक्ष्मण से कहा किसका दोष देवैं यह सब हमारे अभाग्यका दोष है, नहीं तो महाराजा की कन्या महाराजा की बधू और महाराजा की महारानी होकर कोई कभी हमारे समान बहुत कालकी दुःखिनी हुई है, बूझती हूं कि नारीका हमारा जन्म केवल दुःख ही भोगने के लिये हुआ है, अन्तमें

यह अवशेष जो हमारी अवस्था ऐसीबीतैगी यह किसके मनमें थी बहुत कालके पीछे आर्य्यपुत्रके समागम होनेसे हमने विचारा कि अब से हमारे दुखका अन्त हुआ, किन्तु विधाताने हमारे भाग्यमें सहस्त्रगुण अधिक दुखही लिखाथा, हायरे विधाता तेरे मनमें ऐसा ही था।

यह कहतेर जानकीका कण्ठरोध होगया वेकुछ देरतक न बोलसकी पीछे बड़ी लम्बी सांसभर कर कहने लगीं कि वत्स! लक्ष्मण हमने जन्मान्तर में कितना पाप किया है, जिसको नहीं कहसकती हैं, नहीं तो विधाताने हमारे भाग्य में इतना दुख क्यों लिखा है, अथवा विधाता का क्या दोष है, सब अपनेर कर्म्मकाफलभोग करते हैं, पूर्वजन्ममे मैंने जन्मान्तर में जैसा कर्म्म किया था इस जन्ममें भी वैसाही फल भोग करती हूं, जाना जाता है, कि किसी पतिप्राणा कामिनीका पति से वियोग किया था, उसी महापापसे हमारी आज यह दुर्दशा नहीं तो आर्य्यपुत्र का हृदय दया स्नेह और ममता से परिपूर्ण और मैंतो अत्यन्त पतिप्राणा और शुद्धचारिणी हूं यह भीवे अच्छे जानते हैं, तथापि ऐसे समय हमारा परित्याग करते हैं, वह केवल हमारे जन्मार्जित कर्म्मके फलका भोग है, वत्स! मैं वनवासमें अधीर नहीं हूं आर्य्यपुत्रके सहवास बहुत काल तक वनवास था उस

में भी एकदिन एकमुहूर्त्तके लिये मेरे अन्तःकरणमें दुःखका लेश भी न था, आर्य्यपुत्रके साथ यावज्जीवन का वास होता तो हमको कुछभी क्लेश न होता, सो जो हो सो हो परन्तु मेरे अन्तःकरण में यही दुःख होता है कि आर्य्यपुत्रने किस अपराध से परित्याग किया है, मुनिपत्नियोंके पूछने पर मैं क्या कहूंगी, क्यों कि वेलोग आर्य्यपुत्रको करुणासागर करके जानती हैं, मेरे प्रकृतकारणके कहने में वे लोग कभीं भी विश्वास न करैंगी, वे लोग अवश्यजानैंगी कि जानकीने कोई घोरतर अपराध किया है, इस लिये राजाने इसका परित्याग किया है, वत्स ! कहने को क्या है जो यह मेरा गर्भ न होता तो इसी काल तुम्हारे सन्मुख जाह्नवीके जल में प्रवेश कर प्राणत्याग करती और हमारे जीवनके धारण करने में क्या फल है बोलो ऐसी अवस्था में भी क्या प्राण रखना चाहिये मुझे यही आश्चर्य्य है कि आर्य्यपुत्रने परित्याग किया है यह सुनकर मेरा प्राण परित्याग क्यों न हुआ, जानती हूं कि मुझसा कठिन प्राण किसीका नहीं है, नहीं तो अब तक क्यों नहीं निकल गया, अथवा विधाताने हमको बहुतकाल की दुखिनी करनेका संकल्प किया है, तो प्राणके त्यागहोने से उनका संकल्प विफल हो जायगा इस लिये प्राणकाधारण है।

इस प्रकार आक्षेप और विलाप करती२ सीतावड़े

दीर्घनिश्वासके सहित हाय यह क्या हुआ ऐसा कहकर फिर मूर्छित होकर पृथिवी में गिर पड़ी, सुबोध लक्ष्मण देखकर और सुनकर नितान्त कातर और शोक से व्याकुल होकर बड़ी धारा से वाष्पवारि मोचन करने लगा, इस भान्ति रामचन्द्र जो कभी नहीं देखीगयी और कभी नहीं सुनीगई ऐसी लोकप्रियता यह अपूर्व्व अनर्थका मूल है, यह विचार अत्यन्त अधिक दुखी और मरनापन्न होकर कहने लगा कि जो इसके पहिले मेरी मृत्यु होती तो ऐसा लोकविगर्हित और धर्म्मविवर्जित विषमव्यापार मुझे न देखने में आता, मैं आर्य्यके आज्ञा पालनके कार्य्य में सम्मत जो हुआ हूं सो मैं ने बड़ा असत्कर्म्म किया है, मेरे समान पाषण्डो और पाषाण-मय और कोई नहीं है, नहीं तो ऐसे निष्ठुर कर्म्मके भारका ग्रहण क्यों किया है, और किस प्रकार ऐसी सरल सहृदय और शुद्धचारिणी पतिप्राणा कामिनीके ऐसे सर्व्वनाश की कथाका सुनना और जो आर्य्यके आदेश के प्रतिपालन मे पराङ्मुख होता मैं इस जन्मके लिये उनका विरागभाजन और जन्मान्तर मे नरकगामी होना पड़ता वहभी मुझको सहस्रगुण उत्तम था, सब प्रकार मैंने असत्कर्म्म किया है, हा विधाता ! क्यों तुमने मुझे ऐसे कार्य्य में प्रवृत्त किया है, हा कठिनहृदय ! अब तक तो विदीर्ण क्यों नहीं होता है, हा कठिनप्राण ! तुमने

अब तक प्रस्थान क्यों नहीं किया है, हा दग्धकलेवर! अब तक सम्पूरण अवयवों से विशीर्ण क्यों नहीं होता है, और मैं आर्य्याकी ऐसी अवस्था देख नहीं सकता हूं, हा आर्य्य! तुम जो ऐसे कठिनहृदय हो ऐसा मुझको सपने मे भी नहीं ज्ञात था, जो तुमारे मनमें यही था तो तुम आर्य्याके उद्धारके साधन में इतना सचेष्ट क्यों हुये थे, उसका क्या प्रयोजन था, दशाननके हरणकरके और लेजाने के पीछे उन्मत्त और हतचेतन होकर हाहाकार करके फिरने का क्या प्रयोजन था, तुम अन्त में यह कार्य्य करोगे यह कहते तो हमलोगोंने लङ्काकी लड़ाई में दुसह क्लेशकी परम्परा को क्यों सहन किया था जोहो, परन्तु तुम्हारे समान भूमण्डल में निरदई और कोई नहीं है।

कितने काल तक रामचन्द्रकी इस प्रकार निन्दा और भर्त्सनाकर लक्ष्मण अपने बड़े शोकावेगको रोकता हुआ सीताके चैतन्य कठोर वाक्य से अब कारज करने को यत्नवान् हुआ, चेतनाके होने पर कुछ काल स्तब्ध-भाव होकर और स्नेह से सीताने लक्ष्मणको कहा कि वत्स! धीरता का अवलम्बन करो और अब विलाप और परिताप न करो सब भाग्यका फल है, हमारे भाग्य में जोथा सो प्राप्त हुआ है, इससे तुम अधीर नहो शोक को रोको हमारी चिन्ताको छोड़कर आर्य्यपुत्रके पास

जाओ वेभी हमारा परित्याग करके अधीर और व्याकुल हुये हैं, इस में कुछ सन्देह नहीं इस लिये जिससे उनका शोक दूर होवै उस उपाय में यत्न करो, और उनसे कहना कि हमारा परित्याग किया है, अब आपको छोभ करना अच्छा नहीं है, क्यों कि उन्होंने अच्छे विचार का काम किया है, कि प्राणके बदले भी प्रजाका पालन करनाही राजाका प्रधान धर्म्म है, हमारे परित्याग करने सेभी राजधर्म्मका पालन करना ही चाहिये हम उनका मन जानती हैं, उन्होंने लोकापवादके भयसे हमारा परित्याग किया है, इसमें हमें कुछ सन्देह नहीं-उनको शोक और छोभ को छोड़ कर प्रजाका पालन करना चाहिये उनके चरण मे हमारा प्रणाम कहकर कहना कि हमको लोकापवादके भयसे अयोध्या से निकाल दिया है, परन्तु अपने चित्तसे एका एक दूर न करैं, मैं तपोवन में रहकर इसी उद्देश और एकचित्त से तपस्या करूंगी कि जन्मान्तर में भी यही पति होवैं और उनको यह विशेष कर कहना कि अपनी भार्य्या जान कर त्याग किया है, पर सामान्य प्रजाके समान मुझे भी जाना करैं क्यों कि वे सम्पूर्ण सागर पर्य्यन्त पृथिवीके अधीश्वर है, मैं कहीं रहूं तो उनके ही अधिकार में यह कहकर सीता अत्यन्त शोकाकुल होकर और कितने समय तक मौनावलम्बन कर रहीं पीछे अधिक अधीर

खरसे कहने लगीं कि लक्ष्मण! हमारे भाग्य में जोथा सो हुआ है, हम उसकारण कातर नहीं हैं, और पीछे आर्य्यपुत्रके मनमें क्लेश होवेगा यह विचार कर हम अधीर हैं, उनसे बड़े विनयसे कहना कि वे आपने शोक को त्यकर शीघ्र स्वस्थचित्त होवें हमारे क्लेशका अन्त हुआ है, यह यथार्थ है, परन्तु हम उनकी क्षणमात्र दोष न देवेंगी, हमारा जैसा भाग्यथा तैसा ही हुआ है, इस कारण वे क्षोभ न करैं वत्स! तुमसे हमारा यह अनुरोध है, कि तुम सर्व्वदा उनके निकट रहना क्षणकालके लिये भी उनको एकाकी रहने न देना क्यों कि एकाकी रहनेसे उनको उत्कण्ठा और क्लेश बढ़ैगा, और उनके अच्छे रहने से हमारा सदा अच्छा है, जिस में वे सुखसे रहैं, उस विषय में सर्व्वकाल यत्नवान् होना चाहिये, यह कहकर सीता लक्ष्मणका हाथ ग्रहण कर और बाष्पजल से भरे नेत्र और अत्यन्त करुणवचन से कहने लगी कि तुम हमारे सन्मुख शपथ कर कहो इस विषयमें कदाचित् उदासीनता तो न करोगे, हम तपोवन में रहकर जो लोगोंके मुखसे सुनपावैंगी कि आर्य्यपुत्र कुशलमें हैं, तो इसके सुनने में हमारा सब दुखदूर होजागया।

यह कहतेर सीताके नयन युगल से बाष्पवारिकी धारा अविरल गिरने लगी, और उनकी पतिपरा-

यथता और सम्पूर्ण प्रमाणवचनकी परम्पराको सुनकर लक्ष्मणका शोकावेग बड़े प्रबलवेगसे बढ़ आया, और नयन जलसे वक्षस्थलभी जनेलगा, तब सीता लक्ष्मणको शान्त्वनापूर्व्वक कहने लगी कि वत्स। अब तुम अपने बड़े शोकावेगको दूरकर शीघ्र आर्य्यपुत्रके समीप जावो और विलम्ब न करो, वारम्बार यह कहकर लक्ष्मणको विदायकरनेके लिये व्याकुल हुईं, तब लक्ष्मण प्रणाम और प्रदक्षिण करके हाथ जोड़कर सन्मुख दण्डायमान खड़ाभया और इसीप्रकार अश्रुलोचन होता और अधीर वचनोंसे कहने लगा कि मैं आर्य्याका अत्यन्त आज्ञावर्त्ती हूं यह आपको पहिले से विदित है, जब जो आज्ञा करती हैं उसी समय फिर कहने की अपेक्षा के विना उस आज्ञाका पालन करता हूं, प्राणान्तका स्वीकार करके भी अग्रजकी आज्ञाका पालन करना अनुजका प्रधान धर्म्म है, मैं उसी अनुरोध से धर्म्मका अनुवर्त्ती होकर आर्य्यकी यह विषम आज्ञाका पालन करने को आयाथा, और मैंने जो पाषाण हृदयके कार्य्य-करनेका भारग्रहण किया था सो शीघ्र किया, मेरी प्रार्थना यह है, कि मेरे ऊपर जो आपका अनिर्व्वचनीय स्नेह और वात्सल्य है वह किसी प्रकार अन्यथा नहोवै, और आर्य्यकी आज्ञाके अनुसार ऐसा क्रूरकर्म्मका आचरण

मैने किया है, सो आप कृपाकर इस अपराधको क्षमा करें।

लक्ष्मणको इसप्रकार शोकाभिभूत देखकर सीता कहने लगी कि वत्स! तुम्हारा अपराध क्या है, तुम क्यों अकारण इतना परिताप करते हो तुम्हारे ऊपर कष्ट अथवा असन्तोष यह बात दूर रहै, हम काय और वाणी से देवताओंके निकट यही प्रार्थना करती है, कि तुमारे गुणके समान जन्मान्तर में भी हमको देवर मिलै तुम चिरञ्जीव रहो, और अयोध्यामे जाकर आर्य्य-पुत्रके चरण में हमारा प्रणाम और भरतशत्रुहन और हमारी भगिनियोंको स्नेह से सम्भाषण कर आशिष कहना और सासुदेवियोंको भगवान् ऋष्यशृङ्गके आश्रमसे लौट आयेपर उनके चरणमे साष्टाङ्ग प्रणाम कहना और वत्स! तुमसे एक बात कहेतीं हैं, कि हम चिरदुखिनी हैं, हमारे भाग्यमें विधातरने एकभी सुख नहीं लिखा है, इसलिये हमारा जो सर्व्वनाश प्राप्त हुआ है, इसें हम दुखी नहीं है, किन्तु यह करना चाहिये कि हमारी बहिन लोग दुख न पावें, हमारे निमित्त वे सब अत्यन्त शोकाकुल होंगी सो तुमसे जहां तक हो सके वहां तक उनके शोकके निवृत्त वारम्वार होने के विषयमें तुम तीनोंजने यत्नकरना उनके सुखसे रहनेमें हमारा अनेक दुख निवारण होगा, उन लोगों

को कहना कि हम अपने कर्मोंका फल भोगती हैं, और हमारे निमित्त शोकाकुल होना और लोप करनेका प्रयोजन नहीं है।

यह कहकर स्नेह से पूर्ण वारम्वार आशीर्वाद कर सीताने लक्ष्मण प्रस्थान करने को कहा तब लक्ष्मणने आंसुओं से भरेनेत्र और गद्गदवचनों से कहा आर्य्ये! हमारा अपराध आप क्षमा करैं, ऐसा हाथ जोड़ फिर प्रणाम और प्रदक्षिणा कर नावपर चढ़े तब सीता एक टक देखने लगी, नाव थोड़े कालके पीछे गङ्गाके दूसरे पारजा पहुंची और लक्ष्मण तीरपर उतरे इसप्रकार कितने समय तक सजलनयन जानकी को देखते रहे और आंसुवहाते२ रथ पर चढ़े और रथ चलनेको आरम्भ कियातो जहांतक दिखलाई देताथा लक्ष्मण अनिमिष-नयन से सीताको देखने लगे, और सीता एकटक लक्ष्मणके रथपर देखने लगीं, और रथ क्रमर से दूर चलागया तब लक्ष्मण सीताको न देखसके और हाहा-कार कर और शिरपीट२ कर रोने लगे और रथके आंखें।के देखने के बाहरजाने पर सीता यूथविरहित मृगीके समान बड़े ऊंचे स्वरसे रोने लगीं।

सीताके रोनेके शब्दको सुनकर निकटके ऋषि-कुमारोंने के शब्दके होनेके समीप आकर देखा कि एक असदृश्यरूपा कामिनी हाहाकार और अशेषविध

परितापकर और शिरपीट२ बहुविध विलापकरती है, उसको देख वे सब अपने कोमल हृदय में अत्यन्तकरुणा से परिपूर्ण हुये, और सबों ने शीघ्र वाल्मीकि जीके पास जाकर और विनयसे नम्रवचनों से कहा कि भगवन्! हम से फल फूलकुश और समिध ले आने के निमित्त प्रति-दिन भागीरथीके तीरके निकट वनमार्गों में भ्रमते हैं, और अकस्मात् स्त्रीलोक का आर्त्तनाद सुना हैं, इसप्रकार इधर उधर खोजने में कितने समयके पीछे देखा कि एक अलौकिक रूपकी सम्पन्नका मनी नितान्त अनाथाके तुल्य अधिक अधीर होकर बड़े ऊंचे स्वरसे रोती है, और उसके देखने से बोध होता है, कि जैसा कमलादेवी ने भूमण्डल में अवतार लिया है, पर वह किस कारण रोती है, इसका भेद कुछ जान नहीं सकते हैं, परन्तु उसका कातरभाव देख और विलापके वाक्यों को सुनकर हम सबका हृदय फटगया है, और हमारा ऐसा साहस न हुआ कि उसको कोई बात पूछसकें, तब आपके समीप आकर सम्वाद जनाकर उचित विचार करने के निमित्त शीघ्रता में होकर आये हैं, अब जो उचित हो वह करें।

महर्षि ऋषिकुमारोंके मुखसे यह वृत्तान्त सुनकर उसीसमय भागीरथी के तीरपर आये और इस भान्ति सीताके सन्मुख खड़ेभये और मधुर सम्भाषणपूर्वक धीरेर कहने लगे कि वत्से! विलापका परित्याग

करो किस कारण तुमने हमारे तपोवन में आगमन किया है, हम तुम्हारे आनेके पहिले हीसे समस्त स-विशेष कारण जानलिये है, तुम मिथिलाधिपति राजा जनक की दुहिता और कोशलाधिपति महाराज दश-रथकी पुत्रवधू इसप्रकार राजाधिराज रामचन्द्रकी पट-रानीहो, और रामचन्द्रने अमूलक लोकापवाद के सुनने से चलचित्त और सदसद्विचाररहित होकर नितान्त-निरपराध तुम्हारा परित्याग किया है, सीताने इस रीति की सान्त्वन वाक्यको सुनकर अपने नेत्रोंकी आंसु पोंछकर ऐसे सौम्यमूर्त्ति महर्षीको अपने सन्मुख देखा, और अपने गलेमें वस्त्रडाल कर उनके चरणमें वन्दना किया तब वाल्मीकीजीने रघुकुलतिलकके तनय का प्रसन्नकर आशीर्व्वाद देकर कहा कि वत्से। और अब इस स्थान में रहने का प्रयोजन नहीं है, हमारे आश्रममे चलो हम अपनी कन्याके समान तुम्हारा रक्षण करैंगे, और वहांके रहने से आपको कुछ भी क्लेश न होगा जनपदवासिलोग वनका नाम सुनने से भयाकुल होते हैं, किन्तु तपोवन में भयका कुछ सम्भव नहीं है, और हमारे तपके प्रभाव से दुष्ट जन्तु स्वभाव सिद्ध हिंसा की प्रवृत्तिका परित्याग कर परस्पर मित्रभाव कर रहते हैं, क्यों कि तपोवन की ऐसी महिमा है, कि जो सकाल वासकरै तो चित्तकी स्थिरता सम्पादित होती है, इस लिये तुमको

आसन्न प्रसवा देखते हैं, प्रसव होने पर अपत्यके संस्कार की यथाविधि संस्कार होगी, किसी विषय में अङ्गहीन न होवेगा, और समवयकी मुनिकन्या तुम्हारी सहचरी होवेंगी और उनके सहवास से तुम्हारे चित्त का विनोद होता रहेगा, विशेष कर तुम्हारी पिता हमारा सखा इससे तुम्हारा हमारे तपोवन का रहना पिता के घरके तुल्य सकल सुख संपन्न होगा, और हम सन्तान समान तुम्हारा रक्षण और पालन करैंगे इसी लिये वत्स ! अब अधिक विलम्ब न करो हमारे साथ चलो।

यह कहकर सीता को साथ ले आ कर महर्षिने तपोवन में प्रवेश किया, इस प्रकार विशेष सब विषयका मुनिकन्याओं के हाथ सीता का भार समर्पण किया, और मुनिकन्याओं को उनके मिलने से परमप्रीति और परितोष हुआ, इसी रीति जिस प्रकार शीघ्रता होती थी उसी प्रकार चित्तके स्थिरता करने को जैसे हो तैसे वे सब यत्न करने लगी।

चतुर्थ परिच्छेद सम्पूर्ण हुआ।

परिच्छेद चौथा सुभग सीताके वनवास।
देवदत्त वर्णन कियो विश्व सुख मुद राम॥

अथ पञ्चमपरिच्छेद ।

सीता को वनवास देकर रामचन्द्र अत्यन्त अधीर और अधिक शोकसे व्याकुल भये, इस प्रकार आहार विहार और राजकार्य्य का देखना आदि और जितने व्यापार थे सब को छोड़कर और लोगोंके आने को रोक कर शून्य वासभवन में एकाकी रहने लगे, क्यों कि वे सीताको शुद्धचारिणी और अत्यन्त पतिव्रता जानते थे, इस भांति पृथिवी में जितने प्रियपदार्थ हैं, उनसबकी अपेक्षा से सीताको अधिक प्रिय जानते थे, सच मुच दोनोंका एकमन और एक प्राण था, सीता जिसरीति साधुशीला और कोमल हृदय थीं रामचन्द्रभी सर्व्व अंशमें उनके समान थे, और सीता जिस प्रकार पति-प्राणा पति-हितैषिणी और पतिके सुखसे सुखिनी थीं, रामचन्द्रभी उसीके अनुसार सीतागत प्राण सीताके हित को चाहते और सीताके सुखसे सुखी थे, और घरमें राजभोगने में जो सुख उनको होता था, वनमे केवल एकसाथ रहने से गृहकी अपेक्षा से वे लोग अधिक सुखसे काटलविताते थे।

वनवास से लौठ आने पर उनलोगों की परस्पर प्रीति और अनुराग सौगुना अधिक बढ़ गया था कि वे लोग एक मुहूर्त्तके लिये भी आपसमें जूदा न होते थे,

"अर्थात् नयनो का अन्तराल न करते थे," रामचन्द्रने केवल लोककी अप्रसन्नता के भयसे अत्यन्त भक्तता को छोड़कर सीताको अयोध्यासे जुदा किया, सचमच सीताके अलग होनेका शोक उनको अत्यन्त असह्य हो उठा।

उनके भीतर बड़ा असुख छाय गया, कहने लगे कि हमने राजवंश में जन्म क्यों लिया है, और वनवाससे हम क्यों लौटकर आये हैं, और फिर हमने राज्यके भार का ग्रहण क्यों किया है, और किस प्रयोजन के लिये पौरगण और जानपदवर्गके वृत्तान्त के जानने के हेतु दुर्मुखको भेजा था, और फिर किस कारणसे हमने लक्ष्मणके उपदेश वाक्यको न सुना, और किस लाभके लिये अधिक क्रूर हृदय होकर हमने सीताको वनवास दिया और किस् प्रयोजनके लिये असार राज्यभारका परित्याग कर सीताका साथ न किया, और अब क्या कह कर मनको समझावें और क्या कहकर प्राणका धारण करें और प्रियाके वनवास देने की अपेक्षा हमारा आत्मघात होतातो सहस्रगुणा कल्याणकारी था, इत्यादि प्रकार रातिदिन रामचन्द्र विलाप और परिताप करने लगे, और दुसह शोककी सागरसे उनका शरीर जलकर अर्द्ध अवशिष्ट हो गया।

तीसरे दिन मध्याह्नके समय लक्ष्मण नितान्त(१)दीन

(१) अधिक।

मन होकर अयोध्या मे प्रवेश किया, इस प्रकार सबके सम्मुख रामचन्द्र के वासभवन में जाकर और हाथ जोड़ कर उनके सम्मुख खड़ा होकर आंसु वहाता हुआ और गदगद वचनों से निवेदन किया की, आर्य्य! दुरात्मा लक्ष्मण आपकी आज्ञा का प्रतिपालन कर आया है, तव रामचन्द्र लक्ष्मणको देखकर और इसकी वाक्यको सुनकर वोले हा प्रिये! यह कहकर और मूर्च्छित होकर पृथिवी में गिरपड़े, फिर लक्ष्मण प्रत्यक्ष शोकके भार से दुखी होकर बहुत यत्न से उनको चैतन्य किया तव राम कितने समय तक बन्द नेत्रों से लक्ष्मणके मुखको देखकर और हाहाकार तथा अति दीर्घ वाष्पवारि छोड़ते वोले कि, भाईलक्ष्मण! तुम जानकी को कहां रख आये हो, हम उसके वियोग से किस प्रकार प्राण का धारण करें, क्यों कि और लेश नहीं सहा जाता," यह कहकर और लक्ष्मणके कण्ठ में हाथ डालकर वड़े ऊचे स्वर से रोने लगे।

तव दोनो कितने कालतक अधीर होकर वाष्पवारि विमोचन करने लगे, पीछे लक्ष्मण वड़े कष्टसे अपने शोकावेगको रोककर रामको ठण्ढा करने लगे, कुछ सावधान होकर रामचन्द्र ने लक्ष्मणके सुखसे सीताके विलाप आदि कथाके आद्योपान्त समुदायको श्रवण किया, और उसको सुनकर नेत्रजलसे उनका वक्षःस्थल भीज गया, और अधिकर ठण्ढी सांस आने लगी, और कण्ठावरोध

होगया, कि उनको बोलने की शक्ति न रही थी, इस प्रकार पूर्व्वापर सब व्यापार अन्तःकरण में विचारकर दुःसहशोकके भारको जब न सह सके तब फिर मूर्छित भये।

तब लक्ष्मणने फिर बड़े यतनों से रामचन्द्रको चैतन्य किया, परन्तु उनकी तैसी दशादेख कर मन ही मन विचार करने लगे कि, आर्य्य! दुस्तर शोक सागर में गिर-पड़े हैं, तो उनका इस जन्ममें स्वस्थचित्त न हो सकेगा और शोकके दूरकरने का कोई उपाय नहीं देखते हैं, इस लिये जहां तक हो सकै उनके ठाढ़ाकरने की चेष्टा अवश्य करनी चाहिये, यह विचारकर लक्ष्मणने विनय पूर्ण और स्नेह से भरे वचनों से कहा कि आर्य्य! शोक और मोहसे मूर्छित होना आपके समान महापुरुषोंको उचित नहीं है, क्यों कि आप सब समुझते हैं, कि जिस विधि विधाता की इच्छा थी सो हुई। नहीं तो आप विना कारण अथवा सामान्य कारणों से आर्य्याका परि-त्याग क्यों करते, यह किसके मनमें था, विचारकर देखिये कि संसार में कोई चिरकालके स्थायी नहीं हैं, जिसकी वृद्धि है, उसीकी क्षयभी होती है, बढ़नेवालेका गिरना होता है, संयोग होने पर वियोग होता है, इसी प्रकार जीवन होने पर मरण होता है, येही सब बहुत कालके जाने हुये संसारके पदार्थों का किसी

समयमें अन्यथा भाव नहीं देखा जाता है, यह विचार कर आपको उचित है, कि शोकको दूर करें, विशेषकर आपने सकल लोकके हितके अनुशासन के निमित्त बड़े राज्यके भारका ग्रहण किया है, इसलिये उसे जानकर आपको शोक से व्याकुल होना उचित नहीं है, क्यों कि प्रियका वियोग और अप्रियका समागम शोक का कारण है, इसमें कुछ सन्देह नहीं है।

परन्तु आपसे महानुभावको अत्यन्त शोकाकुल होना कदापि उचित नहीं है, साधारण लोग शोक और मोह से मोहित होते हैं, इसी लिये अब धैर्य्य का अवलम्बन करें। इस प्रकार अन्तःकरण से तुच्छ शोकको निकाल कर राजकार्य्य में मनको लगावैं, और यह भी आपको विचार करना आवश्यक है, कि आपने केवल लोककी अप्रसन्नता के भयसे आर्य्याका परित्याग किया है, और आर्य्याको गृह रखने से प्रजालोगकी विरागता होगी, तो केवल इसी शङ्कासे उनको वनवास दिया है, और आपको अभी उनके निमित्त शोकाकुल होने में उनकी आशङ्का दूर नही हो सकती हैं, सचमुच जिस दोषके दूर करने की इच्छासे आपने इस दुष्कर कर्म्मको किया है, वह दोष पहिले के समान अबभी प्रबल बना रहता है, और आर्य्याके परित्याग से कुछ फल नहीं हो सकता है।

और यहभी आपको शोचना चाहिये कि जब तक आप शोकाकुल रहैंगे तबतक राजकार्य्यको न देखसकैंगे, तो प्रजाके पालनका कार्य्य अनपेक्षित होने से राजधर्म्म परिपालित न होगा, इसी लिये सब विषयको विशेष देखकर धैर्य्यका अवलम्बन करिये, और अधिक शोक और मनो दुखकरने से किसी प्रकार श्रेयसकरी (१)नहीं है, फिर बीते पदार्थोंका सोचकरना अच्छे विचारके कार्य्यका फल नहीं है।

लक्ष्मण इसप्रकार बोलकर विरतभये(२)तब रामचन्द्र कितने समय तक मौनावलम्बन कर रहे, अनन्तर बड़े स्नेह से सम्भाषण कर कहा कि, वत्स ! तुम्हारे उपदेश के सुनने से हमारे हृदय में ज्ञानोदय हुआ है, और तुमने यथार्थ कहा है, कि हमने जिस निमित्तके लिये जानकी को वनवास दिया, और राक्षसों की भांति क्रूर कर्म्मका आचरण किया, अब उसके हेतु शोकाकुल होने से वह सब विफल हो जाता है, विशेष कर शोकका यही धर्म्म है, उससे अभिभूत होने में उसी की अधिकर वृद्धि होती है, क्यों कि शोक से व्याकुल लोग अपने मनोरथ को नहीं पा सकते हैं, और कर्त्तव्य कार्य्य में केवल असावधानी से पाप में ग्रस्त होते है, इसी लिये इस समय से लेकर अब हम शोकके रोकने में

---

(१) कल्याणकारी। (२) चूप भये।

यत्न करेङ्गे, और प्रतिज्ञाकर कहते हैं, कि अब हम शोकके वशमें न जावेंगे, और मन्त्रीवर्ग को बोलो कि कल से रीतिके अनुसार हम राजकार्य्यको किया करेंगे, वे लोग जैसा कि सब समुदाय एकट्ठा होकर कार्य्यालय में उपस्थित रहैं।

यह कहकर रामचन्द्र अधोमुख कितने समय तक मौनावलम्बन कर रहे पीछे अश्रुसे पूर्णनयन और गदर बचनों से कहने लगे कि, हाय! राजत्व किस विषम असुख और विपत्ति का स्थान है, लोग किस सुखभोगने की अभिलाषा से राज्यके अधिकारकी कामना करते हैं। कुछ बुझ नही पड़ता, देखो राज्यका भारग्रहण कर इस जन्मके लिये हमने जलाञ्जलि दिया अत्यन्त अधिक क्रूर हृदय हो कर नितान्त निरपराधी प्रिया को वनवास दिया है, अब उनके निमित्त अश्रुपात करना हमको उचित न रहा, और देखो राजके लाभ से यह फल हुआ है, कि जो हमको स्नेह, दया, ममता और मनुष्यत्व पर्य्यन्त सब छोड़ना पड़ा, और उत्तरकाल में हमको लोग निरदई राक्षस अथवा अपदार्थ बोलकर गणना और कलङ्क करेङ्गे।

इस प्रकार कितने समय तक राजा रामचन्द्रने आक्षेप कर पीछे लक्ष्मणको विदा किया, इस रीति धैर्य्य का अवलम्बन और शोकको दूरकर दूसरे दिन प्रभात से लेकर

यथा नियम राजकार्य्य का सभाल करने लगे, इस भांति राजकार्य्यके देखने में ऐसा मनोयोग किया, कि लोगों को उनके वाहरके आकार के देखने से वोध होता था कि रामचन्द्र वड़े धैर्य्य वान् है, और अनायास दुःसह शोक को छिपाया, परन्तु उनका अन्तःकरण वारम्वार दुर्वि-सह शोक की आगसे जलने लगा, क्यों कि अत्यन्त निर-पराधप्रिया को वनवास देने के निमित्त भेजा है, यही शोक और मोह विषयुक्त वाणके समान उनको निरन्तर मर्म्म वेदना करता है, केवल लोकके विरागके भय से जानकी को घरसे निकाल दिया है, और इस समय भी उसी लोकके विरागके डरसे वाह्य आकार से शोक को छिपाया है, जिस समय वे राज सिंहासन में वैठते थे उस काल मूर्त्तिमान धर्म्मके समान चित्तको स्थिर कर राजकार्य्यको देखते और करते थे, उस समय उनके देखने से लोगों को यह बोधहोता था कि भूमण्डल में(१) उनके तुल्य धैर्य्यवान पुरुष और कोई नही है, किन्तु राजकार्य्यके देखने के पीछे विश्राम स्थानमे जाकर अधिक से अधिक विकल चित्त होते थे।

तब लक्ष्मण सदा उनके निकट रहा करते थे और उनके समझाने के लिये बहुत प्रकार का उपाय करते थे।

---

(१) पृथिवी मे।

परन्तु लक्ष्मणके प्रबल वाक्य से उनके शोककी अग्नि अधिक प्रबल होती थी, सचमुच वे केवल हाहाकार और वाष्पमोचन और अपनी निन्दा और सीताके गुणोंकी स्तुति करते२ विश्रामके समय को विताते थे, इस प्रकार दुरनिवार सीताके निकालने के शोक से अधिक व्याकुल होकर वे दिन२ क्षय-मलीन दुर्व्वल और सर्व्व विषयोंसे अत्यन्त निरुत्साह होने लगे, सचमुच प्रजा-कार्य्यसे अधिक कोई कार्य्य में उनकी प्रवृत्ति और उत्साह न होता था।

इसके कितने दिनोके पीछे जानकीने दो यमल कुमार अर्थात् दो बालक साथ उत्पन्न किया, तब महर्षी वाल्मीकि जीने उनका यथाविधि जातकर्म्म आदि क्रिया कलाप का निर्व्वाह कर ज्येष्ठका नाम कुश और कनिष्ठका नाम लव रक्खा, और मुनिकन्यायोंको सीताके सन्तानोंका प्रसव अधिक से अधिक हर्ष देने लगा, और समस्त आश्रम में बड़े आनन्द का कोलाहल होने लगा, सीता दुःसह प्रसवकी वेदनासे कुछकाल तक अचेतनके तुल्य बऊधा ऊई थीं, पीछे उनको प्रसन्न चित्त देखकर मुनिकन्या प्रसन्नमन और प्रीतिपूर्ण वचनों से कहने लगीं कि जानकी आज बड़े आह्लाद का दिन है, सौ-भाग्यके क्रमसे तुमने परम सुन्दर दोकुमार उत्पन्न किये है, सीता इसके सुनने मात्रसे अत्यन्त प्रफुल्ल और आनन्द

के सागर में मग्न भई, परन्तु कुछ कालके पीछे शोकके भारसे अधिक व्याकुल होकर बड़ी धारासे आसूं बहाने लगीं, तब उनकी यह दशा देखकर मुनिकन्याओंने स्नेह से सम्भाषण करती पूछा कि, अयि प्यारी जानकि ! ऐसे आनन्दके समय आप शोकाकुल क्यों भई हैं, तब वाष्प-के भरने से जानकीका कण्ठरोध हुआ था इससे जानकीने कुछकाल तक उत्तर न दिया, पीछे अपने बढ़े शोकावेगको रोककर कहा, अयि प्रिय सखीगण ! तुम-लोग कुछ नहीं जानती हो, जो हम ऐसे आनन्दके समय किस कारण से शोकाकुल हुई हैं, पुत्र उत्पन्नकर स्त्रियोंको बड़ा हर्ष होता है यह यथार्थ है, परन्तु हमारी यह क्या अवस्था है, जो इस आनन्दके समय उपस्थित हुई हैं, हमारा इस जन्मके लिये सब सुख सब इच्छा और सब आह्लाद सब दूरहो गये हैं, जो ये हत-भाग्य हमारे गर्भ में न होते तो जिस मुहूर्त्त में लक्ष्मणने परित्याग की बातको सुनाया था, उसी समय जाह्नवीके जलमें बैठकर प्राणत्याग करतीं, अथवा अन्य-प्रकार से आत्मघातिनी होती, हमको क्या प्राणधारण करने पड़ते और लोगों के सन्मुख मुखदिखाने पड़ते।

यह कहकर और अधिक शोक से व्याकुल होकर जानकी बड़े वेगसे आंसु बहाने लगीं, तब मुनिकन्या सीताके ऐसे हृदयके दुखदाई वाक्यों को सुनकर अत्यन्त

दुखी हुई और स्नेहयुतवचनों से कहने लगीं, कि प्रिय सखि ! शोकके वेगको रोको और जो आप कहती हैं, सो यथार्थ हैं, परन्तु अधिक दिन तुमको इस अवस्थामें काल विताना न पड़ेगा, राजा रामचन्द्रके बुद्धिका विपर्यय हो गया है, क्यों कि उन्होने कर्त्तव्य में विमूढ़ होकर इस प्रकार अदृष्ट (१) और अपूर्व्वक्रूरकर्म्मका आचरण किया है, हम सबोने अपने पिताके मुखसे सुने हैं, कि तुम अतिशीघ्र परिगृहीत होगी, इस लिये शोकको दूर करो।

मुनिकन्याओं के वाक्यों को सुनकर सीताके दोनों नेत्रोंसे वाष्पजल बहने लगे, और उनके देखने से मुनिकन्याओंका कोमल हृदय द्रवीभूत हो गया, तब वे लोगभी शोकसे व्याकुल होकर अधिक आंसू वहाने लगीं।

कुमारों की शुक्लपक्षके चन्द्रमाके समान दिनो दिन वृद्धि होती देखकर जननीके नयन और मनको अकथ-नीय(२)आनन्द उत्पन्न होने लगा, जब वे लोग सीताको तुतली बोलीसे मा मा बोलकर पुकारते थे तब सीता निकट होने से उनके मोतीके समान दन्तकलापों (२)देखतीथीं,

---

(१) जोनहीं देखा गया। (२) जो कहने के योग्य नहीं।
(२) दांत के समुदाय।

रामचरित के अवलम्बन करके रामायण नाम बहुत बड़ा महाकाव्य बनाया था, सो सबके पहिले उस अमृत रसके बरसानेवाले महाकाव्य को रामचन्द्र के पुत्रों ही को अध्ययन कराया था, उन्होंने उस विचित्र ग्रन्थ को आद्योपान्त कण्ठ किया था, और इस प्रकार माता के निकट मधुर स्वरसे पढ़ कर उनके शोक को दूर करने लगे। एकादशवर्ष में महर्षीजी ने उनका उपनयन कर उन को वेद का अध्ययन कराया था, और वे दोनों बालक एकवर्ष में सकल वेद और शास्त्र में पारगत भये ॥

क्रम क्रमसे कुश और लव द्वादशवर्षके भये किन्तु इतने दिनों तक वे लोक कुछ भी नहीं जान सकते थे, केवल वे लोग अपने को ऋषि कुमार और अपनी जननी को ऋषिपत्नी कर जानते थे, सच मुच जानकी जिस भावना से तपोवन में काल विताती थीं उसके देखने से ऋषिपत्नी से भिन्नकर कोई नहीं जान सकता था, इसी प्रकार दोनों सहोदरों के आचार और अनुष्ठान के देखने से ऋषिकुमार से भिन्न किसी को बोध नहीं हो सकता था, वे लोग जानकी को अपनी जननी[1] जानते थे, परन्तु मिथिलाधिपति[2] की कन्या और कोशलाधिपति[3] की महारानी यह नहीं जानते थे, वालमीकी-

१ मा। २ राजा जनक। ३ राजा रामचन्द्र।

जीने बड़े यत्न पूर्व्वक उन के जानने को गुप्तकर रक्खा था, इस प्रकार तपोवन वासी लोगोंको भी ऐसा साव-धान कर दिया था कि कोई उन कुमरोंके सन्मुख इस विषय का प्रसङ्ग न करैं, और सीता को भी निषेध[१] कर दिया था कि लड़के को अपना विशेष परिज्ञात न करना चाहिये, इसी के अनुसार सीता उनके निकट कभी भी कोई कथा न कहती थीं, और उन लोगों ने राजा रामचन्द्र और सीता की रामायन में विशेष वृत्तान्त का पाठ किया था, परन्तु तब तक वे लोग अपनी जननी को राजा जनक की कन्या अथवा राजा रामचन्द्र की महारानी है इस बात को न जान सके थे, सचमुच उस महाकाव्य में निज जनक और जननी के वृत्तान्त का वरणन हुआ है यह कह कर नहीं जान सकते थे, इस प्रकार इतने काल पर्यन्त कुश और लव अपने परीज्ञान में सम्पूर्ण अनधिकारी थे॥

जननी के परम स्नेह से उपाय के बिना जितने दिनों तक सन्तानो की जीवन रक्षा नहीं हो सकती थी, तावत काल जानकी सब शोक को विस्मरण पूर्व्वक बहुत मन लगा कर और सब कामों को छोड़ कर कुश और लवके लालन और पालन मे तत्पर रहीं थीं, और जब उनके बालकपनेके कुछ समय बीत जाने पर

१ मना।

जननी के उपाय की वैसी अपेक्षा न रही थी, तब सीताने उन लोगों के विषय में निश्चिन्त हो कर ऋषि पत्नियों के समान तपस्या करने में अपने मन को लगाया था, और रामचन्द्र के सर्व्वांशमें मङ्गल होने की कामनाहीं उनके तपस्या का एक निमित्त था, क्योंकि यद्यपि उनका रामचन्द्रने अत्यन्त विना अपराध परीत्याग किया था, तथापि एक दिन वा एकक्षणके लिये सीता ने अपने अन्तःकरण में उनके निमित्त क्रोध वा रोष[१] कभी भी नहीं किया था, और जो बड़े दुस्तर शोक सागर में पड़ी थीं इस को केवल अपने भाग्य का दोष जाना था, भ्रमके क्रमसे भी अपने चित्तमें ऐसी न शोची थीं कि जिस से रामचन्द्र को कुछ दोष हो सकता था, सच मुच रामचन्द्र में जैसी परभक्ति और अनुराग था, उसमें से कुछ भी न घटा था॥

और वे देवताओं के निकट भी काय और मनसे बारम्बार रामचन्द्रके कुशल आदि काम नाहीं किया करती थीं, इस लिये कि रामचन्द्र ही को जन्मान्तर में पति पावै, और वे दिन में तपस्या आदि कार्य में तत्पर और सखीरूप ऋषि कन्याओं से घिरी किसी प्रकार अपने काल को विताती थीं, परन्तु रात्रिके समय एकाकी होनेसे जानकी को पुरनिवार शोकासन्नु प्रबल हो

---

१ अप्रसन्न।

उठता था, तब वे केवल रामचन्द्र की चिन्तामें मग्न होकर निरन्तर आंसू बहातीर रात बिताती थीं, सीता जिस प्रकार पतिप्राणा[1] थीं उसी प्रकार पतिके विरह की यातना[2] के सहने को समर्थ और धीर होती थीं॥

समय के अनुसार सब का शोक सागर शिथिल हो जाता है, परन्तु जानकी का शोक सब काल में नया ही बना रहा, इस भांति क्रम क्रम से बारहबर्ष दुःसह शोक की आगिसे निरन्तर अन्तरदाह होने पर भी जानकी अलौकिक रूप[3] और लावण्य[4] को छिपाती शरीर से केवल अस्थिचर्म्मावृत[5] और अति दुर्बल थीं॥

यह पञ्चम परिच्छेद सम्पूर्ण हुआ।

परिच्छेद पञ्चम परम, पुण्य पवित्र सुधाम।
जिसमे निस दिन बसत हैं, सहित जानकी राम॥
जो नित उठि पुनि पढ़त हैं, सहित प्रेम अनुराग।
तिन कहं रघुपति देत हैं, निज पद भक्ति सुभाग॥
देवदत्त यह समुझि कर, वर्णन किया सुप्रेम।
श्रीरघुपति अरु जानकी, होंहिं प्रसन्न सुनेम॥

---

१ पतिके जीने से जीनी। २ दुःख वा क्लेश।
३ लोक मे अलभ्य। ४ सुन्दरता।
५ हाड़ और चाम से ढका।

अथ षष्ठ परिच्छेद ।

महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी ने अश्वमेध महा-यज्ञ करने की इच्छा का निश्चय कर वशिष्ट-जावालि काश्यप-और वामदेव आदि महर्षिवर्गके निकट अपना अभिप्राय प्रगट किया, तब वशिष्टदेव साधुवाद देकर बोले कि, महाराज ! आपने उत्तम सङ्कल्प किया है, क्योंकि आप सब सागर पर्यन्त पृथिवी और सब द्वीपोंके अधिपति हैं, और सब भूमण्डलमें जैसा एकाधिपत्य का आपने विस्तार किया है, इसके पहिले किसी नर-पतिने ऐसा नहीं किया था, रामचन्द्र के राज्यमें जैसे प्रजावर्ग सुख और स्वच्छन्दतासे काल विताते हैं, तो ऐसे बड़े राज्यके भारको ग्रहणकर जिस जिस विषय का अनुष्ठान करेंगे सो सब आपका सिद्ध होगा, और राज्य करने में सब कृत्य हुआ है, केवल अश्वमेध यज्ञ अव-शिष्ट है, इस समय इसके होनेसे आपका राज्याधिकार सर्व्व अंश में परिपूर्ण हो जायगा, किसी अंशमें विकल न होगा ॥

इस लोगों ने इसके प्रथम अपने२ चित्तमें इस यज्ञके होने की चांहना कीथी, और इस विषयमें श्रीमहाराज को कहैंगे यह विचार किया था, सो महाराज ने जब आप स्वयं इस विषयमें अभिलाष किया है तब और उस विषयमें विलम्ब करना उचित नहीं है, शीघ्र उसके उपयोगी पदार्थों के लानेके लिये आज्ञा करै॥

वशिष्टदेव के चुप होने पर रामचन्द्रने निकट देशमें बैठे अनुजगण की ओर देखकर कहा कि, वत्सगण! इन्होने जो कहा है उस को तुम लोगोंने सुना है, और इस समय तुम लोगों की अनुमति इसमें क्या है, उस के जानने से हम कर्त्तव्य कार्यको करैङ्गे, महाराज की कथा को सुनकर आज्ञाकारी अनुजगणोंने उसी समय अपना अभिप्राय प्रगट कर अनुमोदन[1] किया, तब राजा रामचन्द्रने कुलपुरोहित वशिष्ट मुनिको सम्बोधन कर कहा, भगवन्! जब हमारा अभिलाष आप लोगोंको अभिमत[2] है और अनुजगणोंको भी सम्मत[3] है, तो उसके अनुयायी[4] कार्योंके अनुष्ठानके विषयमें अब सन्देह नहीं है, अब इस समय हमारी यह वासना हैं कि इस अभिलषित[5] महायज्ञ का अनुष्ठान नैमिषारण्य में होवे, क्योंकि नैमिषारण्य परम पवित्र यज्ञ क्षेत्र है, इस

---

१ प्रसन्नता। २ चाहा हुआ। ३ अपनी राय।
४ आवश्यक। ५ चाहा हुआ।

विषय में आपकी क्या अनुमति है, तब वशिष्टदेवने उसी समय अपनी अनुमति दी कि ये करें ॥

इसके पीछे रामचन्द्रने अनुजगणों से कहा, देखो व्यर्थ काल बिताना अच्छा नहीं है, इस लिये तुम लोग बहुत शीघ्र सब पदार्थ एक करो, अनुगत[1] शरणागत[2] और मित्रभावापन्न[3] नृपतियोंके निकट निमन्त्रण भेजो और समयके निश्चय पूर्व्वक सब नगर और देशमें इस वृत्तान्त को प्रसिद्ध करावो, और लङ्काकी लड़ाईमें सहायक सुहृद्वर्ग[4] को परम आदरपूर्व्वक बुलाओ, क्योंकि वे लोग हमारे सच्चे बन्धु हैं, और हमारे लिये धीरताके साथ कितना क्लेश किया था, तो उनके आने से हम परम सुखी होंगे, और उनसे भिन्न समस्त[5] ऋषिलोगोंको निमन्त्रण कराओ वे सब यज्ञके दर्शन करने को आवेंगे तो हम अपने को कृतकृत्य जानेंगे ॥

भ्रात ! तुम शीघ्र नैमिषारण्यमें जाकर यज्ञ भूमिके बनानेका उद्योग[6] करो, लक्ष्मण तुम अन्न अन्य समस्त पदार्थ एकट्ठा कर जल्द नैमिषारण्य को भेजो, देखो कि यज्ञ देखनेके निमित्त असंख्य लोगोंका समागम होगा, इसी लिये यत्नपूर्व्वक सब यावत् पदार्थ एकट्ठा

---

१ नौकर-चाकर । २ अपने आधीन ।
३ जो मित्र हैं । ४ मित्र समूह ।
५ सब । ६ उपाय ।

कराओ कि जिससे किसी विषयमें किसी को कुछ क्लेश न होवै, क्योंकि सब पदार्थके देखनेवाले तुम हो तुमको अधिक उपदेश कर्ना उचित नहीं है॥

यह कर रामचन्द्र विरत[1] भये तब वशिष्टदेवने राम से सम्भाषण पूर्व्वक कहा कि महाराज! सब विषय उचित से अति अधिक एकठ्ठा होगा इसमें सन्देह नहीं है, परन्तु हम एक विषयमें अधिक असङ्गति[2] देखते हैं, तब राम बोले कि आप किस विषयमे असङ्गति देखते हैं सो कहिये, इसपर वशिष्टजीने कहा, महाराज! शास्त्रकारोंने कहा है कि सस्त्रीक होकर धर्म्मकार्य्य का अनुष्ठान किया जाता है, इसी लिये पूछते हैं कि उस विषयमें क्या उपाय आपने शोचा है, इस को सुनते हीं रामका मुख कमल मलीन और दोनों नेत्र आंसुसे पूर्ण हो गये, और वे कुछ काल तक अधोमुख और मौन हो कर रहे पीछे बड़ी बड़ी सांसभरते और आंखों की आंसू को पोछते तैसे हीं बड़े शोकके वेग को रोकते बोले कि, भगवन्! इसके पहिले हमको इस विषय का कुछ बोध नहीं हुआ है, इस समय क्या कर्त्तव्य हैं सो आप आज्ञा करें।

तब वशिष्टमुनि कुछ समयतक एकाग्रचित्त विचार कर पीछे बोले कि, महाराज! दूसरी भार्य्याके[3] परि-

१ चुप वा बन्द। २ अल्प वा विधि हीन। ३ स्त्री वा पत्नी।

ग्रह के बिना और कोई उपाय नहीं देखते हैं, तब वशिष्टजीके वाक्य को सुन कर सब चुप चाप हो रहे, और राम अत्यन्त सीतागत प्राण केवल लोकके अपवादके भयसे सीता को वनवास देकर जीवन मृत हो रहे हैं, और उनके निमित्त राम का जो अत्यन्त अनुराग और अधिक स्नेह था सो अबतक कुछ भी नह घटी, सीता की मोहन मूर्त्ति राति दिन रामके अन्तःकरणमें बैठी थी, इससे वे भार्य्यान्तर के ग्रहण करनेमें सम्मत होगे इस बात की कोई सम्भावना नहीं थी, जो हो परन्तु वशिष्टदेवने दूसरी स्त्रीके ग्रहण करनेके विषयमें बारम्बार कहा, परन्तु उस विषयमें रामचन्द्र अनिच्छा देखलाकर मौन भाव और अधोमुख हो कर ठहरे रहे पीछे बहुत प्रकार वादानुवाद हो कर सोने की सीता की मूर्त्ति बनाकर यज्ञ का निर्वाह करना सर्व्व अंशमें कल्याणकारी है यह कह कर सिद्धान्त हुआ ॥

जब इस प्रकार सब लोग निश्चय कर चुके, तब भरतने सबके सन्मुख नैमिषारण्य को प्रस्थान किया, और इस रीति उचित स्थानमें यज्ञभूमि बनाकर उसीके अनुसार भिन्न भिन्न प्रदेशमें एकेक समुदाय के लोगों की योग्यता के उचित वासके लिये स्थान बनवाया, और लक्ष्मणने भी अति शीघ्र अनेक प्रकार की अत्यन्त अधिक आहार की सामग्री शय्या और वाहन आदि सब

एकत्र कर यज्ञ क्षेत्रमें भेजे, पीछे राजा रामचन्द्रने लक्ष्मण को रक्षक नियुक्तकर यथा विधान अश्वमेध यज्ञ के अश्वको छोड़ते मातृगण सब राजपरिवार और राज प्रधान सेना सहित नैमिषारण्य को यात्रा की ॥

कितने दिनोंके पीछे निमन्त्रित लोगोंका समागम होने लगा, सौ सौ राजा लोग बहुत बहुत प्रकारके महामूल्य भेट लेकर अपनी सेना और मर्य्यादा सहित सबोंने उपस्थित होने का आरम्भ किया, और सहस्र संख्यक ऋषि समुदाय यज्ञ के देखने की इच्छा कर क्रम क्रमसे नैमिषारण्य को आने लगे, भरत और सत्रुघ्नने राजाओं की शिष्टाचारी का भार ग्रहण किया, और विभीषण ऋषिगणों की सेवाके कार्य्यमें तत्पर भये, सुग्रीव और सब जितने यज्ञमें आये थे उनके आराधनमें नियुक्त भये ॥

वहां जब की महर्षी बालमीको जीने सीताजी की यह अवस्था देख कर और कुश लवकी बारहवर्षकी पूर्ण अवस्था देखकर मनही मन सर्व्वदा यह विचार किया कि सीता की जैसी अवस्था देखते हैं, इससे वह अधिक दिन जीवेगी यह नहीं जान पड़ता है, और इसी प्रकार कुश और लव ये दोनो राजाधिराजके पुत्र होकर यावत्[1] जीव तपोवनमें काल बिताया करें

---

१ जितना।

यह भी किसी रीति उचित नहीं हैं, क्योंकि लड़कोंका धनुर्वेद और राजधर्म्म की शिक्षा का समय व्यर्थ वितीत होता है, इस लिये जैसे हो तैसे सपुत्र सीता रामचन्द्रसे शीघ्र स्वीकृत होवें ऐसा कोई उपाय शीघ्र करना अवश्य चाहिये।

अथवा दूसरे उपाय का प्रयोजन क्या है, उचित हैं कि किसी शिष्यके हाथ समाचार देकर और रामचन्द्रको अपने आश्रममें बुलाकर अथवा हम आप राजधानीमें जाकर उनसे साक्षात्कार कर सपुत्र सीताके स्वीकार करने की प्रार्थना करैं, क्योंकि रामचन्द्र अवश्य हमारे अनुरोध को रक्षा करैङ्गे, यह कह कर महर्षी कुछ काल मौन हो कर फिर कहने लगे कि, किन्तु रामचन्द्र अत्यन्त लोकानुराग प्रिय हैं केवल लोकके विरागके भयसे पूर्ण गर्भ की अवस्थासे नितान्त[1] निरपराध जानकी का परित्याग किया हैं, तो अब हमारी बातमें सहज सीताका ग्रहण करैङ्गे इसमें संपूर्ण सन्देह है, इस लिये जो हो सो हो परन्तु कुछ समाचार न देकर निश्चिन्त बैठे रहना यह भी उचित राह नहीं हैं, और यह दोनों बालक उत्तरकालमें अवश्य कोशल देशके राज्य सिंहासन पर बैठेङ्गे, और इस समय पिताके निकट न भेजे जावें और नीतिशास्त्र आदि विषयमें विधिपूर्व्वक न शिख-

---

१ अधिक।

लाये जाने पर ये लोग प्रजाकार्य्यके निर्वाह में अत्यन्त असमर्थ और राजवर्गके रक्षणमें अधिक सामर्थ्य हीन होङ्गे, विशेषकर राजा रामचन्द्र हमको कोशलदेशके हित साधनमे यत्नहीन बोल कर अवज्ञा प्रकाश करैङ्गे, इसी लियेइस विषयमें अधिक देर करनी उचित नहीं है, और इस समय रामचन्द्र के निकट सब विषय का सविशेष सम्बाद भेजना उचित है, अथवा एकवारगी उनके समीप सम्बाद न भेजकर वशिष्टजी वा लक्ष्मणसे विचार कर्नी चाहिये, क्योंकि वे लोग देखैं इस विषयमें क्या कहते हैं ॥

एक दिन महर्षी सायंकाल की सन्ध्या और उस समय की होम विधि समाधान कर और आसनपर वैठ कर एकाकी इस चिन्तामे मगन थे, कि उसी समय राजभृत्योंने आकर रामनामाङ्कित अश्वमेध यज्ञ का निमन्त्रण पत्र उनके हाथ मे दिया, तब महर्षीने उस पत्रको पढ़ कर और परम प्रीतिपूर्व्वक उनलोगोंको विश्राम करनेके निमित्त विदा किया, और एक शिष्यो को उनके आहार आदिके देनेके अर्थ आज्ञा देकर मन हीं मन कहने लगे, कि हम जिस विषय की चिन्ता करी थी, दैव की अनुकूलतासे उस विषय की विलक्षण सिद्धि भई, इस समय विना प्रार्थनासे हम कार्य सिद्धि करैङ्गे, कुश और लव को शिष्योंके समुदाय ले चलैङ्गे और रामचन्द्रके समान इन सबका स्वरूप

देखकर जब लोग रामचन्द्रके पुत्र समझकर कहैंगे, और देखनेमात्र से रामचन्द्र का हृदय निःसन्देह द्रवीभूत होगा, इस प्रकार इसके होनेसे हमारा मनोरथ सिद्धि पथ को आपसे आप पहुंचैगा॥

मनहीं मन महर्षी इस प्रकार सिद्धान्त का विचार कर जानकीजी की कूटीपर गये, और कहा वत्से ! राजा रामचन्द्रने अश्वमेध महायज्ञ का अनुष्ठान कर हमको निमन्त्रणका पत्र भेजा हैं, सो कल प्रातःकाल हमने प्रस्थान करने का विचार किया है, और शिष्योंके साथ तुम्हारे पुत्रोंको भी यज्ञ देखनेके अर्थ ले जांयगे इससे तुम्हारी क्या अनुमति[1] है, तब सीताने उसी समय अपनी अनुमति प्रदान किया॥

तब महर्षीजीने अपनी कुटीमें जाकर और शिष्यगणको बुलाकर प्रस्तुत होनेको कहा, और कुश लवको सम्बोधन पूर्व्वक कहने लगे कि इसके पहिले तुमलोगोंने जनपद और देशका कोई व्यापार नहीं देखा हैं, और रामायणके नायक राजा-रामचन्द्र अश्वमेध यज्ञ करते हैं, सो हमने इच्छा की है कि तुम लोगोंको यज्ञ देखनेके लिये ले जायङ्गे, क्योंकि तुम लोगोंको यज्ञ दर्शन और प्रसङ्ग वसते राजा का दर्शन होगा, इस प्रकार वहां असंख्य जनपदवासी लोग एकठ्ठे होङ्गे, उन सब को देखकर तुम सब को बहुत विषयमें लो-

१ अपनीराय।

किक वृत्तांन्त का ज्ञान होगा, और उन दोनो महो-[१] दरोंने रामायणमें रामचन्द्रके अलौकिक कीर्त्ति को वर्णन का पाठ कर रामचन्द्रको अद्वितीय महापुरुष करके स्थिर किया था, सो उनको अपने आखेंासे देखके यह सोचकर उनके आह्लाद[२] की सीमा न थी, और उनसे भिन्न यज्ञके अनुष्ठानमें आये हुए जुदेर नाना देशके लोगोंका एकत्र समागम को देखके यह कौतू-हल[२] उनको प्रवल हो उठा॥

वाल्मीकी के मुखसे रामचन्द्रका नाम सुन कर सीताका शोकानल[२] प्रवल वेगसे प्रज्ज्वलित हो उठा, और दोनो नेत्रोंसे वरावर आंसु वहने लगी, जव कितने समय के पीछे उनके अन्तःकरणमें एका एक यह भाव उपस्थित हुआ कि रामचन्द्र सीता का प्राण हैं यह जान कर उनके मनमें दृढ़ विश्वास था, और उनको यह भी निश्चित था कि नितान्त व्याकुल हो कर राम-चन्द्रने हमारा परित्याग किया है, परन्तु यज्ञके अनु-ष्ठान की वार्त्ता को सुनकर यह शोचनेमें आता है कि रामचन्द्रने अवश्य भार्य्यान्तर का स्वीकार किया है यह विचार जानकी एकवार मरणापन्न भई, क्योंकि जिस सीताने वड़ी धीरतासे परित्यागके दुःख को सहा था, और रामने फिर दार परिग्रह किया है, इससे सीता के पक्षमें शोक अत्यन्त असह्य हो उठा, और पहिले

१ खुनी। २ आश्चर्य्य। २ शोक की आग।

वे सोचती थीं कि जो नितान्त निरपराधमें निकाली गई हैं, परन्तु हमारे उपर उनका जैसा अचल स्नेह और अनुराग था सो कुछ भी घटा नहीं है, यह एक पचमे स्थिर किया था, और जब फिर दार परिग्रह किया है तब अवश्य ही उस अनुराग और स्नेह का अन्यथा भाव हुआ है॥

सीता अत्यन्त व्याकुल चित्त हो कर यह चिन्ता करती थीं, और उसी समय कुश और लवने एका एक उन की कुटीमे प्रवेश कर कहा कि मा, महर्षीजीने कहा है कि कल राजा-रामचन्द्रके यज्ञ देखनेके लिये तुम लोगों को ले जायगे; और मा, जो लोग निमन्त्रण का पत्र लाये थे हम लोगोंने उनके पास जाकर और आश्चर्य्य हो कर राजा-रामचन्द्र के विषयमें कुछ कथा पूछी थी, और देखा है कि रामचन्द्रके सकल अलौकिक कार्य्य हैं, परन्तु मा, एक विषयमें हमलोग मोहित और चमत्कृत हुये हैं, कि रामायन पढ़कर उनके उपर हम लोगों की जो बड़ी परम भक्ति उत्पन्न भयी थी, वह भक्ति इस समय सहस्रगुण अधिक वृद्धि को पहुंची है, क्योंकि और कथाओंसे सुनते हैं, कि राजा-रामचन्द्रने प्रजा को प्रसन्नताके अनुरोधसे निज प्रियतमा महाराणी का परित्याग किया हैं, तब हमने पूछा कि राजाने फिर दार का परिग्रह किया है कि नहीं, नहीं तो इस यज्ञके अनुष्ठानमें सहधर्म्मिणी कौन

होगी, तब उन्होंने कहा कि यज्ञ के समाधान के अर्थ वशिष्टमुनिने राजा को फिर दार परिग्रहके अर्थ बहुत कहा था, परन्तु राजाने किसी प्रकार उसका स्वीकार न किया॥

तब सुवर्ण की सीता की मूर्त्ति बनाकर उसी मूर्त्ति को सहधर्म्मिणी के स्थानपर रख कर यज्ञका निर्वाह करेंहै, देखो मा, ऐसे महापुरुषने किसी काल भूमण्डलमें जन्मका ग्रहण नहीं किया था, और रामचन्द्र राजधर्म्मके परिपालने जैसे तत्पर है वैसे हीं दाम्पत्य धर्म्मके परिपालनमें यत्नशील हैं, और हम लोगोंने इतिहासके ग्रन्थोंमें अनेक राजा और महापुरुषोंके वृत्तान्त का पाठ किया हैं, किन्तु वे लोग किसी अंशमें राजा रामचन्द्रके समान नहीं हुये हैं, देखो प्रजारञ्जनके अनुरोधसे प्रियतमा का परित्याग किया, और उसी प्यारीके अनुरोधसे यावज्जीवन भार्य्यान्तरके परिग्रहमें विमुख हो कर काल विताया है, यह दोनो अभूतपूर्व्व[1] व्यापार है, जो हो, मा परन्तु रामायणके पाठ करनेसे हमारी यह वासना हुई थी कि एकवार राजा रामचन्द्रका दर्शन करैंहे, सो इस समय उसी वासनाके पूर्ण होनेके लिये यह सुयोग प्राप्त है, सो आप आज्ञा करैं तो हम लोग महर्षीके साथ रामचन्द्रके दर्शन को जावैं, जब सीताने उनको अनुमति प्रदान

१ जो कभी नहीं हुआ॥

किया तब वे दोनो सहोदर अत्यन्त प्रसन्न हो कर महर्षीके समीप गये॥

राजा रामचन्द्रने फिर दूसरी स्त्री का संग्रह किया है, यह आशङ्का कर जो अति विषम विषादके विषय से सीता का सर्व्व शरीर मूर्छित हो गया था, सो सुवर्ण की प्रतिनिधि[1] की कथा को सुनकर वह सम्पूर्ण दूर हो कर और उनका बहुत काल की अधिक जलती शोकाग्नि अनेक अंशमें ठण्डी हो गयी, तब उनके नयन युगल[2] से आनन्दके वाष्पवारी वहने लगी, इस प्रकार निकालने का दुःख दूर हो कर उनके हृदयमें सौभाग्य का गर्व्व प्रगट हुआ॥

दूसरे दिन प्रभात समय महर्षी बालमीकी जीने कुश-लव और सब शिष्यवर्गके सहित नैमिषारण्य को प्रस्थान किया, और फिर द्वितीय दिवस तीसरे पहर के समय नैमिषारण्य में उपस्थित होनेके समय वशिष्ट-देव परम समादर[3] दिखलाते हुये उनको और उनके शिष्यके समूह को नये रचे वासस्थान में ले गये, और कुश और लव दूसरे रामचन्द्रका दर्शनकर हर्षित भये, और परस्पर कहने लगे कि देखो भाई रामायण में राजा रामचन्द्रके जो समस्त अलौकिक[4] गुण कहे गये हैं, सो वे गुण सब इनके स्वरूप मे स्पष्ट अक्षरसे

---

१ नायव्य-वाएवती॥ २ दोनो नेत्र।

३ आदर या बड़ाई॥ ४ जो लोकमे नही॥

लिखे गये हैं, और देखनेसे अलौकिक गुणोंके समुदाय का एक आधार जानकर स्पष्ट प्रतीति होती है, और ये जो ऐसे सौम्यमूर्त्ति है वैसे हीं गम्भीर आकृति हैं, हमारे गुरुदेव जिसरूप अलौकिक कवित्वशक्ति सम्पन्न हैं, राजा रामचन्द्र वैसाही अलौकिक गुण सम्मत हैं और कहनेसे क्या है, जो ऐसे महापुरुष नायकके स्थलमें न लिखें जाते तो भगवत् प्रणीत महाकाव्यका इतना गौरव न होता, और राजा रामचन्द्रके अद्भूत गुणोके कीर्त्तन में लगानेसे महर्षी की असाधारण[१] कवित्वशक्ति की सम्पूर्ण सार्थकता सम्पादित हुई है, जो हो परन्तु इतने दिनोंमें हमारे नयनों की चरिता-र्थता का लाभ हुआ है॥

क्रमक्रमसे नौतहरी लोगोंके आनेसे निश्चित दिनमें महायज्ञ का आरम्भ हुआ, असंख्य दीन और दरिद्र-गण और अनाथगण पृथक् २ प्रार्थनाके लिये यज्ञक्षेत्रमें उपस्थित होने लगे, और अन्नार्थी अधिक अन्नका लाभ अर्थाभिलाषी प्रार्थनासे अधिक अर्थलाभ-भूमिकांक्षी चाही पृथिवी का लाभ करने लगे, सच मुच जो कोई जिस वस्तु की अभिलाषा कर उनके पास आते हैं, उनके आने मात्रसे उन की वही अभिलाष पूर्ण होने लगी, वारम्बार चारो ओर नाच-गान-राग-रंग-बाजे आदि बजने लगे, सब लोगोंने मनोहर वेश-वस्त्र-आभूषण को

१ जो सब मे न हो।

धारण किया, और सब के मुखमें आमोद और आह्लादके संपूर्ण लक्षण सुस्पष्ट लक्षित होने लगे, और जो सब दीर्घजीवी राजा ऋषि मुनि अथवा अन्य लोग यज्ञ देखने को आये थे, वे सब बड़े ऊचे स्वरसे कहने लगे कि हम सबोंने ऐसे यज्ञका दर्शन कभी भी नहीं किया है, पुराने जानकार कहने लगे कि किसी कालमें किसी राजाने ऐसी समृद्धि-सामग्री और इतने समूहके साथ यज्ञ नहीं किया है, और राजा रामचन्द्रके सब अद्भुत कार्य्य हैं॥

इस प्रकार प्रति दिन महा समूहसे यज्ञ किया होने लगी, इसी रीति सब निमन्त्रित लोग राज सभामें एकत्र होकर यज्ञमें आई समृद्धि और समुदाय को देखने लगे॥ यह षष्ठ परिच्छेद संपूर्ण हुआ।

परिच्छेद षष्ठ अमल, विविध गणनाकी खानि।
देवदत्त वर्णन कियो, दानी सारंग पानि॥
परिच्छेद छठवा विमल, सीताका वन वास।
देवदत्त वर्णन कियो, अष्ट सिद्धिके वास॥
करहु पूर्ण मन कामना, श्रीपति सीतानाथ।
देवदत्त निज भक्तके, शिरपर राखहु हाथ॥

अथ सप्तम परिच्छेद ।

एक दिन महर्षी बालमीकीजी एकान्तमें बैठकर विवेचना करने लगे कि हमने यज्ञके दर्शनमें आसक्त होकर इतना दिन व्यर्थ विताया, और अब तक अपने अभिप्रेत के साधनमें कोई यत्न नहीं किया, अब जैसे हो तैसे कुश और लवको रामचन्द्रके दर्शन को ले चलें, यह सोच फिरर विचारा कि एकवार ही दोनें सहोदरें को एकठ्ठा करके राज सभामें ले जावें, अथवा रामचन्द्रको कौतुहल के क्रमसे यहां बुलावें, तब एकान्त में सविशेष सब कह कर कुश और लवको दिखलाकर सीताकें स्वीकार करने की प्रार्थना करें, महर्षी मनहीं मन ऐसे तर्ककर पीछे निश्चय किया कि कुश और लव को रामायण गाने की आज्ञा करें वे लोग जहां तहां रामायण का गान करें उनके गान करनेसे आपसे आप क्रम क्रमसे राजाको जान पड़ेगा, तब राजा अवश्य अपने चरित के श्रवणके अर्थ उन लोगेंको अपने निकट बुलावेंगे इस प्रकार ऐसे होनेसे विना प्रार्थना के हमारा अभिप्रेत सिद्ध होगा ॥

यह सिद्धान्त कर महर्षीने कुश और लव को अपने समीप बुलाया और कहा कि, वत्स ! कुश और लव तुम सब प्रतिदिन सावधान हो कर समयर में ऋषिगणके वास कुटियोंके सन्मुख नरपति समूहों के पटमण्डपके मण्डली के आगे, पौरगण और जानपदवर्गके रहनेके स्थानोंके समीपदेशमें, और ऐसे ही सभा भवनके सन्मुख भागमें मनके अनुरागसे वीणा बजाकर रामायण का गान करो, और जो राजा परम्परासे जानकर तुम लोगको बुला कर अपने सन्मुख गाने को कहैं तो उसी समय गानेको आरम्भ करना और जबतक उनके पास रहोगे तब किसी प्रकार की धृष्टता अथवा अशिष्टता नहीं दिखलानी चाहिये, क्योंकि राजा सबका पिता है इस लिये तुम लोग को भी उनके सन्मुख पितृ भक्ति करनी चाहिये, और जो तुम्हारे संगीतके सुननेसे प्रसन्न हो कर राजा कुछ धन देने की इच्छा करैं तो लोभवश हो कर वह कदापि लेना नहीं, विनय और भक्तियोग की सहायतासे निस्पृहता दिखला कर धनके लेने की असम्मति करोगे, और कहोगे कि महाराज ! हम लोग वनवासी तपोवनमें रह कर फल और मूलके द्वारा प्राणका धारण करते हैं, हम लोगको धनका क्या प्रयोजन है, और जो राजा तुम लोग की परिचय को पूछैं तो कहना कि हम लोग महर्षी बालमीकीके शिष्य हैं ॥

ऐसे उपदेश और आज्ञा देकर महर्षी चुप चाप हो

कर ठहरे रहे, और उन दोनों सहोदरोंने उनका उपदेश और आज्ञा को शिरोधार्य्य करके वीणाके साथ मधुर स्वरसे स्थान स्थानमें गानेका आरम्भ किया, और जिसने उनके गानको सुना वही मोहित और स्थिर चित्त हो कर वारम्बार आंसु बहाने लगा, क्यों न हो पहिले तो रामका अति विचित्र चरित, और परम पवित्र, दूसरे बालमीकी की अति चमत्कृत रचना और जिससे अधिक नहीं ऐसी मनोहारिणी तीसरे कुश और लवके रूप की माधुरी देख कर सब मोहित होते हैं, और उनके ऐसे मधुर स्वर हैं कि कोकिलके साथ तुलना करनेमें कोकिल का शब्द कर्कश जान पड़ता है, चौथे वीणाके बजाने की ऐसी उत्तमता का अलौकिक अभ्यास उन लोगका है कि वैसी निपुणता कहीं सुनने और देखनेमें नहीं आती है, इससे जिस सङ्गीत के गानेका उनको अभ्यास था, उसके सुननेसे किसके चित्तमें अनिर्व्वचनीय प्रीति रस नहीं उत्पन्न हुआ ऐसा कोई उस समुदायमें नहीं था॥

कुछ कालके पीछे अनेक लोग राजा रामचन्द्रके समीप जाकर कहने लगे, कि महाराज! दो सुकुमार ऋषिकुमार वीणा बजाकर आपका चरित गान करते हैं, उसको जो सुनते हैं वे ही मोहित होते हैं, और हम लोग जन्मावधि कभी भी इस प्रकार की मधुरध्वनि नहीं सुनि है, और वे दो यमल सहोदर हैं, महाराज

मनुष्य देहधारियोंमें ऐसी रूप की माधुरी कहीं देखनेमें नहीं आई है, और उनके स्वर की माधुरी की बात अधिक क्या कहैंङ्गे किन्नर लोग सुनकर लज्जा स्वीकार करैङ्गे, और वे लोग जिस काव्यका गान करते हैं वह किस की रचना है यह नहीं जान पड़ता है परन्तु ऐसी अभूतपूर्व्वललित रचना कभी आपने भी नहीं सुनि होगी, महाराज ! हम सब की प्रार्थना यह है कि उन लोग को राज सभामें बुलाकर आप अपने सन्मुख गान को कहैं तो आप उनको देखकर और गाने को सुनकर मोहित होङ्गे इसमें कुछ सन्देह नहीं है॥

इसके श्रवणमात्र रामचन्द्रके चित्तमें अति प्रभूत कौतुहल रसका सञ्चार हुआ, और तब उन्होंने एक सभासद ब्राह्मण के द्वारा उन सहोदरोंके बुलानेका यत्न किया, तब उन लोगोंने जाना कि राजाने बुलाया है यह सुनकर बहुत शीघ्र विनीत भाव से सभामें प्रवेश किया, पीछे इनके देखनेमात्र रामचन्द्रके हृदयमें एक अनिर्व्वचनीय भाव उत्पन्न हुआ और प्रीति रस अथवा विषाद का विष सहसा सब शरीरमें व्याप्त हुआ कि कुछ निश्चय न कर सके, कितने समय तक व्याकुलचित्त उन दोनों कुमारो को एक टक देखने लगे, और मनहीं मन कहने लगे कि ऐसा अकस्मात् भावान्तर क्यों उत्पन्न हुआ यह नहीं बूझ पड़ता है, एसे कहतेर और चित्र लिखे मूर्त्तिके समान बैठे रहे॥

कुमार लोगोंने क्रम क्रमसे निकट आकर महाराज जय हो बोल कर आशीर्वाद देकर और उचित स्थानमें बैठकर यथोचित विनय और भक्तियोग दिखलाकर पूछा कि, महाराज ! हम लोगको किस निमित्त बुलाया है, और जब वे लोग निकट भये तब उनके शरीरमें रामचन्द्र अपना और जानकी की समता देखकर अत्यन्त विकल चित्त हुये, किन्तु उस समय राजसभामें बहुत लोग उपस्थित थे, इस निमित्त अति कष्टसे अपने चित्त की चञ्चलता को रोककर और संपूर्ण सावधान हो कर कहने लगे कि सुना है कि तुम लोग अपूर्व्व गान करते हो जिन लोगोंने सुना है सब मोहित हो कर प्रशंसा करते हैं, इस लिये हमने भी तुम लोगके गाने को सुननेकी इच्छा है, जो तुमको अभिमत हैं तो कुछ गान कर हमको प्रीति प्रदान करो, तब वे लोग बोले कि महाराज ! हम लोग जिस काव्यका गान करते हैं वह बहुत विस्तृत है, और उसमें महाराज का चरित्र सविस्तार वर्णित हुआ हैं, इस समय हमलोग आपके सन्मुख उस काव्य का कौन अंश गान करैं यह आज्ञा कीजिये ॥

उन दोनों कुमारोंके देखनेही से रामचन्द्र का चित्त इतना चञ्चल और सीता का शोक इतना बढ़ गया था कि जो लोक की लज्जाके भयसे और धैर्य्य का अवलम्बन करना अशक्य जानकर सहसा सभासे उठकर बीजन

प्रदेश की सेवाके निमित्त अत्यन्त उत्सुक हुये थे, इस लिये कहने लगे कि आज तुम अपने अभिप्रायके अनु-रूप जो कुछ गान करो कल प्रभात से लेकर प्रति दिन कुछर तुमलोगोंके मुखसे आद्योपान्त सब काव्य सुनैंगे, वे सब जो आज्ञा महाराज ऐसा बोलकर सङ्गीत का आरम्भ किया सभासद् सुनकर मोहित होकर बड़े ऊंचे स्वरसे सब साधुवाद प्रदान किया, राजा रामचन्द्रने कवि की पाण्डित्य और रचना कि लालित्य देख कर और चमत्कृत हो कर पूछा कि यह काव्य किसका बनाया है, और किसके निकट तुमने शिखा हैं, तब वे बोले कि महाराज ! यह काव्य भगवान् वाल्मीकि का रचित हैं, और हम सब उनके तपोवनमें प्रतिपालित हुये और उनके निकट संपुर्ण शिक्षा किया हैं, तब रामचन्द्रने कहा कि भगवान बालमीकि ने स्वर चित काव्यमें अति अद्भुत कवित्व-शक्ति दिखलाई हैं, थोड़े सुनने से परितृप्ति नहो होती है, परन्तु आज तुम लोग को बड़ा परिश्रम हुआ हैं और तुमको अति कष्ट देना यह हमारी इच्छा नहीं है, इससे आज तुम अपने स्थान को गमन करो॥

यह कहकर दोनो सहोदरों को विदा किया, तब रामचन्द्रने उस दिन सभासदो को जाने की आज्ञा की और इस प्रकार अपने भी वास भवन मे प्रवेश किया,

वहां एकाकी चिन्ताकरने लगे कि इन दोनों कुमारों को देखकर हमारा अन्तःकरण इतना व्याकुल क्यों हुआ हैं कुछ बूझने नहीं सकते हैं, अपने सन्तानके देखने से लोगोंको जैसा चित्तमें स्नेह और वात्सल्यरस का सञ्चार होता है, हमारे भी ठीक उसी रूप हुआ है, परन्तु इस रूप होने का कोई कारण देखते नहीं हैं, ये दोनो ऋषिकुमार हैं और जो ऋषिकुमार न होवे तो भी हमको उस आश की संभावना क्या, और हमने जिस अवस्था में प्रिया को वनवास दिया था, उस समय उसने दुःसह शोक और नहीं दूर होनेवाले अपमानसे अपना प्राणत्याग किया हैं इसमें सन्देह नहीं, और लक्ष्मण परित्याग कर आये तभी होवै तो वह आत्मघातिनी हुई थी अथवा कोई दुखदाई जन्तुने उसकी हिंसा करी होगी और उसने जो उस अवस्थामें प्राणधारणमें समर्थ हो कर निर्व्विघ्न सन्तान का प्रसव किया है और उनका लालन और पालन करनेको समर्थ हुई है ऐसी आशाकर्नी दुराशा है, और हम ऐसे हतभाग्य हैं तो इसरूप सौभाग्य का होना किसी यत्नसे हमको नहीं हो सकता है॥

यह कह कर अत्यन्त विकल चित्त हो कर राम कितने काल तक आंसु बहाते रहे, पीछे शोकावेग को रोककर कहने लगे कि इनके आकार प्रकारके

देखनेसे क्षत्रियकुमार जानकर स्पष्ट प्रतीति उत्पन्न होती है, और विशेषतो उनके शरीरके देखनेपर हमारे अवयव सम्पूर्ण जान पड़ता हैं, और देखने ही से हमारे प्रतिनिधि वोलकर विलक्षण बोध होता है, और विचार पूर्व्वक देखने मे सीताके अवयवोंके समान निः-सन्देह सादृश्य प्रतीयमान होता है, भ्रू, नयन, नासिका, कर्ण, चिवुक, ओष्ठ, और दन्तों की पङ्क्तियोंसे कुछ विलक्षण नहीं है, इतनी सौसादृश्य किस निमित्त घटित हो कर एकट्ठे भये होंगे, और ये लोग कहते हैं कि बालमीकी के तपोवनमें प्रतिपालित हुये हैं और हमने भी लक्ष्मण को बालमीकी के तपवनमें परित्याग करने को कहा था, होय तो महर्षी कारुण्य वशते सीता को अपने आश्रमसे ले गये हो तथा सीता ने ये दोनो यमल सन्तान प्रसव किया हो क्योंकि इनके लक्षण देखकर सकल लोग ऐसी संभावना करते थे, और जानकी जीने गर्भ युगल का धारण किया है यह सब विचार करनेसे हमारी आशा नितान्त दुराशा है, यह बोध नहीं होता अथवा हम मृगतृष्णामें पड़कर भ्रान्त हो कर अनर्थक अपने को क्लेश देते हैं, जब हम क्रूर राक्षसोंके समान अधिक निर्दय और नितान्त निर्मोही होकर तैसी पतिप्राणा कामिनी को सम्पूर्ण निरपराधसे वनवास दिया है, तव और वह सब आशा

करनी बड़े मूढ़ का कर्म्म है, हा प्रिये! तुम तैसी साधुशीला और सरल हृदया हो कर किस प्रयोजनके लिये ऐसे दुःशील और कठोर हृदयके हाथमे पड़ी, हम जब तुमको नितान्त पतिप्राणा और शुद्धचारिणी जानकर अनायास वनवास देनेमें और वनवास देकर इतनेकाल तक प्राणधारण कर सके हैं, तब हमारी अपेक्षा क्रूर और पाषाण हृदय और कोई नहीं है।

इस प्रकार आक्षेप करते२ दुःसह शोकके भारसे व्याकुल होकर राम अचेतनके तुल्य भये और वारम्बार अश्रुधारा बहाने औ मुहुः२ दीर्घनिश्वास का परित्याग करने लगे, कितने समयके पीछे वे कुछ शान्तचित्त होकर कहने लगे कि बाल्मीकोजी सीता जीको अपने आश्रमसे ले गये होंगे, इस प्रकार सीता वहां युगल तनय उत्पन्न किया इसमें सन्देह नहीं, ये दोनों पहिले तो ऋषिकुमार नहीं है इसका एक दृढ़ प्रमाण पाया जाता है, देखो आकार देखकर स्पष्ट बोध होता है कि इनका थोड़े दिन हुये है कि उपनयन हुआ है, और इनका वयःक्रम द्वादशवर्ष से अधिक नहीं बोध होता है, एकादशवर्षमें इनका उपनयन हुआ है, और क्षत्रियकुमार न होते तो ऐसे वयःक्रममे उपनयन क्यों होता, सचमुच ऋषिकुमार होनेसे महर्षी अवश्य अष्टमवर्षमें उपनयन संस्कार करते, उससे भिन्न उपनीत

ऋषिकुमार के वेशके समान इनका वेश नहीं देखा जाता है, जो ये क्षत्रियकुमार होय तो ये सीताका सन्तान होना जितना चाहिये संभवता है अन्यकी सन्तान होना उतने सम्भवका बोध नहीं होता है, कारण यह है कि अन्य क्षत्रिय सन्तान का तपोवनमें प्रतिपालित और उपनयन आदि संस्कारके होने की सम्भावना क्या, हमारे समान हतभाग्यके सन्तान न होने से इन सब की कदापि यह अवस्था नहीं हो सकती है॥

मनहीं मन इस भांति वितर्क और आक्षेप करके रामचन्द्र कहने लगे कि जो प्रिया आजतक जीती है तो ये दोनो कुमार हमारे तनय हैं इसके होनेसे क्या आह्लाद का विषय हे, और प्रिया फिर हमारे हृदय और नयनों की आनन्ददायिनी होवेगी इसके होनेसे हमारा सब शरीर अमृतके रससे अभिसिक्त होगा, यह कह कर ऐसा बोध हुआ कि जैसे सीताके सहित इनका समागम हुआ हैं, यह स्थिर कर राम कहने लगे, कि इस दीर्घ वियोगके पीछे जब प्रथम समागम होगा तब बोध होता है कि हम आल्हादमें अधैर्य होंगे, और प्रिया को आल्हाद अत्यन्त अधिक होगा इसमे सन्देह नहीं है, प्रथम समागमके समय दोनोंको आनन्दके आंसुका प्रवाह प्रबलवेग से बहने लगेगा, कितने

कालतक इस विचारमें मग्न होकर फिर उन्होंने हर्ष वास विसर्जन किया, और दूसरे समय यह चिन्ता उपस्थित हुई कि हमने जिसरूप क्रूर हृदय होकर ऐसा आचरण किया है, तो अब प्रियाके समागम होनेमें कैसे उनको अपना मुख देखावेंगे, अथवा वे जिसरूप साधुशील और सरल हृदया है तो अनायास हमारे अपराध को क्षमा करेंगी हमतो प्रियाके देखने मात्र उनका चरण धरकर और विनय वचनोंसे क्षमा करने की प्रार्थना करेंगे, कितने समय के पीछे फिर यह चिन्ता प्रगट भई कि प्रजा लोग घृणा और विराग दिखलावेंगे इस आशङ्का से हमने प्रियाको वनवास दिया है, और अब जो प्रियाका ग्रहण करैं तो फिर वही आशङ्का प्रगट होगी, और इतने काल तक अपना और प्रियाका दुःसह विरह क्लेश में अन्तःकरण जो जलाया है सो सब विफल होता है ॥

यह कह कर अत्यन्त निरुपाय हो कर राम कितने समयतक अप्रसन्न मन रहे पीछे सहसा प्रगट क्रोधके सहायतासे कहने लगे कि हम घोर निर्मूल लोकापवादमें आस्था न देखलावेंगे, इसके पीछे प्रियाके ग्रहण करनेमें जो प्रजा लोग को असन्तोष होवें तो होने दो, और अब हम उनकी इच्छा की अनुवृत्ति नहीं कर सकते हैं, और हम जितना चाहिये करने को सब कर

चुकेहैं, राजसिंहासन पर बैठकर कौन कब हमारे समान आत्मवञ्चन किया है, पहिले हीं प्रियाके वनवास देकर नितान्त मूर्खका काम किया है, और अब हम अवश्य उनका ग्रहण करैंगे, अथवा भरथके हातमें राज्यके भारको रखकर प्रियाके साथ वाणप्रस्थ धर्म्मका आश्रय करैंगे, और प्रिया रहित हो कर राज्यके भोग की अपेक्षा उनके साथ वनवास करना हमारे पक्षमें सहस्रगुण कल्याणकारी है, इसमें सन्देह नहीं है, रामने आहार और निद्रा को छोड़ कर इस प्रकार बहुविध चिन्तामें मग्न हो कर रात बिताई।

यह सप्तमपरिच्छेद सम्पूर्ण हुआ।

दोहा।

परिच्छेद सप्तम सुखद, विश्वजननि को जानि।
देवदत्त पूरण करै, अभिमत सारङ् पानि॥

अथ अष्टम परिच्छेद ।

महर्षी बालमीकीजी ने रामचरित का अवलम्बनकर अति अद्भुत बड़े काव्य की रचना किया थी, और उनके दो कोकिल कण्ठ तरुणवयस्क शिष्य अति मधुर स्वरसे उसी काव्य को गाते हैं, सो कल प्रभात समयमें वे लोग राज सभामें गान करेंगे, यह समाचार नैमिषा-रण्यमें आये व्यक्तिमात्र को अवगत हुआ था, (अर्थात् सबने जाना था) रात बीतनेमात्र क्या ऋषिगण, क्या व्रतिगण, क्या अपरापर निमन्त्रितगण और सब स्त्री पुरुष अत्यन्त व्यग्रचित्त हो कर सङ्गीत सुनने की लालसा से राजसभामें उपस्थित होने लगे, उस दिन सभामें लोगोंके एकठ्ठा होने की सीमा नथी, तब राजा राम-चन्द्र राजसिंहासनमें बैठे और भरत, लक्ष्मण, शत्रुहन, और लङ्का समरके सहायक सुग्रीव विभीषण आदि मित्रवग उनके वाम और दक्षिणभागमें सब यथायोग्य आसनमें बैठे, और कौशल्या, केकयी, सुमित्रा, ऊर्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्त्ति, प्रभृति राजपरिवार, और अरु-न्धतीजी प्रभृति ऋषिपत्नीगण सब पृथक् २ स्थानमें बैठीं ॥

इस भांति राजसभामें एकठ्ठा होकर सब लोग अभिनव काव्यका और सुकुमार गायक-युगलके कथा को लेकर परस्पर कथोपकथन और नितान्त उत्सुक होकर उन लोगोंके आने को प्रतीक्षा करने लगे, उसी समय में महर्षी बालमीकीजी कुश और लवको साथ लेकर राजसभाके द्वारपर उपस्थित हुये, इनके देखने से सभामण्डलमें महान् कोलाहल हो उठा, और जिन लोगोंने पूर्व्वदिनमें कुश और लवको अवलोकन किया था, वे लोग उगुंलीसे दिखलाकर अपने समीपमें वैठे, पुरुषों को उन दोनों सहोदरों को देखलाने लगे, और बालमींकी के सभामें प्रवेश करनेमात्र सभास्थ सम्पूर्ण लोगोंने एककालही में खड़े होकर आइए२ ऐसा कहा, तब महर्षी और उनके शिष्योंके निमित्त पृथक् स्थान तथा वे लोग वहां हीं वैठे, और सब लोग सङ्गीत के सुनने के निमित्त नितान्त अधैर्य्य हो कर और अधिक उत्सुक होकर कहने लगे कि देखै कब आरम्भ होगा इस को प्रतीच्छा करने लगे॥

कितने समयके पीछे महर्षी बालमीकीजी सभास्थ सब लोगोंके और नेतका सञ्चार करते राजा रामचन्द्रसे कहने लगे, कि महाराज ! सकल लोग श्रवणके निमित्त उत्सुक हो रहे हैं इस लिये अब अनुमति करैं कि सङ्गीत का आरम्भ होवे, पीछे उनके कहनेके अनुसार

कुश और लवने वीणा बनाये सङ्गीत का आरम्भ किया, वालमीकीजीने कुश और लव को शिखला परखा था, कि रामायणमें जो सब राजा रामचन्द्र और जानकीजीके परस्पर अनुराग और स्नेह का वर्णन है तुम लोग आज उसी का अधिक गान करो उसीके अनुसार उन लोगोंके कुछ समय गानेमात्रसे राजा रामचन्द्रका हृदय द्रवीभूत हो गया, इस प्रकार नयन युगल से प्रबल वेग वाष्पवारि बहने लगा, और राम उन दोनों सहोदरों को जितना देखने लगे उतना ही सीताका तनय बोलकर उनको दृढ़ विश्वास होने लगा, और भरत, लक्ष्मण और शत्रुहन, ये सब उनके शरीरमें रामचन्द्र और सीताके अङ्गो की सादृश्य देखकर मनहीं मन विचार करने लगे, और उनसे भिन्न सभास्थ समस्त लोग एक वाक्य होकर कहने लगे कि क्या आश्चर्य है ये दो ऋषिकुमार जैसे रामचन्द्रके तुल्य स्वरूप हैं यदि वेष और वयक्रम वैषम्य न होता तो राम और ये दो ऋषिकुमार किञ्चित् मात्र विलक्षण न होते, बोध होता है कि जैसे रामने दो मूर्त्तिका स्वीकारकर कुमारद्वय मे ऋषिकुमारका वेषधारण किया है, और इस वयक्रम में रामचन्द्रके जो रूप, आकृति, रूप की लावण्यता और माधुरी थी, सो इन लोगोंमें भी वही सब अविकल लक्षित होती है, जो हो सो हो परन्तु सभास्थ समस्त

लोग मोहित और एक मन होकर सङ्गीतके श्रवण करते एकटकउनके रूपको देखने लगे ॥

कितने समयके पीछे राजा रामचन्द्र लक्ष्मणसे कहने लगे वत्स! उन दोनों ऋषिकुमारों को शीघ्र सहस्र सुवर्ण मुद्रा दो, तब वे लोग विनय पूर्ण वचनोंसे कहने लगे कि, महाराज! हम लोग वनवासी विलासी वा भोगाभिलाषी नहीं है, यदृच्छालाभ फल और मूलमात्र आहार करते और वल्कल मात्र पहिरते हैं, हम लोगोको सुवर्णका क्या प्रयोजन है, हम लोगोंने अनेक यत्न और अति परिश्रम करके आपके चरित का अभ्यास किया है आज आपके सन्मुख उसके कीर्त्तन करनेसे हमारे यत्न और परिश्रम सफल भये हैं, और आप श्रवणकर प्रसन्न हुये हैं, हम प्रसन्न है, ऐसी प्रवीणता और अति निस्पृहता देखकर सब लोग एक ही साथ चमत्कृत हुये।

कुश और लवको कितने समय तक एकटक देखकर और उनको सीताके तनय कहकर कौशल्याके अन्तःकरणमें दृढ़ विश्वास हुआ, तब वे अधिक स्थिरचित्त होकर दीर्घनिश्वासके साथ हा वत्से जानकी! यह वाक्य बोलकर और पृथिवीमें मूर्छित होकर गिर पड़ीं, उनके देखनेसे सब की विकल अन्तःकरण होकर अशेष यत्नसे इनको चैतन्य किया, कितने समय

तक सङ्गीत सुनकर सबके हृदय में सीताका शोक इतना प्रबल उत्पन्न हो उठा था जो सब लोग अधिक अधीर हो गये, और इस प्रकार वारम्वार आंसु बहाने और मुहुर्मुहुः ठंढी सांस भरने लगे, और कौशल्या अधिक अधीरा होकर उन्मत्तसी कहने लगी, कि उन दोनों कुमारों को हमारे निकट लाओ क्योंकि उनको गोदमें लेकर एकवार उनका मुख चुम्बन करूंगी, वे दोनो हमारे जानकीके तनय हैं उन को लाकर हमको दो नहीं तो हम उनके पास आप जायगीं, एकवार उनको अपने गोदमें लेकर और उनका मुखचुम्बन कर हमारा जानकी का शोक निवृत्त होगा, और वेही देखो कि उन लोगोंके शरीरमें हमारे जानकी और रामचन्द्रके सम्पूर्ण लक्षण जान पड़ते हैं, उनको सभामें प्रवेश करनेमात्र से जैसे किसीने हमारे कानमें कह दिया है कि ये दोनो तुम्हारे रामके वंशधर आते हैं, उस समयसे लेकर हमारा प्राण व्याकुल हो रहा हैं, हम वारहवर्षमें एक प्रकार सीताको भूल गई थी, परन्तु अब इन दोनोंके देखनेसे हमारा सीता का शोक नया होकर उठता है, हा वत्से जानकी! तू कहां हैं तुमारी क्या अवस्था प्राप्त भई हैं, यह अवभी जीती है क्या इस पापिष्ठ नरलोक को परित्याग किया है कुछ नहीं जाम पड़ता है कह कर ठंढीसांस भरती

कौशल्या फिर मूर्छित भई, सब लोगोंने सयत्न हो कर फिर उनको चैतन्य किया, तब कौशल्या नितान्त अधीर्य्य होकर कहने लगीं कि अब तक तुम लोगोंने उनको हमारे पास नहीं लाय दिया, न होय तो कोई लक्ष्मणके पास जाकर कहै कि कौशल्या उन दोनोंको देखने चाहती हैं तो लक्ष्मण अवश्य दोनोको लाकर हमारी गोदमें दे देवैगा।

कौशल्या की ऐसी अस्थिरता और कातरता देख कर अरुन्धतीजी की आज्ञानुसार समीपवर्त्तिनी प्रति- हारीनीने लक्ष्मणके निकट जाकर और सविशेष समस्त कहकर कौशल्या का अभिप्राय निवेदन किया, तब लक्ष्मण ने उस दिन चतुराई से उतना ही गानको रहित कर सभाका उठान किया, और कुश और लव को लेकर कौशल्याजी के निकट उपस्थित भये, कौश- ल्याने तब दोनो सहोदरों को गोदमें लेकर और स्नेहसे पूर्ण बारम्बार दोनोंके मुखका चुम्बन किया, इस प्रकार हा वत्से जानकी ! तू कहां है यह कह कर और अधिक अधीरा हो कर बड़े स्वरसे रोने लगी, उनको देखकर सुमित्रा, उर्म्मिला आदि सबने अश्रुपात, विलाप, परिताप, और मोह करने का आरम्भ किया, तब कुश और लव यह सब देख और सुनकर अडोल हो कर ठहरे रहे॥

कितने समयके पीछे कौशल्या कुछ शोकावेग को रोक कर सन्देह दूर करने की इच्छा से उन लोगोंसे पूछने लगीं कि तुम्हारे पिता और माताका क्या नाम है तब वे दोनों विनयसे अपनेर नाम को लेते हुये कहने लगे कि हम लोक पिता को नहीं जानते है, और अवतक हम लोगोंने उनको नहीं देखा है, और हमारी मा है सो तपस्विनी है, परन्तु कभी भी हम लोगोने उस का भी नाम नहीं सुना है, और किसीने हम लोगोंसे उसका नाम नहीं कह दिया है, हम लोगोंने मा वा अन्य लोगों को कभी भी पूछा नहीं हम लोग महर्षी वाल्मीकीके शिष्य हैं, और उनके तपोवनमें प्रतिपालित भये है, और उनके समीप विद्या सिखी है, तब आकुलचित्त यह सब कथा सुन कर अनेक संशमें कौशल्या का संशय दूर हुआ, परन्तु सम्पर्ण परितृप्त न होकर फिर पूछा कि तुम्हारी माका आकार कैसा है, कुश और लवने अपनी माका स्वरूप यथार्थ वर्णन किया, तब सब उन लोगोंने सीताका तनय जानकर निश्चय किया, और इसी प्रकार कौशल्या आदि जितनी राजपरिवार थीं सबका शोकसिन्धु अनिवार्य्य वेगसे उठ खड़ा हुआ, कितने समयके पीछे फिर कौशल्याजी ने उन दोनोंको पूछा कि तुम्हारी जननी कैसी हैं, तब उन लोगोंने कहा कि उनको सर्वदा जीवनमृतके तुल्य

देखते हैं, विशेषकर वे दिन२ अधिक खिन्न होती हैं इससे बोध होता है कि वे अधिकदिन न जीवेंगी॥

कुश और लव से यह सब कथा को सुनकर सब अधिक विलाप और परिताप करने लगीं, कौशल्या कुछ धैर्य्य का अवलम्बन कर संपूर्ण रूप सन्देह दूर करनेके निमित्त लक्ष्मणसे कहने लगीं कि वत्स! तुम एकवार महर्षी वाल्मीकीजी को इस स्थानमें लाओ कितने काल पीछे महर्षी वाल्मीकीजी को लक्ष्मण के साथ वहां आकर उपस्थित होनेके समय सबोंने बड़े आदर और भक्तियोगके साथ प्रणामकर और परम मर्य्यादा पूर्व्वक आसनमें बैठाया, पीछे कौशल्या हाथ जोड़ कर पूछा कि भगवन्! आपके ये दोनो शिष्य कौन हैं, कृपा करके सविशेष कहिये, तब वाल्मीकीजीने जिस दिन लक्ष्मण सीता का परित्याग कर आये थे उस दिन से लेकर आज पर्य्यन्त समस्त वृत्तान्त कहने का आरम्भ किया, और इस प्रकार रामचन्द्रके विरहसे सीताजींको जैसी अवस्था प्राप्त है उसका यथार्थ वर्णन किया, तब सब लोग सुनकर सबके नेत्र जलसे सबके वक्षस्थल भीज गया, और कौशल्या आदिक शोकसे अभिभूत होकर हा वत्से जानकी। विधाताने तुम्हारे भाग्यमें ऐसा दुःख लिखा था, यह कहकर विलाप करने लगीं जो हो परन्तु सीता आज पर्य्यन्त जीता है और इसी प्रकार

कुश और लव उनके लड़के हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं है ॥

इतने दिनके पीछे कुश और लव अपनी पहिचान-कर और उनके चित्तमें नानाप्रकार के अनिर्व्वचनीय भाव उदय हुआ तब वालमीकी ने उन लोगोको कहा वत्स कुश ! और वत्स लव ! तुम अपनी पितामही और पितृव्यपत्नियोंके चरणमें वन्दना करो, तब उन लोगोंने कौशल्या, केकयी, सुमित्रा, और उर्म्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्त्तिके, चरणमें साष्टाङ्ग प्रणाम किया, पीछे महर्षी कहने लगे, कि तुम लोगोंने जो रामा-यणके पाठ करनेमें लक्ष्मण नाम महापुरुष का गुण कीर्त्तन किया हैं, सो लक्ष्मण यही हैं और ये तुम्हारे तृतीय पितृव्य हैं, यह कह कर लक्ष्मण को दिखला दिया, तब लक्ष्मणका नाम श्रवण मात्र उनको ओर वड़े नेत्रसे चरण आदि मस्तक पर्य्यन्त देखकर दृढ़ता भक्ति योगके साथ उनके चरणमें प्रणाम किया ॥

इस प्रकार कितने समयके वीतने पर कौशल्या जीने लक्ष्मणसे कहा वत्स ! तुम शीघ्र जाकर राजा रामचन्द्र और वशिष्टजी को यहां वुलाय लाओ, तव शीघ्र लक्ष्मण जाकर रामचन्द्र और वशिष्टजीके सहित आकर वहां उपस्थित हुये, तव कौशल्याजीने वाष्पसे आकुल लोचन और गद्‌गद वचनोंसे उन लोगोंको कुश

और लवके परिचय का प्रदान किया, और इस रीति अवतक सीता जीती हैं, कुश और लवके निमित्त जो रामचन्द्रको सन्देह था, सो संपूर्ण दूर हुआ, और नयन जलसे उनका वक्षस्थल भींज गया, तब वे कुश और लवको अप्रमेय वात्सल्यसे पूर्ण अपने कमललोच-नोंसे एकटक देखने लगे, इसके पीछे महाराणी कौ-शल्याजीने सपुत्रा सीता देवीके स्वीकार करनेका प्रक-रण चलाया, तब राजा रामचन्द्र मौनावलम्बन कर रहे और कौशल्या उनके मौनावलम्बन करनेसे स्वीकार जानकर सीता देवीके बुलानेके निमित्त महर्षी वाल-मीकीजो का प्रार्थना किया, इस पर वालमीकीजीने शीघ्रतासे अपने वासकुटीसे जाकर कौशल्याजी की भेजी शिविका जान और राजसी सामानके सहित राजपुरुषोंके साथ अपने शिष्योंको भेजा, और कह दिया कि तुम लोग इस वाहनमें जानकी को आरोहण करा कर शीघ्र हमारी कुटीमें लाओ॥

क्रमक्रमसे सकल निमन्त्रित लोगोंने जाना कि रामा-यणके गायक लोग राज तनय हैं, सीता देवीने परि-त्याग होनेपर वालमीकीजीके आश्रममें इन दोनोंका प्रसव किया हैं, और वे आजपर्य्यन्त जीती हैं, राजा उनका ग्रहण करेंगे इस लिये उनके लेनेको राजसी सामानके सहित राजपुरुष भेज गये है, इस समाचारके

सुननेसे सब लोगोंको बड़ी प्रीति भई, सीताके स्वीकार करनेके विषयमें राजा रामचन्द्रने एक प्रकारका स्थिर निश्चय किया था, और वे मनमें विचारा था कि अब जानकीके ग्रहण करनेसे प्रजालोग और आपत्ति न उठावेंगे, यह सिद्धान्तकर लक्ष्मणजी से परामर्श कर वाल्मीकीजीसे सम्मति करनेके निमित्त वाल्मीकीजी को लक्ष्मणको भेजकर बुलाया, रामचन्द्र की आज्ञानु-सार लक्ष्मण यह सब कथा जाकर वाल्मीकीजी को सुनायी ॥

लक्ष्मणके मुखसे यह सब कथा सुनकर वाल्मीकीजी रामचन्द्रके निकट शीघ्र जाकर उपस्थित भये, और सीता जो अत्यन्त संपूर्ण शुद्धचारिणी है उनके विषयमें रामचन्द्रको अनेक प्रकारसे समझानेका आरम्भ किया, तब रामचन्द्रने कहा कि भगवन्! सीताके शुद्धचारि-ताके विषयमें हमको अणुमात्र सन्देह नहीं है, परन्तु हम राज्यका भार ग्रहण कर नितान्त पराधीन हो गये हैं, और आपलोगोंने उपदेश दिया है कि प्राणके बदले भी प्रजापालन करना राजाका परम धर्म्म है और किसी कारणसे भी उनके विषयमें अणुमात्र उपेक्षा करनी इह लोकमें अकीर्त्तिभाजन और परलोकमें निरयगामी होना पड़ता है, सो प्रजालोगके अन्तःकरण में सीताके चरित्र विषयमें विषम संशय हुआ है वह

संशय दूर न होवे तो हम किस प्रकार सीताका ग्रहण करें आप कहिये और हमने सीताके परित्यागके दिनसे सकल सुखको विसर्जन दिया है, कैसे अबतक जीते हैं यह नहीं कह सकते हैं, और नितान्त पराधीन होनेसे हमने सीताका परित्याग किया है और एकवार मनमें यह विचार किया था कि प्रजालोग असन्तुष्ट होवे तो होने दो हम उनके अनुरोधसे सीताके स्वीकारसे पराङ्मुख होवेंगे, परन्तु उसमें राजधर्म्म प्रतिपालित नहीं होता, सचमुच उस विषयमें साहस न कर सके, और फिर यह भी सोचा कि भरतके हाथ राजका भार देकर राजकार्य्यसे अवकाश होनेसे हमको जानकीके स्वीकार करनेमें कोई प्रतिबन्धक न होगा, पीछे और बहुत प्रकारका विचार किया, परन्तु किसी उपायके अवलम्बन करनेसे कल्याण का होना न देखा तो जानकी का परित्याग किया, और हम जानकीके निमित्त जिसरूप क्रूर आचरण किया है उससे घोरतर अधर्म्मके भागी हुये है इसमें सन्देह नहीं हैं, इस जन्ममें केवल हम निरवच्छिन्न दुखके भोगनेके लिये नरलोकमें आये हैं, और हम इस समयमें जो विषम कष्टभोग करते हैं उसको हमारा अन्तरात्माही जानताहै, और जो इस मुहूर्त्तमें हमारा प्राणत्याग होता तो हम उसको परम श्रेयस्कर मानते ॥

यह कहकर अत्यन्त विकलचित्त होकर राम बड़े वेगसे श्वास बढ़ाने लगे, कितने समयके पीछे कुछ शान्त चित्त हो कर अञ्जलीबांध कर वाल्मीकीसे विनय वाक्यसे सम्भाषण पूर्व्वक कहा कि भगवन्! आपके निकट हमारी प्रार्थना यह हैं कि सीताके आनेपर आप उन को अपने साथ सभामण्डपमें लाइएगा और इसी प्रकार अनुग्रह करके उनके स्वीकारके विषयमें सब की सम्मति को पूछियेगा, जो उनका स्वीकार करना सर्व्वके सम्मत हैं तो उसी समय हम को भी स्वीकृत है, और सर्व्व सम्मती न होगी तो उनको किसी असन्दिग्ध प्रमाणसे प्रजावर्गके सन्देहको दूर करना चाहिये, इसमें वाल्मीकीजीने सम्मति देकर अपने स्थानको गमन किया॥

इधर सीता कौशल्याके भेजे शिविका वाहनको राजपुरुषोंका सहित उपस्थित देख और मुनियोंके भेजे शिष्योंके मुखसे उनकी आज्ञा को सुनकर मन ही मन कहने लगीं कि विधि सदय हो कर इतने दिनोंके पीछे हमारे दुःखका अन्त किया है जब ठकुरानीजीने शिविका भेजा है तो फिर हम स्वीकृत होवेंगी इसमें सन्देह नहीं है, इसी लिये बोध होता है कि आज हमारा वामनेत्र वारम्बार फरकता है, और हम आर्य्यपुत्रका स्नेह, दया, और ममता जानती हैं, नितान्त पराधीन हो कर उन्होंने हमारा परित्याग

किया है, और हम उनके विरहसे ऐसी अधीर हैं, और वे भी हमारे विरहमें वैसा ही कातर भये हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं है, और जो हमारे विषयमें स्नेह की किसी अंशमें न्यूनता होती तो वे कभी भी फिर दार परिग्रहके लिये विमुख न होते, और उन्होंने सह-धर्मिणीके स्थलमें हमारी प्रतिकृति का स्थापन कर स्नेह की पराकाष्ठा है और देखलाई, इस प्रकार हमारा सकल शोक निवारण किया है, और फिर जो हमारे भाग्यसे आर्यपुत्रके सह बातका सुख मिलैगा उसका सपनेमे भी सम्भावना नहीं थी।

यह विचार करतेर आह्लादसे जानकीके नयन-युगलसे प्रवल वेग वाष्प वाहिर होने लगी, और उनके शरीरमें शतगुण वल और चित्तकी अधिक स्फूर्त्ति तथा उत्साह होने लगा, फिर स्वीकृतका होना यह विचार उनका हृदय कमल अभूतपूर्व्व आनन्दके प्रवाहसे प्रफु-ल्लित हो उठा, और शरीर की शक्ति सन्तोष, और हर्षका प्रमाण न रहा, और वे आशाके उपर विश्वास करके मन हीं मन कितनी कल्पना करने लगी, कि रामके साथ समागम होनेसे जो सब अवस्था वीत सकेगी तो हम अपने चितपटमें चित्र लिखनेका आरम्भ करेंगी, इस प्रकार सचमुच होनेपर यह सब देखकर अनिर्व्वच-नीय प्रीति का लाभ करने लगीं, एकबार बोध किया

कि जैसा रामके सन्मुखमें प्राप्त भई हैं, और राम लज्जासे मुख उठाके उनके साथ कथा कह नहीं सकते हैं, और फिर बोध किया कि जैसे राम अश्रुपूर्ण नयन और अधिक स्नेहके सम्भाषणसे कहते हैं, और सीता अभिमानसे कुछ कथा नहीं कहतीं, और अभिमानसे अपने वदनको विरस कर खड़ी रहीं हैं, एकबार यह बोध हुआ कि जैसे प्रथम समागमके समय परस्पर जड़ प्राय होकर स्थिर नयनोंसे दोनों परस्परके वदन को देखने लगे, इस प्रकार दोनोंके नेत्र जलसे दोनोंका वचस्थल भींज जाता है, और फेर बोध करने लगी कि जैसे हम दोनों एक आसनमें बैठकर परस्पर दीर्घ कालके विरहके दुःखका वरनन करते२ बिनाजानी बातबीत जायगी, फिर एकवार बोध हुआ कि जैसे सासु वगैरहके निकट पहुंचनेपर उन लोगोंके चरण बन्दना करनेसे वे लोग वाष्पसे पूर्ण नयनोंसे हमारा मुखचुम्बन करने लगीं, इस प्रकार हमको अति दुर्ब्बल देखकर और शोकसे व्याकुल होकर परिताप करने लगीं, और फिर बोध करने लगीं कि जैसे मैं सासुज-नोंके निकट बैठकर उनके प्रश्नका उत्तर देती हूं, इसी समयमें हमारे देवरोंके वहां उपस्थित होनेपर इस प्रकार वाष्पाकुल लोचनोंसे और गदगद वचनोंसे वे कहने लगीं, कि आर्य्ये प्रणाम करता है, यह कह

कर अभिवादन करते है, फिर एकवार जाना कि हमारी भगिनीयोंने जैसे प्रणाम किया है, इस प्रकार परस्परके देखनेमें शोकके प्रवाहके बढ़नेसे सब मिल कर विलाप और परिताप करने लगीं, और फिर बोध करने लगीं कि जसे सुवर्ण की हमारी मूर्त्तिको दूर कर हम रामके वामभागमें बैठकर सहधर्म्मिणीका कार्य निर्व्वाह करता हैं॥

इस रूप अनुभव करतेर बड़े आह्लादसे और पुलकित शरीर हो कर जानकीने शोविकाका आ-रोहण किया और दूसरे दिन सायंकाल नैमिषारण्यमें पहुंची, तब वालमीकोजीने कहा वत्से! राजा राम-चन्द्र तुम्हारे ग्रहण करनेको सम्मत हुये है, कल जब सभामण्डपमें वैठेंगे तब उसी समय हम सबके सन्मुख उनके हाथमें तुमको समर्पन करेंङ्गे, वाल्मी-कीजीके मनमें दृढ़ विश्वास था कि हम सीताके स्वीकार करने की प्रार्थना करेंङ्गे तो कोई व्यक्ति साहस करके सभाके मध्यमे असम्मति न कर सकेगा, पीछे जानकी एकान्तसे वशकर कुश और लवके मुखसे सब विशेष सदृाय सुनकर स्वीकार करनेमे संशय रहित होकर और आह्लादमे अधीर होकर प्रतिसमयमे प्रभात की प्रतीक्षा करने लगीं, और सबरात उनकी आंख न लगी॥

रात बीत गई और महर्षी वालमीकी स्नान पूजा कर चुके तब सीता, कुश, लव, और शिष्यवर्ग सहित राजसभाके मण्डपमे उपस्थित भये, और सीता को अति दुर्व्वल देख रामका हृदय विदीर्ण होने लगा, तब अति बड़े शोकावेगको बड़े यत्नसे रोकनेको समर्थ भये, और इस प्रकार आज न जाने प्रजा लोग कैसा आचरण करैंगे इस चिन्तासे व्याकुल होकर और नितान्त आकुल हृदय होकर कालविताने लगे, और सीता की अबके देखनेसे सबके अन्त:करणमे करुणारस का सञ्चार होने लगा, वालमीकी आसनका स्वीकार करके बड़े ऊंचे स्वरसे कहने लगे कि इस सभामे नानादेशके नृपतिगण कोशलराज्यके प्रधान प्रधान प्रजागण इस प्रकार अपरापर सहस्र२ पौरगण और जानपदगण सब एकठ्ठे भये हैं, तुम लोग सब जानते हो कि राजा रामचन्द्रने अमूलक लोकापवादको सुनकर और चञ्चलचित्त हो कर नितान्त निरपराध जानकी का परित्याग किया था, अब हम तुम सब पूंछते को है कि उनके स्वीकार करनेके विषयमे प्रसन्न मन हो कर अनुमति प्रदान करो, और जानकी जो संपूर्ण शुद्ध- चारिणी है उनके विषयसे मनुष्यमात्रके अन्त:करण से अणुमात्र संशय नहीं हो सकता है॥

यह कह कर वालमीकीजीके विरत होनमात

सभामण्डपमें महान् कोलाहल हो उठा और कितने समयके पीछे ऋषिगण, नृपतिगण और प्रधान२ प्रजा-गण दण्डायमान खड़े हो कर और हाथ जोड़कर निवेदन किया कि हमलोग अकपट हृदय होकर कहते हैं कि राजा रामचन्द्र सीता देवीका फिर स्वीकार करें और सीता की सुवर्णमूर्त्ति हटाकर सहधर्म्मिणीके स्थानपर सीताका स्थापन कर महायज्ञका साधन करें, इसके होनेसे हम लोग अधिक से अधिक परितोषका लाभ करेंगे, इसके सुनते हीं आकाश से आकाशवाणी भई कि हे जगत्पति राजा रामचन्द्र इस महायज्ञके साधनमें वसुन्धरा देवी की कन्या श्रीमहाराणी जानकी जीको सुवर्णकी जानकीजीके मूर्त्तिके स्थानपर स्वयं पुण्य-शीला को स्थापनकर यज्ञका निर्वाह करो इससे हम देवगण सव अति प्रसन्नतासे सन्तोष पावेंगे ऐसा कह कर फूलोंकी वर्षा करते हुये दुन्दुभी वजाने लगे, पीछे सप्तर्षिगण सव ऋषिसमुदायोंके सहित पुष्पवृष्टि करते हुये वड़े हर्षसे वेदध्वनि करने लगे, इस प्रकार वडा आश्चर्य्य देखकर सभामण्डपमें महान् कोलाहल होने लगा, और अप्सरालोग अति प्रसन्नता पूर्व्वक सव नृत्य करने लगीं, गन्धर्व्व किन्नर राजा रामचन्द्रके यश का गान करने लगे, इसी समयमें महर्षी वालमीकीजीने अरुन्धतीजीके सहित भगवान वशिष्टदेव आदि ऋषि-

गण समुदायसे परिवृत होकर राजसिंहासनसे राजा रामचन्द्रके वामभागमें सर्व्व सम्मति पूर्व्वक परम पवित्र साधुशीला और पतिव्रता शिरोमणि देवयजन-सम्भवा श्रीसीतादेवी को स्थापन किया, तब राजसिंहासनमें विराजमान महारानी जानकी सहित राजा रामचन्द्र को देखकर सब देवगण अपने२ विमानोंसे चढ़कर आकाश गङ्गाके जलसे अभिषेक करते२ और महाराजके यश समूहका वेदवाणीसे वर्णन करते२ अति प्रसन्न होकर फूलों को वर्षा करनेलगे, और इधर सब महर्षीलोग बड़ी समृद्धिके समुदायसे अश्वमेध नाम महायज्ञका अवशिष्ट पूर्ण करने लगे, और राजा रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा कि वत्स! सम्पूर्ण राजागण ऋषिसमूह, मित्रवर्ग, याचक समुदाय, और साधारण लोगोंको उचितके अनुसार सबका पूजन और सत्कार कर विदाई करो, तब लक्ष्मणजीने महाराज की आज्ञा के अनुसार सबका यथोचित सन्मानकर राजाओंको प्रसाद दान, ऋषिसमूह और ब्राह्मणोंको गज, रथ, अश्व, शिविका आदि तथा अनेक प्रकारके वस्त्राभूषण असंख्य धन और बड़े२ फलवान ग्राम दे२ कर सबका सत्कार किया, इसी प्रकार मित्रवर्गोंको सब पदार्थोंसे सत्कार किया, याचक समुदायोंको उन की वाञ्छाके अनुसार बहुविध वस्त्राभूषण और असंख्य२ धन दे२

कर सन्तोष करते सब को विदा किया, सब लोग सपरि-
वार राजा रामचन्द्रका जयजयकार करते२ परम प्रसन्न
होकर अपने२ स्थानोंको गये, इधर राजा रामचन्द्र
सब देवगण सब ऋषिगणका पूजन सत्कार कर सबको
विदा करते आप सबसे विदा होकर महर्षी वशिष्टदेव,
अरुन्धतीजी, महारागी कौशल्याजी आदि सब परि-
वार सहित तथा सपुत्र महारागी जानकीजी और और
भरत आदि अनुजगण सहित बड़े हर्ष और ऐश्वर्य्यके
साथ सब सेनासे परिवृत्त अपनी राजधानी अयोध्या
पुरीको पधारे ॥

यह अष्टमपरिच्छेद सम्पूर्ण हुआ ॥

दोहा ॥

परिच्छेद अष्टम विदित, भुवनचारि दश मांहि ।
रामसहित श्रीजानकी, सुनि हर्ष हिं जेहि मांहि ॥
परमपूज्य रमणीय अति, ग्रन्थ सदा सुखधाम ।
देवदत्त मन कामना, पुरवै सीता राम ।

कलिकाता ।
संवाद ज्ञानरत्नाकर यन्त्रमे श्रीयुत भुवनचन्द्र
बसाक द्वारा मुद्रित निमतला घाट ष्ट्रीट
नम्बर ८ । सन १२८४ साल ।

प्रहसन ।

हास्यार्णव १)

धर्म्मशास्त्र ।

सटीक सन्ध्या (।
सप्तश्लोकी गीता)५
नवग्रहस्तोत्र)५
पञ्चरत्न (।
नित्यकर्म्मपद्धति =)
स्रग्धरास्तोत्र =)
व्यथानुस्मृति -)

काव्यशास्त्र ।

शिशुपालबध (माघ) ४)
किरातार्ज्जुनीय(भारवि)२॥)
" मूल मात्र १)
कुमारसम्भव पूर्व्व ॥)
" उत्तर १)
रघुवंश १॥)
मेघदूत इंराजी ॥)
संस्कृत ।=)
नलोदय ।=)
ऋतुसंहार ।-)
रत्नपञ्चक -)
शृङ्ग शतक -)
भामिनीविलास ।)
चाणक्यश्लोक -)
शृङ्गारतिलक =)
विद्वन्मोदतरङ्गिणी १)
काव्यसंग्रह २)
गीतगोविन्द ॥)
वैराग्यशतक =)

नाटक ।

रत्नावली ।॥)
वेणीसंहार ऐ
शकुन्तला ऐ
विक्रमोर्व्वशी ऐ
मुद्राराक्षस ऐ
मालविकाग्निमित्र ॥)
वसन्ततिलकभाण १)
महावीरचरित ॥।)

कोष ।

हारावलि =)
अमरकोष ॥)
मेदिनी १
उइलसन साहेव कृत संस्कृत
इंराजी अभिधान १म खण्ड
हइते ७ खण्ड पर्य्यन्त ३॥)
हेमचन्द्रकोष १)

साहित्य ।

वर्णपरिच

दशकुमारचरित पूर्व्व ।)
" उत्तर ॥)
हितोपदेश ॥)
भोजप्रबन्ध ।)

व्याकरण ।

लघुकौमुदी ॥)
मुग्धबोध ॥)
महाभाष्यम्, महामुनि पतञ्जलि कृत १मखण्ड ।=)
२य खण्ड ।=)

दर्शन ।

सर्व्वदर्शनसंग्रह १)

वेदान्त ।

श्रीमद्भगवद्गीता ६)
गीतामूलमात्र (।
विवेकचूड़ामणि ।)
मुक्तिकोपनिषत् ≡)
ईश भाष्य टीका सहित =)
केन " =)
कठ " ।)
प्रश्न " -)
मुण्ड " ।-)
माण्डुक्य
वेदान्त परिभाषा ॥)

हिन्दी ।

मनभावनी भाषा टीका सहित श्रीमद्भगवद्गीता १॥)
सीतावनवास (॥
बाङ्गलादेशकीइतिहास =)
परिमाण विद्या =)
माधवविलास =)
नजीरकी पैर ।)
वैतालपच्चीसी ॥।)
खैरशाहकी बारमासी ।)
रामकृष्ण " -)
श्रीराम माहात्म्य -)
श्रीरामचालीसा -)
दिग्विजय ।॥)
भारतीप्रकाश)५
पाण्डवगीता ।)
प्रबोधचन्द्रोदय ॥)
उत्तररामचरित १)
भाषाभूषण ।=)
कङ्कालिकी ।)